महाविद्या
मंत्र-तंत्र
लाभप्रद फलदायी
यक्षिणी साधनायें
और सिद्धिदायी
दश महाविद्या साधना
यो० अवतार सिंह 'अटवाल'

महाविद्या तंत्र-मंत्र

भारतीय संस्कृति साहित्य दो शाखाओं में बांटा जाता है—आगम और निगम। आगम शब्द तंत्र के लिए और निगम वेदों के लिए प्रयुक्त हुआ है। इस प्रकार तंत्र उच्चकोटि के साहित्य में गिना जाता है। तंत्र शास्त्र के अनुसार दैविक शक्तियों को अनुकूल बनाकर उनसे मनोवाँछित कार्य लिया जा सकता है। महानिर्वाण तंत्र में बताया गया है कि कलयुग में मनुष्य केवल आगम तंत्र के अनुसार ही सिद्धि पा सकेंगे। अन्य मार्गों से गृहस्थों को सिद्धि प्राप्त नहीं होगी। लेकिन इन प्राचीन दुर्लभ और रहस्यमयी साधनाओं को कोई भी पूर्णता के साथ उजागर नहीं करता। कुछ ऐसीं ही साधनाओं और मंत्र-तंत्रों की सिद्धि योगीराज अवतार सिंह अटवाल ने की है जो प्रायोगिक तांत्रिक तो हैं लेकिन व्यवसायी लेखक या ढोंगी नहीं। इनका तंत्र-ज्ञान अद्वितीय है यह आप इस पुस्तक को पढ़कर जान जायेंगे।

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक व्यवसायी या हिन्दी लेखक नहीं हैं। अतः भाषा एवं वाक्य विन्यास इत्यादि की अशुद्धियों के लिए पाठक क्षमा करेंगे। पुस्तक का प्रकाशन ज्ञानार्जन के लिए और साधकों को इस विषय में कुछ और जानकारी दी जा सके, यही लक्ष्य है।

— प्रकाशक

महाविद्या मंत्र-तंत्र

मनुष्य दैविक शक्तियों (जिनमें दश महा-विद्याओं, अष्ट भैरव और यक्षिणी साधना प्रमुख हैं) से मनोवांछित लाभ पा सकता है। इसी से सम्बद्ध कुछ नियम, मन्त्र और आवश्यक जानकारी प्रस्तुत में दी जा रही है।

लेखक—

योगीराज अवतार सिंह अटवाल

मूल्य : 50.00

प्रकाशक :

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार

प्रकाशक :

रणधीर प्रकाशन

रेलवे रोड, आरती होटल के पीछे,

हरिद्वार-२४९४०१ (उ.प्र.)

वितरक :

रणधीर बुक सेल्स

रेलवे रोड, हरिद्वार

लेखक :

योगीराज अवतार सिंह अटवाल

संस्करण : **सन् 2008**

मुद्रक :

राजा ऑफसेट प्रिंटर्स

१/५१, ललिता पार्क, विकास मार्ग, दिल्ली-९२

अनुक्रमणिका

योगीराज अवतार सिंह अटवाल की अन्य पुस्तकें—

१. गुरु नानक मन्त्र शक्ति

जपुजी साहिब, कीर्तन सोहिला, अनंदु साहिब तथा दु:खभंजनी साहिब के सुप्रसिद्ध शब्दों की पाठ विधि जिस से यथाविधि पाठ करके आप सांसारिक दु:खों से मुक्त होकर जीवन सफल कर सकेंगे।

२. तांत्रिक जड़ी बूटी दर्शन

विभिन्न प्रयोगों में काम आने वाली वनस्पतियों और जड़ी-बूटियों के रंगीन चित्रों सहित उनके प्रयोग इस पुस्तक में दिये गये हैं। पुस्तक का दूसरा संस्करण भी छप चुका है।

३. मेरी शक्ति : गुरु की भक्ति (तन्त्र महायोग)

आज भी तन्त्र से मशान जागता है, आज भी भूत-प्रेत कब्रों में रहते हैं। सभी व्यक्ति खुद ही परख चुके हैं कि जो मन्दिरों, गुरुद्वारों, मजारों को मानता है उसकी आशायें पूरी होती हैं। धार्मिक स्थलों में जाकर मन पवित्र व आत्म-सुख मिलता है। यही तन्त्र का असली रूप है।

इस पुस्तक में दिए गए प्रयोगों के बारे में प्रयोगकर्ता (लेखक नहीं) का कहना है कि उनकी कलम परमात्मा की मर्जी से काम कर रही है। और मैं आपके काम आऊँ ये मेरी हार्दिक इच्छा है। आपकी भी कामनाएँ पूर्ण हों इसी लक्ष्य से ये संग्रह तैयार हुआ है।

प्रकाशक

रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार

तन्त्र ज्ञान

किसी भ तंत्र से सम्बन्धित सिद्धि को सम्पन्न करने के लिए उस सिद्धि के मूल रहस्यों का समझना बहुत आवश्यक है। भारतीय तंत्र ग्रन्थों में इन साधनाओं का विधि सहित उल्लेख मिलता है। आज कोई भी तांत्रिक इन प्राचीन दुर्लभ व रहस्यमयी साधनाओं के रहस्यों को प्रामाणिकता के साथ उजागर नहीं करता। तांत्रिक ग्रंथों में तंत्र साधना के बारे में बहुत कुछ मिलता है लेकिन इन सिद्धियों को प्राप्त करने के लिए अत्यन्त कठिनाई होती है।

किसी भी तन्त्र शास्त्र के अध्ययन तथा सिद्धि के पूर्व कर्त्ता को उस विषय तथा विधि का विशेष ज्ञान होना आवश्यक है। सही विधि के बिना साधक हर क्षेत्र में परास्त होता है। इस काम के लिए कुछ स्थाई नियमों का पालन बहुत जरूरी है, तब ही सफलता मिलेगी।

तंत्र शब्द (तं) का अर्थ तन और (त्र) का अर्थ त्राण है। भाव यह है कि तंत्र तन की रक्षा के लिए है। जब शिव+माया का मिलन होता है तो तब तंत्र की उत्पत्ति होती है। इसका बाद में शिव भक्त ग्रंथ का रूप देकर दुनिया को आधीन कर देते हैं। तंत्र की साधनाएँ कर-करके हम देवताओं की पूजा-प्रतिष्ठा करके प्रकृति और भगवान को अपने मनोनुकूल कर लेते हैं और मनोकामना पूर्ण करते हैं।

महानिर्वाण तन्त्र में लिखा है कि कलयुग में गृहस्थ लोग केवल आगम तंत्र के अनुसार ही कार्य करेंगे; अन्य मार्गों से गृहस्थी को सिद्धियाँ प्राप्त नहीं होंगी।

कृते श्रुत्युक्त आचारस्तोत्रायां स्मृतिसम्भवः।
द्वापरे तु पुराणोक्तः कलावागमसम्मतः॥

(कुलार्णव तंत्र)

कुलार्णव तंत्र के उपरोक्त श्लोक में यह कहा गया है कि सतयुग में श्रुति में कथित आचार का, त्रेतायुग में प्रतिपादित आचार तथा द्वापर युग में पुराणों में वर्णित आचार की मान्यता थी और कलियुग में आगम शास्त्र, समस्त तंत्रों का ही आचार प्रधान है। भाव यह है कि कलयुग में व्यक्ति कठिनाइयां, संकट, बाधाएं दूर करने के लिए एक मात्र तंत्र का ही प्रयोग करेंगे। तंत्र सिद्धि एक ऐसी विद्या है जिसकी सहायता से हमारी हर मनोकामना पूरी हो जाती है।

कलिमल्कषदीनानां द्विजातीनां सुरेश्वरि।
मेध्यामेध्यविचाराणां न शुद्धिः श्रौतकर्मणा॥
न संहिताद्यैः स्मृतिभिरिष्टसिद्धिर्न णांः भवेत्।
सत्यं सत्यं पुनः सत्यं सत्यं सत्यं मयोच्यते॥
बिना हागमयार्गेण कलौ नास्ति गतिः प्रिये।
श्रुति स्मृति पुराणायै भयैवोक्तः पुरा शिवे॥
आगमोक्त विधानेन कलौ देवान्यजेत्सुधी॥

(महानिर्वाण तन्त्र)

महानिर्वाण तंत्र में शिव कहते हैं:—हे सुरेश्वरि! कलि के दोष से दीन हुए द्विजों को पवित्रता अपवित्रता का विचार नहीं रहेगा, फिर श्रौत कार्यों के सम्पादन से वह कैसे सफलता प्राप्त कर सकेंगे। तब संहिताओं और स्मृतियों के संयोग से भी अभीष्ट सिद्धि न हो सकेंगी। हे प्रिये! मैं सत्य और पुनः पुनः सत्य कहता हूँ कि कलि-काल में तंत्र मार्ग को छोड़कर दूसरी गति नहीं है। हे शिवे! श्रुति स्मृति और पुराणों के द्वारा मैंने घोषणा की है कि कलियुग में उपासक आगम विधान द्वारा निर्देशित देव-पूजन करेंगे।

विष्णुवरिष्ठो देवानां ह्रदयानां मुदधिस्तथा।
नदीनांव यथा गंग पर्वतानां हिमालयः॥
तथा समस्त शास्त्राणां तन्त्र शास्त्रमनुत्तमम्।
सर्वकामप्रद पुण्या तन्त्रः वै वेदम्भतम्॥

अर्थात् जैसे देवताओं में विष्णु, ह्रदसमूह में समुद्र, नदियों में गंगा, पर्वतों में हिमालय को उत्तम माना गया है वैसे ही शास्त्रों में तंत्र को उत्तम माना गया है।

कलावः गमुल्लङ्‌ धूप योऽन्यमार्गे प्रवर्त्तते।
न तस्य गतिरस्तीनि सत्यं सत्यं नः संशयः॥

इन श्लोकों में यह स्पष्ट कहा गया है कि मैं सत्य सत्य नि:सन्देह रूप से घोषित करता हूँ कि कलयुग में तंत्रों का उल्लंघन करके जो अन्य मार्गों को अपनाता है उसकी सद्‌गति सम्भव नहीं।

निर्वीया: श्रौतजातीय विषयहोनौरगा इव।
सत्यादौ सफला आसन्कलौ ते मृतका इव॥
पांचालिका यथा भित्तौ सवेन्द्रियसमीन्वता:।
अमूरशक्ता: कार्येषु तथान्ये मन्त्राराशय:॥
अन्य मन्त्रै: कतं कर्म वन्ध्यास्त्रोसंगमो यथां।
न तत्र फलसिद्धि: स्याच्छम एव हि केवलम्॥
कलावन्योदितैर्मागे: सिद्धिभिच्छति यो नर:।
तृषितो जाह्नवीतीरे कूप खनति द्रुर्मेति:॥
कलौ तन्त्रोदिता मंत्रा: सिदास्तूर्ण फलप्रदा।
शस्त्रा: कर्मसु सर्वेसु जपयज्ञ क्रितादिषु॥
(योगिनी तन्त्र)

योगिनी तन्त्र के अनुसार—विष रहित साँप की भाँति अब वेद मंत्र निर्वीर्य हो गये हैं। सत्यादि युगों में यही मन्त्र सिद्ध होते थे अब वह मृतप्राय: हो गये हैं। कलयुग में अन्य मन्त्रों की स्थिति ठीक वैसी ही है जैसे कि दीवार पर बनी हुई पुतलियाँ इन्द्रियों से युक्त होने पर भी अपने कार्य करने में असमर्थ होती हैं। जैसे बाँझ स्त्री के सहयोग से सन्तान नहीं होती, उसी प्रकार अन्य शास्त्रों के विधान अनुसार जो साधक सिद्धि प्रास करना चाहता है वह ऐसा ही है, जैसे एक प्यासा व्यक्ति गंगा के तट पर कुआँ खोदने लगे। इस कलयुग में तो तंत्रोक्त मन्त्र ही शीघ्र फल देने वाला है। जप इत्यादि कर्मों में यही मन्त्र उत्तम माने गये हैं।

एकाक्षर प्रदातारं यो गुरुत्वावमानयेत्।
श्वानं योनिशतं गत्वा चण्डालत्वमवाप्नुयात्॥
(कुलीन तन्त्र)

कुलीन तंत्र के अनुसार—"एक भी अक्षर के ज्ञान के प्रदान करने वालों को गुरु जैसा आदर करना चाहिये। यदि कोई ऐसे गुरु का अपमान करता है तो वह सौ जन्मों तक कुत्ते की योनि को प्राप्त कर अन्त में चाण्डालत्व को प्राप्त करता है।

शास्त्रों में कहा गया है कि महाज्ञानी होने पर भी स्वतंत्र रूप से अध्ययन न करे अपितु गुरु के निर्देश से प्रवृत्त हो। तंत्र विज्ञान के लिए गुरु की महत्ता मानी गई है। शास्त्रों में गुरु की महत्ता देवी से भी अधिक कही गई है तो अन्यत्र इसे तीन लौकिक देवों के अन्तर्गगत गणित किया गया है "**मातृ देवो भव! पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव**" गुरु ब्रह्मा, विष्णु, महेश से भी अधिक शक्तिवान है। वह आत्मा को परमात्मा व परम विद्या का दिग्दर्शन कराने में समर्थ है। बिना गुरु के ईश्वर की प्राप्ति की कल्पना भी व्यर्थ है क्योंकि "गुरु बिन गत नहीं।" माता जीव को जन्म देने के कारण ब्रह्मा रूप है। पिता पोषण करता है अतः पिता विष्णु रूप है। गुरु कुप्रवृति अज्ञान संस्कारों का संहार करने, मानव के अन्तःस्थल को विशुद्ध ज्ञान के योग्य बनाता है, अतः गुरु की तुलना शंकर आदि देव के साथ की जा सकती है।

चिंतामणि लोके सुखः सुरद्रः स्वगसम्पदम्।
प्रयच्छित गुरु प्रीतो बैकुण्ठ योगि दुर्लभम्॥

(भागवत महात्म्य)

भागवत महात्म्य के अनुसार केवल मात्र गुरु की ही कृपा से सभी प्रकार की सुख-सम्पत्तियाँ प्राप्त हो सकती हैं। गुरु की कृपा से शिष्य योगी दुर्लभ पदार्थ को भी प्राप्त कर सकता है।

गुरुपदेशास्त्रार्थ विना चात्मा न दुध्यते।
एतत्संयोगसत्तैव स्वात्मज्ञान प्रकाशिनी॥

(योग वाशिष्ठ)

योग वाशिष्ठ में कहा गया है शास्त्रों का विधिवत् अध्ययन व गुरु के ही उपदेश के बिना आत्मा का उद्धार नहीं हो सकता। गुरु के संयोग से ही आत्मज्ञान होता है।

न पादुकापरो मन्त्रो न देवः श्री गुरो परः।
न हि शक्तित् परा दीक्षा न पुष्य कल पूजनात्
ध्यान मूलं गुरोमूर्तिः पूजामूलं गुरोः पदम्।
मन्त्रमूलं गुरोवाक्यं मोक्ष मूलं गुरो कृपा॥

(कुलार्णव तन्त्र)

कुलार्णव तंत्र के अनुसार पादुका से परे कोई मन्त्र नहीं। गुरु से परे कोई देव नहीं है। शक्ति दीक्षा से उत्तम कोई दीक्षा नहीं है और कुलपूजन से परे कोई पुण्य नहीं है। गुरुमूर्ति ध्यान मूल है, गुरु के चरण पूजा मूल हैं, गुरु के वाक्य मंत्र मूल हैं, गुरु की कृपा से मोक्ष की प्राप्ति होती है।

गुरुपूजां बिना देवि स्वेष्ट पूजा करोतिय:।
मन्त्रस्य तस्य तेजांसि हरतै भैरव: स्वयम्॥

(काली विलास तन्त्र)

काली विलास के अनुसार बिना गुरु पूजा के जो अपने इष्ट की पूजा करता है उसके मन्त्र की शक्ति को भैरव हर लेता है। इन तंत्र सिद्धियों को गुरु की कृपा से प्राप्त करे तभी फल मिलेगा। तंत्र के प्रयोग से पुत्रहीन को पुत्र, धन की इच्छा करने वाले को धन तथा सुख और जीवन में आने वाली बाधाओं और कठिनाइयों को दूर करने के लिये, शत्रु से मुक्ति, कन्या के विवाह, व्यापार की उन्नति और वशीकरण के लिये तंत्र का प्रयोग कर सकते हैं।

भारतीय साहित्य को दो शाखाओं में विभाजित किया गया हैं आगम और निगम। आगम तंत्र के लिये और निगम वेदों के लिये प्रयोग होता है। इस प्रकार तंत्र उच्चकोटि के साहित्य में गिना जाता है। प्राचीन काल में साधक इससे लाभ उठाते थे जो आज बहुत कम हो गया है? साधक हजारों लाखों मील की दूरी से बिना किसी यंत्र के आपस में बातें करते थे, मारीच मनुष्य अपने शरीर को परिवर्तित कर लेता था। मनुष्य के शरीर को पशु के शरीर में परिवर्तित करना इस विद्या का कुछ हिस्सा मेरे पास है। जिसे फिर कहीं पर मैं वर्णन करूँगा। तंत्र साधनाओं का लक्ष्य बड़ा विस्तृत है। जैसे कि वशीकरण, मारण, उच्चाटन, सम्मोहन दृष्टि-बन्ध, प्रेत-विद्या, सर्प विद्या, भविष्य ज्ञान,

आकर्षण, मोहन, घात-प्रतिघात आदि क्रियाएं हैं।

इस तंत्र में मानव शास्त्र-ज्ञान, जप, तप, राजयोग, हठयोग, व्यवाहारिक ज्ञान, आत्म-कल्याण के सिद्धांत, शल्यलोक विद्या, रसायन शास्त्र, गणित ज्योतिष आदि हैं। तंत्र शास्त्रियों के अनुसार ईश्वर की विभिन्न शक्तियों को जिन्हें देवता कहते हैं अपने अनुकूल बनाकर उनकी शक्तियों को आकर्षित किया जा सकता है और मनोवाँछित सिद्धियाँ प्राप्त की जा सकती हैं। तंत्र साधना परम अद्भुत शास्त्र है। तंत्र ज्ञान विज्ञान का भण्डार है। तंत्रों का जितना भी अध्ययन किया जाये उतने ही लोक मंगल के सूत्र प्राप्त होते हैं।

जिस प्रकार वेदों को ईश्वर कृत माना जाता है; उसी प्रकार तंत्र भगवान शिव की रचना बताई जाती है। इससे सिद्ध होता है कि तंत्र का आविर्भाव और प्रचार प्राचीनकाल से ही होता आया है। प्राचीनता और व्यापकता की दृष्टि से वेदों के बाद तंत्रों का ही स्थान है। इससे विदित होता है कि बौद्धधर्म के बहुत पहले से ही इस देश में तंत्रों का स्थान जम चुका था। भारतीय संस्कृति की आध्यात्मिक साधनाओं के मूल प्राण रूप में तंत्र अनादि काल से किसी न किसी रूप में चले आ रहे हैं। तंत्रों की प्राचीनता का प्रमाण हमें अलग-अलग सम्प्रदायों के विचार करने से और अधिक स्पष्ट हो जायेगा।

प्राचीन काल से शिवोपासना होती आई है। मिश्र के देवता असरत्ता को भी 'त्र्यम्बक' कहा गया है। काठमांडू का पशुपति

नाथ का मन्दिर नेपालियों के लिए वाराणसी कहा जाता है। यहाँ साढ़े तीन फुट ऊँचा शिवलिंग स्थापित है। कम्बुज की राजधानी श्रेष्ठपुर में श्रुतुवर्मा ने भद्रेश्वर शिव का मन्दिर बनवाया था। बेथोन में भगवान शिव की विषपान आदि मूर्तियाँ उपलब्ध हुई हैं। लाओस की वन्य जातियाँ और आदिवासी शिव को अपना आराध्य देव मानते हैं। वहाँ के किसान उन्हें अपना इष्ट मानते हैं? थाईलैंड में चौथी शती के एक संस्कृत शिलालेख से शिव की मूर्ति उपलब्ध हुई है। थाई का राजा रामू बौद्ध धर्मावलम्बी था। परन्तु फिर भी उसने शिव की मूर्तियों की स्थापना कराई थी। हिन्द चीन पर १५०० वर्ष तक हिन्दुओं का राज्य रहा है। यहाँ के उपलब्ध शिलालेखों से पता चलता है कि उपनिषद की हेमवती उमा और महेश्वर की पूजा का यहाँ काफी प्रचार था प्राचीन काल में लंका भारत का एक अंग रहा है वहाँ भी शिवलिंग उपासना प्रचलित है।

तिब्बत के विक्रम विश्वविद्यालय में अवलोकितेश्वर का मन्दिर था। यहाँ ताँत्रिक देवी देवताओं के भी मन्दिर थे। यहाँ शिव-शक्ति का प्रतिनिधित्व करने वाली अर्धनारीश्वर जैसी मूर्तियाँ उपलब्ध हैं। इन्हें सब युग्म कहते हैं। अरब में भी काफी शिवलिंग मिले हैं जो कि बहुत बड़े आकार के हैं। मक्का शरीफ में संग-ए-असबद नामक शिवलिंग को हज पर जाने वाले यात्री बड़ी श्रद्धा से चूमते हैं। दक्षिण अमेरिका के पेरू राज्य में शिवलिंग मिले हैं। ब्राजील के खण्डहरों में शिव की प्रतिमाएं

मिली हैं।

शक्ति उपासना वैदिक काल से ही चली आ रही है। कुछ पुरातत्व वेत्ताओं के अनुसार शक्ति उपासना काव्यों के आधार पर ईसा से ३०० वर्ष पूर्व माना है। उस समय के सिक्कों पर दुर्गा के चित्र उपलब्ध हैं। गुप्त काल में शक्ति साधना के चित्र मिलते हैं। चन्द्रगुप्त प्रथम का काल ३०५ से ३२५ ई. स्वीकार किया जाता है। उनके सिक्कों पर सिंहवाहिनी दुर्गा के चित्र हैं। कुशान राजाओं का काल १०० से २०० ई. के लगभग है, उनकी मुद्राओं पर भी सिंह के साथ-साथ देवी का चित्र मिला है।

उपासना की शुरूआत ऋग्वेद काल से ही होती आ रही है। ऋग्वेद के दशम मण्डल का १२५ वाँ सूक्त जिसका नाम देवी सूक्त है इसका यह साक्षी है अतः यह निश्चित है कि शक्ति उपासना वैदिक काल से चली आ रही है।

प्राचीन काल में गुरु शिष्य प्रणाली के द्वारा ही विद्याध्ययन की परम्परा थी। जिस प्रकार आज भी हम किसी बालक को उद्दण्ड तथा असभ्य देखकर उसके मास्टर अथवा टीचर के विषय में पूछते हैं कि तुम्हें कौन पढ़ाता है इसी प्रकार प्राचीन काल में भी सच्चरित्र मनुष्यों को देखकर लोग अनायास ही सोच लेते थे कि इसका गुरु अवश्य ही महान रहा होगा। यही नहीं, शिष्य भी अपने गुरु का परिचय देने में गौरव अनुभव करते थे।

गुरु महिमा—शास्त्रों में गुरु की आवश्यकता को स्वीकार

करते हुए उसकी महिमा में अनेक प्रशस्तियाँ लिखी हैं गुरु माता से श्रेष्ठ हैं।

गुरुर्गरीयान् मत्तृतः पितुश्चेति मे मतिः।

(शा. १०१-११०)

गुरु की महत्ता, उपादेयता का परिचय देना असम्भव है। यहाँ हम शास्त्रों में वर्णित गुरु विषयक प्रशस्तियाँ उद्धृत कर रहे हैं। गुरु का अर्थ है, अन्धकार अर्थात् ज्ञान रूप अन्धकार को रोकने वाला। वेद ज्ञानी, योगों का ज्ञाता, पवित्र व सुसंस्कृत व्यक्ति ही गुरु होने का अधिकारी है। गुरु ही ब्रह्मा है, गुरु ही विष्णु है, गुरु ही परम धर्म है, गुरु परमगति है, गुरु एक जीवंत विद्या है।

यथा घटश्च कलशः कुम्भश्चैकार्थ वाचकाः।
तथा मन्त्री देवता च गुरुश्चैकार्थ वाचकः॥

जिस प्रकार घट, कलश, कुम्भ एक ही वस्तु के कई नाम हैं उसी प्रकार मन्त्र, देवता, गुरु आदि भी एक हैं। गुरु के बिना श्रेष्ठ ज्ञान की कल्पना करना व्यर्थ है क्योंकि गुरु ही पराशक्ति रूप का ब्रह्मविद्या से मानव अथवा शिष्य का साक्षात्कार कराता है।

"आचार्या द्वैविद्या विह्विताससाधिष्ट प्रापत्।"

आचार्य या गुरु के अभाव में ब्रह्मतत्व का ज्ञान या विद्या की प्राप्ति सम्भव नहीं।

निमज्यां मज्जतां घोरे भवाब्धौ परमायनम्।

संतो ब्रह्मविदः शांता नौहदेवाप्सु मज्ज्ताम्॥

जिस प्रकार समुद्र में डूबते को तिनके का सहारा होता है उसी प्रकार संसार रूपी अज्ञान के सागर में डूबने वाले मनुष्यों को ब्रह्मज्ञानी पुरुषों (गुरु) का ही सहारा है।

"गुरु विशेषताः पूयो धर्मा प्रदर्शकः।"

गुरु विशेष रूप से पूजनीय हैं क्योंकि वह धर्माधर्म का मार्ग प्रदर्शित करता है। गुरु पद का अधिकारी कौन विद्वान हो सकता है अथवा गुरु कैसा होता है इसके विषय में—

स्वयंमाचरते यस्मादाचार स्थापयत्यपि।
आभिनीति च शास्त्राणि आचार्यस्तेन योच्यते॥

(ब्रह्माण्ड पुराण)

जो धर्म कर्मा चरण ग्रन्थों को स्वयं धारण करता हो अर्थात् अध्ययन करता हो तथा दूसरों को धारण कराता हो, उन सब ग्रन्थ शास्त्रों को जानने वाले को आचार्य कहा जाता है।

जो अज्ञान को दूर करे वही गुरु है जो हृदय की अज्ञान की ग्रन्थि खोले उसे गुरु कहते हैं—

गुशब्दस्त्वन्धकारः स्यात् रुशब्दस्तन्निरोधकः।
अन्धकार निरोधत्वात् गुरुरित्यमिधीयते॥
गकार सिद्धिः प्रेक्तो रेफ पापस्य दाहकः।
उकारो विष्णुरित्युकतस्त्रितयात्मा गुरु परः॥

गुरु शब्द का व्युत्पत्ति मूलक अर्थ निकाला गया है। 'गु' का अर्थ है अन्धकार और 'रू' अन्धकार को रोकने का वाचक

शब्द है। मनुष्य के हृदय में अज्ञान स्वरूप अन्धकार का नाश करने से गुरु शब्द बनता है। गकार सिद्धि प्रदान करने वाला है और रकार पापों का नाश करने वाला है। उकार विष्णु भगवान का वाचक कहा गया है। इन तीनों से उत्पन्न गुरु यह शब्द नित्यात्मा परम प्रधान होता है। गुरु शब्द का बहुत महत्त्व है क्योंकि यह अज्ञान को तथा पाप को नष्ट करके प्रकाश व ज्ञान की ज्योति दिखाता है।

"गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिखि पार्वति।"

(कुन्जिका स्तोत्र)

कुन्जिका स्तोत्र तथा सभी तंत्र ग्रन्थों ने तंत्र विद्या को गुप्त रखने का आदेश दिया है। एक ओर जहाँ तन्त्र शास्त्र ने प्राचीन मान्यताओं को न मानकर स्त्री, पुरुष, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सबको समान रूप से साधना करने का अधिकार दिया है तो दूसरी ओर गुप्त रखने का तथा इसकी गोपनीयता की रक्षा करने का भी कड़ा आदेश दिया गया है। तंत्र विद्या अत्यन्त रहस्यमयी शिक्षा है। इसका परिणाम अत्यन्त कल्याणकारी और हानिकारक दोनों ही हो सकता है इसलिए इसके दुरुपयोग या शक्ति के दुष्प्रयोग से बचने के लिए ही इसे गुप्त रखने की आज्ञा दी गई है। दुष्ट व्यक्ति इसे जानकर समाज में आतंक तथा विनाश उपस्थित कर सकते हैं अतएव शास्त्रों में कहा है कि गुरु शिष्य की पूरी तरह से परीक्षा करके ही उसे यह विद्या प्रदान करें।

तंत्र शास्त्र ने अपनी साधना को योनि के समान गुप्त रखने

का आदेश दिया है। अपने मन्त्र का किसी को उपदेश न दे उसे सभा में न कहें पूजा विधि को गुप्त रखे और इस विषयक शास्त्र की रक्षा शरीर के समान करें। इन साधन विधियों को यत्नपूर्वक गुप्त रखो। अपने तक गुप्त रखो किसी को मत बताओ।

इस विद्या के बड़े ही कठिन साधन हैं। इस विद्या की प्राप्ति के इच्छुकों को पुरुषार्थी, साहसी, निर्भय तथा धैर्यवान होना आवश्यक है। यदि ऐसा होगा तभी उनको अपने साधन में सिद्धि प्राप्त होगी। डरपोक, जिनमें श्रद्धा न हो अस्थिर मति यदि तंत्र विद्या का कठिन साधन करेंगे तो संकट के सामने आते ही वह साधन छोड़कर भाग खड़े होंगे। यह मैं आपसे बिल्कुल सत्य कह रहा हूँ, यह विद्या पूर्ण धनी गुरु द्वारा ही सीखी जा सकती है। इसका सीखना एवं सिखाना हर किसी के वश का रोग नहीं है इसके सीखने के दौरान साधक को बड़े जोर के धक्के लगते हैं, बड़े प्रबल कम्पन पैदा कर देते हैं तथा ताप की मात्रा बढ़ जाती है।

तंत्र साधना के समय भयंकर प्रकार के झकझोरे लगते हैं और उसको अनेक प्रकार की विभूतियाँ दिखाई देने लगती हैं। उस समय उसको भूत-प्रेत, पिशाच, देव, मानव, चुड़ैलें दृष्टिगोचर होने लगती हैं। अनेकों प्रकार के शब्द, रूप, रस, गन्ध तथा स्पर्शों का आभास होता है। अब यदि साधक में पुरुषार्थ, साहस, दृढ़ता, निर्भयता और धैर्य मौजूद हैं तो ठीक, वरना उसका साहस नष्ट हो जाता है और वह भयभीत होकर संकट में पड़

सकता है और उसका अहित हो सकता है।

हमारे तंत्र ग्रन्थों में दो बातें ही लिखी मिलती हैं एक तो यह कि साधन का फल क्या मिलता है और दूसरा साधन विधि का कोई छोटा सा अंग उदाहरण प्रस्तुत है कि तंत्र शास्त्रों में एक स्थान पर लिखा है कि यदि छोकट की लकड़ी से हवन किया जाए तो अवश्यमेव पुत्र की प्राप्ति होती है यह एक संकेत है ना कि पूर्ण विधि। जब तक हम पूरी विधि नहीं जान सकेंगे तब तक सफलता नहीं मिलेगी।

तंत्र साधनों द्वारा आप, धन, सन्तान, स्त्री, यश, आरोग्य पद प्राप्त कर सकते हैं वशीकरण रोग मिटा सकते हैं, शत्रु का नाश कर सकते हैं, लक्ष्मी, भैरव, हनुमान तथा काली, दुर्गा को सिद्ध करके संसार की हर वस्तु प्राप्त कर सकते हैं।

यदि तंत्र साधना में साधक को असफलता मिलती है तो उसको निराश नहीं होना चाहिये क्योंकि वास्तविकता तो यह है कि गुरु से प्राप्त मन्त्र से शिष्य को शक्ति प्राप्त होती है। यदि कोई व्यक्ति पुस्तक से मन्त्र पढ़ लेता है और उसकी विधि जान लेता है किन्तु यदि वह निगुरा है अर्थात् गुरु नहीं है तो उसको असफलता ही मिलेगी।

प्रत्येक मन्त्र शक्ति सम्पन्न है तथापि संस्कार युक्त मन्त्र अर्थात् मन्त्र जाग्रत शक्ति का स्वरूप है; अगर मन्त्र सद्गुरु से प्रदत्त हों तब गुरु शक्ति के प्रभाव से मन्त्र का संस्कार अपने आप ही हो जाता है।

तंत्र शास्त्र स्वयं में एक महान तथा पारम्परिक विद्या है। इसको सिद्ध करने के पश्चात् प्राणी मात्र स्वयं को प्रकृति के प्रत्यक्ष तथा परोक्ष साधन के उपभोग का सम्राट मान सकता है। तंत्र शास्त्र के समस्त मन्त्र अपने आप में परिपूर्ण तथा कसौटी पर कसे हुए हैं। हमारे पूर्ववर्ती मन्त्रवेत्ताओं ने तथा तंत्र शास्त्रियों ने इन्हें परख कर इन पर अपनी प्रामाणिकता की मुहर लगाई है। इन मन्त्रों को पहले व्यक्ति को सिद्ध करना आवश्यक है। यह परमावश्यक है कि इन मन्त्रों की साधना गुरु के अति समीप रहकर तथा पूर्ण विश्वास और भक्ति से करनी चाहिए। मन्त्र साधना में शंका की कोई गुंजाइश नहीं। शंकित मन से व्यक्ति साधना नहीं कर सकता। इस क्षेत्र में एक अन्य ध्यान देने वाली बात है गुरु को भी महान मन्त्रवेत्ता तथा साधक और पूर्णतया सामर्थ्यवान होना चाहिये। अगर ऐसा नहीं है तो गुरु अपने अहित के साथ-साथ शिष्य को भी समाप्त कर देगा तथा एक बार विस्थापित व्यक्ति का फिर इस क्षेत्र में स्थापित होना असम्भव है।

योगीराज अवतार सिंह अटवाल

(तन्त्रमणि कार्यालय)

ग्रा. पो. : मननहाना

जि. होशियारपुर (पंजाब)

सांसारिक सुखों की प्राप्ति के लिए सरल व सहज प्रयोग

कमलात्मिका मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं हं सौः जगत्प्रसूत्यै नमः।

विधि—तंत्र शास्त्रों के अनुसार इस मन्त्र के प्रयोग से व्यक्ति जीवन में आर्थिक व भौतिक क्षेत्र में शिखर तक पहुंचने में समर्थ हो सकता है। दरिद्रता-निवारण तथा व्यापार उन्नति तथा आर्थिक उन्नति के लिये इस मन्त्र का ही प्रयोग लाभदायक है।

इस मन्त्र का अनुष्ठान सवा लाख मन्त्र का जप कर सिद्ध करे, तब जीवन में उन्नति प्राप्त होगी।

बगलामुखी मन्त्र

ॐ ह्लीं बगला मुखि सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वा। कीलन बुद्धि विनाशाय ही ॐ स्वाहा॥

विधि—यह मन्त्र अमोघ मन्त्र है। इस मन्त्र के बारे में तांत्रिक कहते हैं कि जहाँ सारे मन्त्र असफल हो जायें वहाँ यह मन्त्र कार्य पूरा कर देता है। यह मन्त्र शत्रुओं पर पूरी तरह

विजय प्राप्त कर शत्रु रहित करा देता है। इस मन्त्र का हवन सहित एक लाख जप करने पर सिद्धि मिलेगी।

शत्रु उत्पीड़न मन्त्र

ॐ हं हं हं धूं सि हुं कालि कालरात्रि अमुक (शत्रु का नाम) पशु ग्रहा हुं फट् स्वाहा।

विधि—जब शत्रु बहुत अधिक परेशान कर रहा हो और स्वयं के जीवन पर खतरा हो गया हो तो इस प्रयोग को सम्पन्न किया जा सकता है। होली की रात्रि को श्मशान की रेत या एक मुट्ठी मुर्दे की भस्म लाकर पिण्ड को सिन्दूर से पोत दें, उस पिण्ड पर आक की लकड़ी से शत्रु का नाम लिख दें और फिर सर्प की हड्डियों की माला से इस मन्त्र का सवा लाख जप करें तो शत्रु को बहुत परेशानी होगी। मन्त्र के जाप के बाद सारा सामान वहीं गाड़ दें तो शत्रु को कोई मुसीबत आ घेरेगी।

नोट—जब शत्रु ठीक करना हो तो सारा सामान धरती से निकाल कर दूध से धो दें तो शत्रु ठीक हो जाएगा।

अखण्ड लक्ष्मी मन्त्र

ॐ ह्रीं अष्ट लक्ष्म्यै नमः।

विधि—जीवन की हर सफलता के लिए भाग्योदय वृद्धि, नौकरी और हर तरह की उन्नति के लिए यह प्रयोग करें।

तन्त्र के अनुसार यह प्रयोग २१ दिन का है। किसी भी

बुधवार से इस प्रयोग को प्रारम्भ कर लें। प्रात:काल स्नान करके लक्ष्मी का यन्त्र अपने सामने रखकर यन्त्र को दूध, गंगाजल से स्नान करा के धूप और दीप से यन्त्र की पूजा करें। फिर बाद में २१ माला स्फटिक की फेरनी चाहिए। ऐसा २१ दिन तक प्रयोग करें तो जप साधना के बाद यन्त्र को घर में स्थापित कर दें और हर रोज यन्त्र को धूप दें ऐसा प्रयोग करने से लक्ष्मी घर में स्थाई रूप से निवास करती है।

अन्नपूर्णा सिद्धि

ॐ क्रीं क्रूं क्रीं हूं हूं हूं ह्रीं नीं ॐ ॐ ॐ
अन्नपूर्णायै नमः।

विधि—इस साधना को रवि पुष्य नक्षत्र से प्रारम्भ करे और अगले आ रहे रवि पुष्य नक्षत्र तक करें। तंत्र के अनुसार इस साधना को पुरुष ही नहीं स्त्री भी सम्पन्न कर सकती है। इस मन्त्र का जप रात्रि के समय आरम्भ करें। हर रोज १०१ माला का जप करें तब ही सिद्धि मिलेगी। साधक पीली धोती पहने, पीले कपड़ों को ओढ़े और एकांत कमरे में पीला आसन बिछा कर जप करे। जप के समय अन्नपूर्णा का चित्र अपने सामने रख ले। अन्नपूर्णा यन्त्र सामने रख लें। दीपक घी का ही प्रयोग करें। अगरबत्ती, केसर, कुमकुम, नारियल, जायफल, मयूर शिखा, दक्षिणेश्वरी हृदय यन्त्र, शतपुष्या धीर कुन्धी की माला से जप करे। यह सामान नारियल सहित पास रखकर ही जप प्रारम्भ

करें।

इसके बाद धूप लगाकर दीपक जलाकर अन्नपूर्णा माँ के चित्र की पूजा करें और यन्त्रों को शुद्ध करके अन्नपूर्णा के सहित केशर का तिलक करें। माँ के चित्र के सामने जायफल, बादाम, लौंग, इलायची, दूध का भोग दिन में दो बार लगाएं। मन्त्र जप के बाद हाथ में जल लेकर विनियोग इस तरह करें—

विनियोग :—

ॐ अस्य श्री अन्नपूर्णा महादेवी हृदय स्तोत्र महा मन्त्रस्य श्री महाकाल भैरव ऋषि उष्णिक् छंदः महाषोदा स्वरूपिणी महाकाल सिद्धा श्री अन्नपूर्णा अम्ब देवता, ह्रीं बीजं हूं शक्तिः क्रीं कीलकं, श्री अन्नपूर्णा अम्ब प्रसादात् समस्त पदार्थे प्राप्त्यर्थे मन्त्र जपे विनियोगः।

न्यास

श्री महाकाल भैरव ऋषये नमः शिरसि
उष्णिक् छन्दसे नमः मुखे
महा षोढा स्वरूपिणी महाकाल सिद्धि
श्री अन्नपूर्णा अम्ब देवतायै नमः हृदि
ह्रीं बीजाय नमः लिंगे
ह्रीं शक्तये नमः नामो
क्रीं कीलकाय नमः पादयौ

समस्त पदार्थ प्राप्त्यर्थ मन्त्र

जपे विनियोगाय मनः सर्वांगे।

इस तरह करने से यह सिद्धि प्राप्त हो जाती है जिसके पास यह अन्नपूर्णा सिद्धि होगी वह सिद्ध योगी बन जायेगा। जिसने यह सिद्धि की है वह व्यक्ति लाखों व्यक्तियों को भोजन करा सकता है। ऐसा व्यक्ति इस सिद्धि का कहीं भी प्रयोग कर सकता है। सिद्धि के बाद जिसने यह मन्त्र सिद्ध किया वह इसका प्रयोग कर जनता का भला करे।

(विनियोग करने का तात्पर्य यह है कि उस कार्य को अनुष्ठान सम्पन्न करने की अनुज्ञा है और न्यास का तात्पर्य अपने शरीर में देवता को स्थापित करने की प्रक्रिया है।)

लक्ष्मी प्राप्ति का मन्त्र

ॐ नमो मणि भद्राय आयुध धराय मम लक्ष्मी वांछितं पूरयं ऐ ह्रीं कलीं सौ कणि भद्राय नमः।

विधि—बुधवार के दिन किसी एकान्त स्थान पर जमीन को गोबर से लीप लें और लकड़ी का पटरा बिछा दें। उसके ऊपर सिन्दूर से 'श्री' लिख दें और उस पर लाल वस्त्र बिछा दें तथा पटरे के मध्य में एक नारियल रख दें जो बजता हो। फिर उसके ऊपर सिन्दूर से तीन तिलक करें और नारियल के मध्य में (**ॐ मणिभद्राय नमः**) लिख दें। अब इसके सामने घी का दीपक जला लें स्वयं पूर्व की ओर मुंह करके बैठ जाएं और

मन्त्र का जप करें। हर रोज २१ माला जप करें इस प्रकार ४१ दिन तक करें तो लक्ष्मी सिद्धि होती है।

(प्रयोग के बीच में मणिभद्र देवता स्वयं स्वप्न में या प्रत्यक्ष रूप में उपस्थित होकर लाटरी का नम्बर अथवा धन प्राप्ति का उपाय बता देते हैं। ग्रन्थ कर्ता का अनुभूत मन्त्र है।)

बटुक मन्त्र

ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धरणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं।

विधि—तन्त्र के अनुसार इस मन्त्र का अनुष्ठान किसी भी द्वितीया को रात में प्रारम्भ करें। इस मन्त्र का कुल सवा लाख जप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जायेगा। मन्त्र जप के समय दिन में एक समय पर ही भोजन करना चाहिए। तंत्र के अनुसार मन्त्र के जप के समय पूर्णतः ब्रह्मचर्य व्रत का पूरी तरह पालन करके ही जप करें। जप के समय बटुक भैरव का चित्र और यन्त्र अपने पास रखें।

जप से मन्त्र विद्या, धन-धान्य, पुत्र, बुद्धि पवित्र होकर जीवन सफल करने के लिए अग्रसर हों।

अन्नपूर्णा मन्त्र

ॐ ह्रीं श्री क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णायै स्वाहा।

विधि—इस मन्त्र को एक लाख जपने से यह मन्त्र सिद्ध होता है। जो भी व्यक्ति कुबेर के समान धनी होना चाहते हैं वह इस मन्त्र का प्रयोग करके लाभ उठायें। मन्त्र जप नियम से करें।

स्वप्न मातंगी मन्त्र

ॐ नमः स्वप्न मातंगिनि सत्यभाषिणि स्वप्न दर्शय दर्शय स्वाहा।

विधि—जो व्यक्ति इस मन्त्र की सिद्धि करना चाहता है उसे दिन में बिना जल पिये व बिना अन्न खाये रहना चाहिए और रात्रि को मात्र एक सौ आठ बार इस मन्त्र को जपकर वहीं परसो जाये तो उसी रात्रि को स्वप्न में प्रश्न का उत्तर मिल जाता है। इस तरह २१ दिन जप करें तो आपके प्रश्नों का उत्तर मिलता जाएगा।

विप्र चाण्डालिनि मन्त्र

ॐ नमश्चामुण्डे प्रचण्डे इन्द्राय ॐ नमो विप्रचाण्डालिनि शोभिनि प्रकर्षिणि आकर्षय द्रव्य मानय प्रबल मानय हुं फट् स्वाहा।

विधि—तन्त्र के अनुसार इस मन्त्र की सिद्धि ४१ दिन में होगी। प्रथम दिन भूखा रहे, धरती पर सोवे, मीठा भोजन करे और आधा भोजन उसी थाली में जूठा छोड़ दे और जूठे मुँह से ही अपवित्र स्थान पर बैठकर जप करे। इस मन्त्र का कुल सवा

लाख जप करने पर सिद्ध होगा। जब कभी रात्रि को भय लगे तो चिन्ता न करें। मन्त्र जप के बाद देवी स्वयं आकर मन्त्र जप करने वाले की मनोवांछित वरदान देती है।

नपुंसक के लिए अनंग मदन साधना

ॐ ऐं मदने मदनविद्रावणे अगम् सगमें
देहि देहि क्रीं क्रीं स्वाहा।

विधि—यह अज्ञात तन्त्र साधना है यह मन्त्र गुप्त है। आज हमने इस मन्त्र को प्रकट किया है। बहुत से व्यक्ति पुरषत्व की कमी के कारण आत्महत्या कर जिन्दगी बरबाद कर लेते हैं ऐसे नपुँसक युवक इस मंत्र का प्रयोग कर अपनी कमजोरी दूर कर अपना जीवन सफल करें।

ऊपर बताये यंत्र का एक लाख जप करने से सिद्धि मिलती है। इस मंत्र का जप नदी के तट पर करना पड़ता है। जप के दिनों में एक समय भोजन करना है और यह विश्वास भी अपने ऊपर जमाये रखना है कि ज्यों ही मंत्र जाप पूर्ण होगा तो आप में पुरुषत्व आ जायेगा।

चौदह दिनों में इस मंत्र का एक लाख जप करना बहुत जरूरी है। जब जप एक लाख पूरा हो जाये तो पन्द्रहवें दिन एक हजार चमेली के फूल लेकर उनकी आहुतियों में हवन करे और पाँच व्यक्तियों को भोजन कराये तभी सफलता मिलेगी।

मारण प्रयोग

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। ॐ ग्लौं हुं क्लीं जूं सः ज्वलाय-ज्वलाय ज्वल-ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं चामुण्डायै विच्चे। ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा ॥

विधि—शत्रुनाशक यन्त्र बनाकर उसके बीच में शत्रु का नाम लिखे जिससे प्राणों का भय हो या जो वास्तव में आपकी हत्या करने वाला है। इस मन्त्र का एक हजार आठ बार जप करके मन्त्र को सिद्ध करके प्रयोग में लावें।

गूलर प्रयोग

ग्रहण वाले दिवस से एक दिवस पहले गूलर के वृक्ष को तन्त्र विधि से निमन्त्रण दे आये और अगले दिन अर्थात ग्रहण वाले दिन सवेरे ही वृक्ष को हलुवे या शर्बत का चढ़ावा चढ़ाकर नमस्कार करके उसका बांदा तोड़ लायें। ग्रहण लगते ही बांदे की पत्रोपचार से पूजा करे और पूरे ग्रहण काल में **"ओ३म महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णु पत्न्यै च धीमहि तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात्"** मन्त्र का जप करें।

जप में जिस माला का प्रयोग करे वह कमल गट्टे की हो तो श्रेष्ठ है। ऐसे अभिमंत्रित गूलर के बांदे को ताबीज में रखकर जो धारण करे तो भूमिगत धन दिखाई देता है और अभीष्ट की प्राप्ति भी होती है।

गृहस्थ सुख प्रयोग

ॐ श्री मम गृहे तृष्टि भव कंकावत्ये
शिरो भव फट् स्वाहा॥

विधि—तंत्र के अनुसार इस मंत्र का प्रयोग दीपावली के दिन ही करे। इस के जप करने से गृहस्थ में किसी प्रकार की कोई बाधा या परेशानी पति-पत्नी में मतभेद, तनाव, पुत्र का आज्ञाकारी न होना और प्रत्येक लक्ष्य में सफलता प्राप्त करने के लिये इस का प्रयोग करे। दीपावली को दोपहर के समय जप करे। मन्त्र जप के पहले यह कहे कि मैं यह प्रयोग अपने गृहस्थ जीवन की सभी बाधाओं को दूर करने के लिए कर रहा हूँ। तब मूँगे की माला से ११ माला का जप करे, मन्त्र जप के समय धूप का प्रयोग करे अपने पास मिठाई, नारियल, दूध का भोग रख कर ही जप करे।

जप के बाद घर में किसी तरह की कलह, परेशानी, मतभेद हों तो सब इस मन्त्र के जप से दूर हो जायेंगे।

यह छः प्रकार के मुख्य कर्म तन्त्र में बताये गये हैं—

(१) शांति कर्म (४) विद्वेषण कर्म

(२) वशीकरण कर्म (५) उच्चाटन कर्म

(३) स्तम्भन कर्म (६) मारण कर्म

विद्वेषण तिलक (१)

हाथी का दांत मक्खन के साथ पीसकर एक आदमी के मस्तक पर तिलक लगा दे और दूसरे आदमी के मस्तक पर सिंह के दांत को मक्खन में पीसकर तिलक लगावे तो उन दोनों आदमियों में बैर-भाव उत्पन्न हो जाएगा अर्थात् ऐसा करने से वह तिलक उन दोनों में विद्वेषण करा देगा।

विद्वेषण तिलक (२)

एक हाथ में कौए का पंख तथ दूसरे हाथ में उल्लू का पंख लेकर मन्त्र पढ़कर दोनों के अग्र भाग को मिलाकर काले सूत्र में लपेट दें फिर उस काले वस्त्र में लिपटे हुये पंखों को दोनों हाथों से पकड़ कर जल में खड़ा होकर सात दिन तक अंजलि द्वारा तर्पण करने पर और पश्चात एक सौ आठ बार मन्त्र जपे तो विद्वेषण हो।

विद्वेषण तन्त्र (3)

जिन दो व्यक्तियों में परस्पर विद्वेषण कराना हो उन दोनों

के पैर की मिट्टी लेकर उसमें हाथी तथा सिंह के बालों को मिलाकर एक पुतली बनाकर पृथ्वी में गाढ़ देवे फिरउस पर अग्नि की स्थापना कर दे और चमेली के फूलों से उस अग्नि में हवन करे तो निश्चय ही विद्वेषण हो जाता है।

विद्वेषण तन्त्र (४)

यदि घोड़े के बालों और भैंसे के बालों को मिलाकर सभी में धूप दे तो क्षण भर में विद्वेषण भाव उत्पन्न होगा।

गर्भ स्तम्भन मन्त्र

ॐ नमो भगवते महा रुद्राय (अमुक) स्तम्भन कुरु स्वाहा।

इस मन्त्र को प्रथम एक लाख संख्या में जप कर सिद्ध कर लेना चाहिए। फिर प्रयोग करने के समय इस मन्त्र को १०१ बार पढ़कर झाड़ा देवे। मन्त्र के उच्चारण में प्रयोग करते समय उसी स्त्री का नाम अमुक शब्द के स्थान पर प्रयोग करे।

शत्रु स्तम्भन तन्त्र

तीन पहर भर गोरोचन, केशर और महावर को एक साथ मिलाकर घिसे फिर उससे शत्रु का नाम भोजपत्र के ऊपर लिखे तो वह शत्रु आठ पहर में वश में होगा।

नारी-पुरुष स्तम्भन

रजस्वला स्त्री के वस्त्र को ले आये फिर गोरोचनं तथा मजीठ से जिस पुरुष और स्त्री को स्तम्भन करना हो उसका नाम लिखे और उस नाम लिखे वस्त्र को घड़े में डालकर बन्द कर देवे तो उस पुरुष व स्त्री का तत्काल स्तम्भन हो जायेगा।

मेघ स्तम्भन तन्त्र

दो मिट्टी की कोरी हांडियाँ लेकर उन दोनों में चिता की अग्नि में से १-१ अंगार रखकर दोनों हांडियों को मुंह से मिलाकर बन्द कर जंगल में गाढ़ देवे। इस प्रयोग से मेघ स्तम्भन ही होगा अर्थात् वर्षा बन्द हो जायेगी।

नौका स्तम्भन तन्त्र

जिस दिन भरणी नक्षत्र हो उस दिन सारकाष्ट (गूलर) की पांच अंगुल की लकड़ी ले आवे। इस लकड़ी को इस नक्षत्र में बराबर समय में लावे और इस को एक कील जैसी बना लेवे इसी योग में इस कील को जिस किसी नाव में गाढ़ देवे तो फिर वह नाव न चले अर्थात् नाव का स्तम्भन हो जायेगा।

जल स्तम्भन मन्त्र-तन्त्र

ॐ नमो भगवते रुद्राय चलं स्तम्भय स्तम्भन ठः ठः।

पहले इस मन्त्र को एक लाख बार जप कर सिद्ध कर

लेवे। पद्म की लकड़ी ले आवे उसको कूटपीस कर चूर्ण बना लेवे। चूर्ण को उपरोक्त सिद्ध किये हुए मन्त्र से १०८ बार इस मन्त्र को अभिमन्त्रित करके जिस तालाब, बावड़ी याजलाशय में डाल दिया जायेगा या सरोवर में डाल दिया जायेगा तो जल नहीं हिलेगा वह जल बिलकुल अचल-सा हो जायेगा।

दूध स्तम्भन तन्त्र प्रयोग

(१) गर्म किये हुये दूध में ताल मखाने को पीसकर डाल देने से दूध का स्तम्भन हो जाता है अर्थात् वह दूध दही के समान जम जायेगा।

(२) यदि औटे हुये दूध में पोस्त (भांग) के बीज पीसकर मिला दिये जायें तो उस दूध का स्तम्भन हो जायेगा अर्थात् दही जम जायेगा।

पानी स्तम्भन

किसी मिट्टी के छोटे पात्र में पानी भरकर उसमें दो-तीन माशे पीलीन की पत्ती मिला देवें तो पानी का स्तम्भन हो जायेगा अर्थात् वह पानी शीघ्र ही ऐसा जम जायेगा कि बर्तन को तोड़ने पर ही बाहर निकलेगा।

भूख स्तम्भन

(१) करंजन का बीज और गिरगिट की आंत को समान मात्रा में लेकर पीस कर गोली बना कर गिलोय के रस में डुबो

कर रखें उस गोली को मुख में रखने से भूख-प्यास का स्तम्भन हो जाता है अर्थात् भूख-प्यास नहीं लगती।

(२) बकरी के दूध में चावल, कमल के बीज, घृत डालकर खीर बनायें। उस खीर का एक बार भोजन करने से 12 दिन तक भूख नहीं लगती।

वैरी मूत्र स्तम्भन

जिस दिन रविवार हो छछूंदर को मार कर उसकी खाल काटकर निकाल लेवें। फिर उस खाल में वह मिट्टी लाकर भरें कि जिस स्थान पर शत्रु ने पेशाब करा हो। मिट्टी को भर खाल को सींकर किसी ऊँचे स्थान पर टांग देवें। ऐसा करने से बैरी के मूत्र का स्तम्भन हो जाता है अर्थात् शत्रु का मूत्र बन्द हो जायेगा। खाल की मिट्टी निकाल कर जल में प्रवाहित करे तो शत्रु पुनः ठीक हो जायेगा।

स्तम्भन विधान

उल्लू (पक्षी) की जीभ और एक रत्ती गोरोचन इन दोनों वस्तुओं को मिलाकर एक गोली बना लेवें। इस गोली को ताँबे के ताबीज में भर कर ताबीज का मुंह बन्द कर देवें और उसको गूगल की धूनी देकर मुंह में रखने से स्तम्भन होगा।

चूल्हा स्तम्भन तन्त्र

(१) अंजीर की लकड़ी और मेढ़क की चर्बी को मिलाकर

चूल्हे के राये में मिट्टी खोदकर बिना टोके गाढ़ देवें तो चूल्हे का स्तम्भन हो जायेगा अर्थात् उस चूल्हे में लाख कोशिश के बाद भी आग न जलेगी यह अनुभूत योग है।

(२) शनिवार के दिन या रविवार के दिन जब अमावस्या हो तब तुलसी की जड़ लाकर गधों के मूत्र में बुझाकर चूल्हे में मिट्टी खोदकर गाड़ देवें तो उस चूल्हे में कितनी भी आग जलावें परन्तु कोई वस्तु गर्म न होगी।

कढ़ाई स्तम्भन तन्त्र

मूत्र बैल का टंक भर लावे, तेल कढ़ाई में रखवावे।
चूल्हे को बारु दिन राती, कभी न होय कढ़ाई ताती॥

दूसरा तन्त्र

लकड़ी साल मंगाइयौ, अरु तुलसी की राख।
दोउन के कर कोयला, गधा मूत्र में राख॥
तले कराही राखिये, एक कोयला लाय।
अग्नि जले वामें नहीं, कोटिन करे उपाय॥

तीसरा तन्त्र

दूध आक मंगवाले कोई, अथवा दूध हात थूका होई।
धान दूध संजोग चढ़ावे, चूल्हे लकड़ी आग करावे।
एकौ धान पकन नहीं पावे, चाहे जितनी आग लगावे॥

बिच्छू पकड़ने का तन्त्र

रस भरी के पात को, मले जो कर ले लाय।
बिच्छू को पकड़े सहाँ, डंक न मारे ताय॥

दूसरा तन्त्र

एक रस बेर पलास पहाड़ा आक दूध में भेवे।
नहनी कर दूध में पीसे, गोली कर रख लेवे॥
लगा होय डंक बिच्छू का, घिसके तुरन्त लगावे।
उतरते बार न लागे, बिच्छू काटे का दुःखों का मुख पावै॥

सर्प विष हरण तन्त्र

बंधे कमल गट्टे की भिंगी, नहनी पीस मंगाय।
सुर्मा जा नैनन में आंजै, तुरत रोग मिट जाय॥

दूसरा तन्त्र

नीला थोथो पीसके, नहना तुरत मंगाय।
बाखा माँ फूंक दे, तुरत रोग मिट जाय॥

तीसरा तन्त्र

सर्प काटे का तोसे कहता हूँ सहज उपाय।
गूदा कटायौ आक कौ पीस छान पिलवाय॥

आग से मुँह न जले

पीपल लम्बी, पीपल गोल, सो लाय पीले सम तोल।
मुखभरी चबि अग्नि मुखमेलि, मुख जरवा करे जखेल॥

जल कौतुक तन्त्र

रूखि निवोड़े का फल खाये, बाकी चूरन पीस बनावे।
जल पै बुरलैं जल जम जावे, सैंधा नौन पड़े खुजलावे॥

तेली का कोल्हू बन्धन

ॐ थां थां थः थः स्तम्भय स्वाहा।

इस मन्त्र से इमली की लकड़ी को सात बार अभिमन्त्रित करके कोल्हू के नीचे गाढ़ देवें तो चलता हुआ कोल्हू बन हो जाये।

बिजली निवारण मन्त्र व तन्त्र

ॐ प्रज्वलित जोग जाति त्रां त्रां त्रां त्रः।

उपरोक्त मन्त्र से अरहर के दाने को २१ बार अभिमन्त्रित करे तो जिस दिशा में फेंक देवें उसी दिशा में बिजली नहीं गिरेगी इस मन्त्र की सिद्धि ४१ दिन में होगी।

सिंह बाँधने का तन्त्र

ॐ नमो इककाल आखिल खिलकित
बांधत जाय जाहू छाहूर।

इस मन्त्र से आँवले के फूल को २१ बार अभिमन्त्रित करके दौड़कर सिंह की ओर फेंक दें तो सिंह का स्तम्भन हो जायेगा अर्थात् आता हुआ सिंह ठहर जाये। इस मन्त्र की सिद्धि २१ दिन करें तो तब इस तन्त्र का प्रयोग करें।

गर्भ न गिरे

ॐ ठः ठः ठि ठि ठुं ठुं ठः ठः।

जिस दिन सोमवार को अनुराधा नक्षत्र पड़े और हर्षण योग बने तो इस मन्त्र को १०१ बार पढ़कर स्त्री को झाड़ा देवें फिर अनार की कलम से अष्टगन्ध द्वारा भोजपत्र के ऊपर इस मन्त्र को लिखकर कन्या के हाथ का काता हुआ सूत लेकर मन्त्र को स्त्री की कमर से बांध देवें तो गर्भ न गिरे इस मन्त्र की सिद्धि २१ दिन करें तब कार्य पूरा होगा।

जल स्तम्भन तन्त्र

कुलीर (यह एक जानवर होता है जिसे कैकड़ा भी कहते हैं) के नेत्र, दांत, रक्त, माँस और कछुआ का हृदय तथा शिशु मार (यह एक विशेष प्रकार का जल जन्तु होता है) की चर्बी तथा भिलावा यह तीनों वस्तुएँ समान भाग मिलाकर तेल में डालकर आग पर चढ़ा कर पका लें। फिर इसका लेप चरणों के तले पर कर लें जो भी इस तन्त्र का लेप करके जल के ऊपर चल सकता है अर्थात् वह जल में नहीं डूबता है।

जल स्तम्भन का दूसरा तन्त्र

साँप, मगर और नेवला की चर्बी तथा विष रहित साँप के बच्चे का सिर इन चारों वस्तुओं को समान भाग में एकत्रित कर लेवें। फिर इनको भिलावे के तेल में भली प्रकार से पका लें। जब यह तेल अच्छी तरह से पककर तैयार हो जाये तो उसे उतार कर किसी लोहे के बर्तन में कृष्ण पक्ष की अष्टमी के दिन सुरक्षित करके रख लेवें और फिर भगवान शंकर का पूजन विधिवत् करके सिर झुका कर प्रणाम करे।

ॐ नमो भगवते जल स्तम्भन हूँ फट् स्वाहा।

तब उपरोक्त मन्त्र से १०१ घी का हवन करे तभी इसी मन्त्र से तेल को अभिमन्त्रित करके लेप करे तो सिद्धि होती है। ध्यान रहे सब कार्य सावधानी से करें जिसको अपना गुरु बनाया हो उसकी अनुमति व पूर्ण परामर्श लें तब ही सिद्धि मिलेगी।

नोट—सिद्धि करने से पहले हमसे सलाह ले सकते हैं।

—लेखक

अग्नि स्तम्भन (तन्त्र)

मेढ़क की चर्बी और कपूर समान मात्रा में लेकर अच्छी तरह मिलाकर शरीर पर लेप करने से आग का स्तम्भन हो जाता है। आग से शरीर नहीं जलता।

अग्नि में वस्तु न जले (तन्त्र)

उपरोक्त लेप में घी ग्वार के रस को मिलाकर किसी भी वस्तु पर लेप कर दिया जाये तो इस लेप के करने से अग्नि में कोई भी वस्तु नहीं जलती है। "**ओ३म् नमो भगवते अग्नि स्तम्भय फट् स्वाहा।**" इस मन्त्र को ग्रहण में सिद्ध करके इस लेप पर १०१ बार जप कर प्रयोग करें।

मुख न जले (तन्त्र)

शक्कर को घी में मिलाकर पी लेवें। तत्पश्चात् तुरन्त ही सोंठ को चबा लें, फिर तपे हुए लोहे को मुख में रख लें तो तन्त्र की शक्ति से मुख नहीं जलता है।

आसन स्तम्भन तन्त्र व मन्त्र

ॐ नमो दिगम्बराय (अमुक) स्वासन स्तम्भन कुरु कुरु स्वाहा।

इस मन्त्र को पहले २१००० जप कर सिद्ध कर लें। फिर मरघट से किसी मरे हुए मनुष्य की खोपड़ी लायें उस कपाल में मिट्टी भर कर सफेद घुंघची को बाधें व उसको दूध से सींचता रहे। जब उस कपाल में वृक्ष उग आएं तब वह वृक्ष की डाली और कली को लेकर उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके जिस मनुष्य का स्तम्भन करना हो उसके आसन पर यह डाली फेंक दें तो आसन का स्तम्भन हो जायेगा।

नोट—मन्त्र के अन्दर 'अमुक' शब्द आया है उसके स्थान पर प्रयोग करने के समय जिसका स्तम्भन करना हो उसका नाम लें।

बुद्धि स्तम्भन (तन्त्र)

उल्लू पक्षी की बीट अथवा बन्दर की विष्ठा को यत्न पूर्वक पान में रखकर जिसको खिला दिया जाये उसकी बुद्धि स्तम्भन (नष्ट) हो जायेगी।

शत्रु स्तम्भन (तन्त्र)

रविवार के दिन जब पुष्य नक्षत्र आये उस दिन शुभ मुहूर्त में खरमंजरि (ओंग यानि चिचिंटा) की जड़ को शुद्ध होकर ले आवें। फिर उसी मुहूर्त में उस जड़ को उसी समय घिस कर शरीर में लेप करे तो शत्रु स्तम्भन हो अर्थात् उसका हथियार हिल नहीं सकेगा।

शस्त्र से हानि न हो (तन्त्र)

खजूर की जड़ को मुख में रखें और केतकी की जड़ को कमर में बाँध लेवें, तथा आक की जड़ को बाँध लेवें इस तरह के योग से भी शस्त्र नहीं लगता है।

तन्त्र प्रयोग

ॐ नमो अघोर रूपाय शस्त्र स्तम्भन कुरु कुरु स्वाहा।

रविवार के दिन बिल्वपत्र (बेलपत्र) की कोपल (नरम

छोटा पत्ता) लाकर उनको कमल नाल समान भाग के साथ अच्छी तरह से बारीक पीसकर शरीर पर लेप करने से शरीर में शस्त्र नहीं लगता। इस ऊपर दिये मन्त्र से इस चूर्ण को १००१ बार अभिमन्त्रित कर लें।

मन्त्र की सिद्धि १०००० बार जप कर लें तब इस मन्त्र का प्रयोग करें।

मेघ स्तम्भन प्रयोग

दो ईंट लेकर उन दोनों ईंटों पर मेघ शब्द लिखकर दोनों ईंटों को एक दूसरी से संपुट (जोड़) करके पृथ्वी में गाढ़ दें। पर ध्यान रहे ईंट कच्ची व नई हो तथा मेघ शब्द चिता के कोयले से लिखना चाहिये। यह प्राचीन परम्परागत मेघ स्तम्भन विधि मेरी अनुभूत विधि है।

नोट—पहले इस प्रयोग को करने के लिये नीचे लिखे हुए मंत्र का १०००० जप कर सिद्ध कर लेना चाहिये जब ईंटों पर मेघ को शब्द लिखें तो ईंटों को इस मन्त्र से १०१ बार अभिमन्त्रित करके ही पृथ्वी में गाढ़ें और गाढ़ते समय भी इस मन्त्र का उच्चारण करें—

मन्त्र

ॐ नमो नारायण मेघ स्तम्भन कुरु कुरु स्वाहा।

निन्द्रा स्तम्भन तन्त्र प्रयोग (·१)

कटेरी की जड़ को शहद के साथ बारीक पीसकर हलुवे

की तरह करने के बाद नाक के मार्ग से सूँघ लेवें तो निन्द्रा का स्तम्भन हो जाता है।

निद्रा स्तम्भन (२)

ऊपर कही कटेरी की जड़ को शहद में पीसकर तैयार किया हैतो उसे नेत्रों में अञ्जन की भाँति लगावें तो निन्द्रा नहीं आयेगी। यदि इसकी काट मालूम न हो तो यह प्रयोग कभी ना करें अन्यथा अन्धे भी हो सकते हैं।

पशु स्तम्भन प्रयोग

गाय-भैंस आदि के खिड़के में चारों दिशाओं में ऊँट का हाड़ गाढ़ देने से ही भैंस आदि पशुओं का स्तम्भन हो जाता है।

मुख स्तम्भन तन्त्र (१)

ऊँट के रोम (बाल) जिस किसी भी पशु के शरीर पर डाल देने से (फेंक देने से) पशुओं का स्तम्भन हो जाता है।

मुख स्तम्भन तन्त्र (२)

आक के पत्ते के ऊपर हरताल के रस से जिसका मुख स्तम्भन करना हो उसका नाम लिखकर बाग के अन्दर ईशान कोण की दिशा में गाढ़ देने से या रख देने से जिसका नाम लिखा है उसका मुख स्तम्भन हो जायेगा।

सैनिक स्तम्भन तन्त्र

जिस दिन रविवार हो उस दिन बुद्धिमान साधक को चाहिये कि सफेद घुंघची (चिरमटी) के फल को लाकर श्मशान भूमि में गाड़ दें और उस स्थान के ऊपर एक पत्थर रख देवें। फिर आठ योगिनी, रौद्री, माहेश्वरी, नारसिंही, वैष्णवी, कुमारिका, लक्ष्मी, गणेश जी, बटुक, क्षेत्रपाल इन सबको मन्त्रों द्वारा इनकी पूजा करे, बलि दे, मदिरा, फूल, धूप की भेंट दें और बाद में नीचे दिये गये मन्त्र को सिद्ध कर जहाँ चाहे वहाँ ११ बार पढ़कर प्रयोग करें।

मन्त्र

ॐ नमः काल रात्रि त्रिशूल धारिणी मम शत्रु सैन्य स्तम्भन कुरु कुरु स्वाहा।

शत्रु की बुद्धि स्तम्भन तन्त्र

मन्त्र

ॐ नमो भगवते शत्रु ओं बुद्धि स्तंभय स्तंभय स्वाहा।

इस मन्त्र को एक लाख बार जप कर सिद्ध कर लें फिर सिद्धि हो जाने पर प्रयोग करने से पहले इस मन्त्र को १०८ बार पढ़कर प्रयोग करना चाहिये। इस प्रयोग के करने से शत्रु की बुद्धि स्तम्भित हो जायेगी।

नोट—*जिस शत्रु के लिये प्रयोग किया जाये उसका नाम मन्त्र उच्चारण के समय लें तभी कार्य सिद्ध होगा।*

शत्रु स्तम्भन तन्त्र

रविवार के दिन जब पुष्य नक्षत्र हो उस शुभ मुहूर्त में विष्णुकांता के पौधे को जड़ सहित उखाड़ कर ले आएँ। उस को सिर पर रखें (पगड़ी या टोपी के अन्दर रखें) थोड़ी सी उसमें से मुंह में रखें। इस प्रयोग के करने से शत्रु स्तम्भन हो जाता है।

शत्रु बुद्धि स्तम्भन तन्त्र

मन्त्र

ॐ नमो भगवते शत्रु बुद्धि स्तम्भन स्तम्भन स्वाहा।

भांगरा, अपामार्ग, सहदेई, सरसों, कंकोली यह सब वस्तुएं बुद्धिमान पुरुष लावे और सफेद आक की जड़ लावे। ध्यान रहे यह सब वस्तुएं समान रूप से लावे। इन सबको मिलाकर कूटकर लोहे के बर्तन में डालकर सत निकाल लें फिर सत को तीन दिन तक ऊपर लिखे मंत्र से अभिमन्त्रित करें फिर इस सिद्ध चूर्ण को महीन करें और मस्तक पर तिलक लगाकर शत्रु के सामने जाएं तो शत्रु की बुद्धि नष्ट होगी।

शत्रु बाँधने का तन्त्र (१)

चमेली की जड़ को बिना टोके घर लाकर मुख में रखें तो शत्रु स्तम्भन हो जाता है।

शत्रु स्तम्भ तन्त्र (२)

हाथ पर सुदर्शन वृक्ष की जड़ को बाँधने से और सिर पर केतकी की जड़ को रखने से तथा मुख में ताल की जड़ को रखने से शत्रु का स्तम्भन हो जाता है।

नवार्ण मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।

नवार्ण मन्त्र अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण और प्रभावयुक्त माना गया है। इसे मन्त्र और तन्त्र में समान रूप से प्रयोग किया जाता है। साधक को चाहिये कि वह सावधानी के साथ इस मन्त्र का जप करे। जिस कामना से साधक जप करेगा वह कामना पूरी हो जाती है।

लाभप्रद-फलदायी विभिन्न यक्षिणी साधन मन्त्र

यक्षिणी साधन मन्त्र

ॐ द्वारदेवतायै ह्रीं स्वाहा।

स्नान आदि से पवित्र होकर नदी के तट पर बैठकर इस मन्त्र का छब्बीस सहस्र जप प्रतिदिन एक मास तक करें और गूगल घी का हवन करें तो देवी प्रसन्न होकर वश में होगी। इस हवन की राख जिसके सिर के ऊपर फेंक दें वही वश में हो जायेगा।

इस मन्त्र का जप हस्त नक्षत्र में आरम्भ करें, महीना कोई भी हो।

सुरसुन्दरी यक्षिणी मन्त्र

ॐ नमो आगच्छ सुरसुन्दरी स्वाहा।

स्नान आदि से पवित्र होकर स्वच्छ वस्त्र पहनकर श्रावण मास की छठी तिथि से इस मन्त्र को आरम्भ करे। इस मन्त्र का जप साठ हजार प्रतिदिन करें, जप के समय हर रोज घी से हवन करें। जब तक यह क्रिया मन्त्र जप की चालू रहे तब तक जमीन पर सोवे, झूठ से परहेज रखें, दूध चावल का भोजन करे, जप

के पूर्ण होने पर देवी दर्शन देगी। देवी के दर्शन करने मात्र से ही आराम होगा। सब कष्ट दूर होंगे और देवी बहुत धन देगी। नियम से ही जप करें।

धनदायनी यक्षिणी साधन

मन्त्र

ॐ ह्रीं ह्रीं हें हैं हों स्वाहा।

इस मन्त्र का एक लाख पच्चीस हजार जप करें। जप में घी और खीर का हवन करे तो धनदायनी यक्षिणी वश में होकर बहुत धन देगी।

विशेष—जप सोमवार से आरम्भ करना चाहिये।

श्मशान यक्षिणी साधन

मन्त्र

ॐ कलां भगवतिभ्यो नमः।

श्मशान में जाकर निर्वस्त्र होकर इस मन्त्र का पचास हजार जप करने से श्मशान की निवासी यक्षिणी जब प्रसन्न होगी,तब जपकर्त्ता को वस्त्र प्रदान करेगी।

मन्त्र—ॐ ह्रीं ह्रीं स्फुंशाने शारनी शमशाने स्वाहा।

उपरोक्त मन्त्र का पचास हजार जप करें और तीन बर्तन मदिरा के भरकर अपने पास रखें और भोजन भी मदिरा के साथ करें। जप पूरा होने पर यक्षिणी से जो वर मांगोगे वही मिलेगा।

भोग यक्षिणी साधन

मन्त्र

ॐ जगव्य मातृ के पद्मनिधे स्वाहा।

नियम सहित इस मंत्र का २५ हजार बार जप करने के पश्चात् ढाई हजार मन्त्र से मेवों का हवन करे तो यक्षिणी सिद्ध होकर भोग प्रदान करेगी।

अष्ट महासिद्ध यक्षिणी

मन्त्र

ॐ अष्ट महा यक्षिणी समः स्वाहा।

इस मन्त्र का बारह लाख जप करे और एक लाख बीस हजार मन्त्रों से पाँच प्रकार के मेवों से हवन करने से अष्ट महायक्षिणी वश में हो, हर कामना पूरी करेगी।

विशेष—इस मन्त्र का जप शुक्ल पक्ष की पाँचवीं तिथि को आरम्भ करें।

सिद्धि यक्षिणी साधन

मन्त्र

ॐ नानाचरण पद्मावति स्वाहा।

इस मन्त्र को रेवती नक्षत्र से आरम्भ करें। इस मन्त्र का दस लाख जप करना चाहिए और घी, गूगल व सेवती के फूलों का

मिश्रण बना करके एक लाख मन्त्र का हवन करे। जप के समय एक मिट्टी का बर्तन उड़द व चावल से भरकर अपने सम्मुख रख लेवे तो यक्षिणी सिद्ध होकर सब मनोकामना पूर्ण करती है।

शत्रु नाशक यक्षिणी सिद्धि

मन्त्र

ॐ नमो सिद्ध विनायकाय सर्वेकार करते सर्व अनुनाय सर्व जग वशीकरण सर्व जन स्त्री-पुरुष कर्षणाय श्री ॐ स्वाहा।

इस मन्त्र का २१००० जप सोमवार से आरम्भ करके २१ दिन तक प्रयोग करे तो यक्षिणी सिद्ध हो और साधक की आज्ञानुसार उसके शत्रु का नाश करें।

यह प्राचीन सिद्ध मन्त्र है जो आज भी सिद्ध है।

वशीकरण यक्षिणी साधन

मन्त्र

ॐ नमो सर्वास्त्री पुरुष वशीकरण श्रीं ह्रीं स्वाहा।

इस मन्त्र का ७२ हजार जप मंगल से आरम्भ करके ७२ दिन में जप समाप्त करें और सात हजार दो सौ मन्त्र का नारियल से हवन करें। इस तरह प्रयोग करने से यक्षिणी सिद्ध होवेगी।

***नोट**—इस हवन की राख अपने मस्तक पर लगाकर जिस के सामने जाये वही वश में होगा।*

फलदायनी यक्षिणी साधन

मन्त्र

ॐ श्री काक कमल बर्वने सर्व कार्यमवस्थित देहि देहि सर्व कार्य कुरु परिचर्य सर्वसिद्धि पाद कायां हं क्षं दास शानदायने सर्व प्रदाय स्वाहा।

इस मन्त्र का एक लाख जप करे और बाद में दसवाँ भाग मन्त्र के साथ चनों का हवन करे तो यक्षिणी सिद्धि हो। सिद्धि होने के बाद यक्षिणी जितने संसार में फल व फूल हैं वे लाकर साधक को देती है।

मोहन यक्षिणी साधन

मन्त्र

ॐ नमो पिंगलेचपले नानपशु मोहिनी स्वाहा।

इस मन्त्र की साधना मघा नक्षत्र से आरम्भ करे और सवा साल तक प्रतिदिन सायंकाल के समय एक हजार मन्त्र का जप करे। जप के समय सुपारी, नारियल और केशर आदि सामग्री अपने सम्मुख रख लें और गुग्गल की धूप देकर प्रार्थना करे तो मोहन यक्षिणी प्रसन्न होकर मनोकामना पूरी करे।

महेन्द्री यक्षिणी साधन

मन्त्र

ॐ महेन्द्री कुल कुल स्वाहा।

जब आकाश पर मेघ दिखाई देवें उस समय से इस मन्त्र का आरम्भ करें एक लाख जप निरगुण्डी के वृक्ष के नीचे बैठ कर करना चाहिए।

जप के समाप्त होने पर हवन करें। पाँच प्रकार के मेवों आदि को लेकर इस तरह करने से महेन्द्री यक्षिणी खुश होकर पाताल से नाना प्रकार के पदार्थ लाकर देती हैं।

शंखनी यक्षिणी साधन

मन्त्र

ॐ शंख धारणी शंख धरने ह्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं स्वाहा।

बट (बरगद) के पेड़ के नीचे बैठ कर दस हजार जप सूर्योदय से पहले समाप्त करे और उसी स्थान पर घी लेकर मन्त्र कर हवन करे।

तो यक्षिणी सिद्ध होगी जो भी पदार्थ मांगें वही लाकर देगी।

चन्द्रिका यक्षिणी साधन

मन्त्र—ॐ चन्द्रिके स्वाहा।

उपरोक्त यक्षिणी की विधि से इस मन्त्र का जप और हवन करे तो चन्द्रिका यक्षिणी प्रसन्न होकर अमृत प्रदान करती है। जिसका सेवन देवता करते हैं। अमृत से काया-कल्प हो जाती है। पवित्र होकर ही साधना करें।

मदन मेखले साधन

मन्त्र

ॐ मदन मेखले नमः स्वाहा।

महुए के पेड़ के नीचे बैठकर चौदह दिन में पूरा एक लाख इस मन्त्र का जप करे तो मदन मेखला एक सुरमा साधक को प्रदान करती है।

साधक इस सुरमे को अपनी आँखों में लगावे तो वह सबको देखे इसको कोई न देख पायेगा। यदि वह अंधेरे में चला जाए तो वहाँ भी उसको हर वस्तु दिखाई देगी।

विकला यक्षिणी साधन

मन्त्र

ॐ विकले ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं स्वाहा।

तीन मास तक अपने स्थान में बैठकर इस मन्त्र का एक लाख जप करे और समाप्त होने पर पचास हजार मन्त्रों से कनेर के पुष्पों में घी मिलाकर हवन करे तो विकला यक्षिणी दर्शन देती है और साधक की हर मनोकामना पूर्ण करती है।

लक्ष्मी यक्षिणी साधन

मन्त्र

ॐ लक्ष्मी व श्री कमला वारिणि स्वाहा।

इस मन्त्र को अपने घर में ही एक लाख बार जपें और

उल्लू के पंख की धूप जलाएँ। तत्पश्चात् हजार मन्त्रों से कनेर के पत्तों व घी से हवन करें। तब लक्ष्मी यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को दिव्य रसायन देती है तथा ऐश्वर्य को देती है। इस रसायन से साधक जितना चाहे सोना बना कर जिन्दगी कामयाब करे।

मांननी यक्षिणी साधन

मन्त्र

ॐ ऐं माननी ह्रीं ऐं ह्रीं सिन्द्री हंस हंस स्वाहा।

ब्रह्म मुहूर्त में किसी भी चौराहे पर बैठकर इस मन्त्र का एक लाख जप करें और गुलाब के पुष्प व घी मिला कर दस हजार मन्त्र से हवन करे तो माननी या यक्षिणी प्रसन्न होकर दिव्य खण्डा (अस्त्र) देती है। जिसका प्रयोग करने से राज्य की प्राप्ति होती है। यदि दस हजार मन्त्र से केवल घृत का हवन करे तो एक शस्त्र की प्राप्ति हो।

सुलोचना यक्षिणी साधन

मंन्त्र

ॐ कले सुलोचना द्वि देवी स्वाहा।

सायंकाल को किसी नदी के तट पर जाकर तीन मास में तीन लाख जप इस मन्त्र का करें और जप के बाद एक लाख मन्त्र से घृत का हवन करे तो सुलोचना यक्षिणी प्रसन्न होकर

खड़ाऊँ देगी जिनके ऊपर पैर रखकर साधक हजार कोस की यात्रा मिनटों में ही कर सकता है और किसी प्रकार की थकान प्रतीत नहीं होती। चाहे कितनी कठिन जगह हो फौरन वहाँ पहुँच सकता है।

नोट—*यह साधना बैसाख मास में स्वाति नक्षत्र में आरम्भ करें।*

विलासिनी यक्षिणी साधन

मन्त्र

ॐ हो दुरजक्षनी विलासिनी आगच्छ आगच्छ ह्रीं प्रिय में भव कले स्वाहा।

किसी नदी के तट पर बैठकर इस मन्त्र का ५० हजार जप करे तो बाद में घृत तथा गूगल को मिला कर इस मन्त्र की १० हजार आहुतियाँ दे तो विलासिनी यक्षिणी वश में होकर मनोकामना पूरी करे।

सुरसुन्दरी यक्षिणी साधन

मन्त्र

ॐ ह्रीं आगच्छ गच्छ सुर सुन्दरी स्वाहा।

इस मन्त्र के साधन के लिए आवश्यक है कि वह तीन बार विधि पूर्वक सन्ध्या करे और प्रत्येक के साथ एक-एक हजार मन्त्र का जप प्रतिदिन तीन मास तक करे और श्री महादेव की मूर्ति के पास बैठकर गुग्गल तथा घृत का पन्द्रह हजार मन्त्र से हवन करे तो तीन मास के बाद यक्षिणी प्रकट होकर दर्शन देगी।

उसी समय हाथ जोड़कर यक्षिणी से निवेदन करे—

देवी दारिद्य दग्धोसि मम तन्नाशय सत्वर।

अर्थ—हे देवी! मुझे दारिद्रय ने बहुत दुखी किया है और आलस्य ने घेर लिया है आप मुझे इससे मुक्ति दिला दें और आलस्य का नाश कर दें।

नटी यक्षिणी साधन

मन्त्र

ॐ ह्रीं नटी महा नटी स्वरूपवति स्वाहा।

कार्तिक की पूर्णिमा को शीशम के पेड़ के नीचे आसन लगा कर इस मन्त्र का जप करे। इस विधि से एक सुन्दर मण्डल चन्दन का तैयार करे और एक मूर्ति नटी यक्षिणी की बना कर उसमें बिठा दे और धूप दीप इत्यादि से पूजन करे और इस मूर्ति के सामने बैठाकर एक साल तक प्रतिदिन एक हजार इस मन्त्र का जप करे और रात को इसी तरह पूजा करे। बाद में खाना खाये और आधी रात को उठकर जप करे तो यक्षिणी खुश होकर एक रस व सुरमा देती है। यह सुरमा हर रोग को दूर करता है।

कामेश्वरी यक्षिणी साधन

मन्त्र

ॐ ह्रीं आगच्छा गच्छ कामेश्वरी स्वाहा।

प्रातःकाल शुद्ध आसन पर बैठकर एक हजार जप प्रतिदिन

तीन मास तक करे और प्रतिदिन रात्रि को भी ऐसा ही करे। बाद में धूप, दीप, पुष्प इत्यादि सामग्री से पूजन करे तो कामेश्वरी यक्षिणी सिद्ध हो और रसायन देवे।

विशेष—इस मन्त्र की साधना कार्तिक की पूर्णिमा को करे।

स्वर्ण रेखा यक्षिणी साधन

मन्त्र

ॐ वार कर श्यामल स्वर्ण रेखा ॐ ह्रीं हीं हूं हयः स्वाहा।

सायंकाल को महादेव की मूर्ति के सामने बैठकर जप करे बाद में भोजन करे। इस तरह छः मास तक करे इस प्रकार से यक्षिणी खुश होकर दर्शन देती है और समस्त सुख प्रदान करेगी।

सुलखाना यक्षिणी साधन

मन्त्र—ॐ ह्रीं प्रमोदय स्वाहा।

रात्रि के समय इस मन्त्र का जप तीन मास तक प्रतिदिन करे तो यक्षिणी सिद्ध होवे। साधना चाहे किसी तिथि से आरम्भ करे।

अनुरागिनी यक्षिणी साधन

मन्त्र—ॐ ह्रीं अनुरागनी मैथुन प्रिये स्वाहा।

इसकी साधना के लिए लाल रंग के वस्त्र के ऊपर अनुरागिनी यक्षिणी की सफेद रंग की मूर्ति बनाये। मूर्ति इस तरह की होनी चाहिये कि एक हाथ में कमल हो सर्व आभूषणों से युक्त और वस्त्र आदि धारण किये हों।

फिर इस मूर्ति की पूजा पुष्प धूप से करे और एक हजार जप मन्त्र का प्रतिदिन एक मास तक करे तो साधना के पूरा होने पर यक्षिणी आयेगी और आधी रात को दर्शन देकर साधक की मनोकामना पूरी करेगी और हर रोज 25 स्वर्ण मुद्रा देगी। साधक को चाहिये कि इन मुद्राओं को किसी अच्छे काम में खर्च कर देवे, वरना कुछ नहीं मिलेगा।

पद्मकेशी यक्षिणी साधन

मन्त्र

ॐ ह्रीं पद्मकेशी कनकवति स्वाहा।

इसकी विधि भी उपरोक्त मन्त्र के समान है इससे साधक बहुत शीघ्र सफल होता है।

महा यक्षिणी साधन

मन्त्र

ॐ ह्रीं महा यक्षिणी भामिनी प्रिय स्वाहा।

इस मन्त्र की साधना रविवार को या सोमवार को आरम्भ करनी चाहिये और जप के पहले तीन दिन तक व्रत रखे और फिर धूप दीप पुष्प आदि से देवी की पूजा करनी चांहिये और

चन्द्र ग्रहण के आरम्भ से लेकर अन्त तक यानी जब तक ग्रहण लगा रहे तब तक इस मन्त्र का जप करे तो महायक्षिणी वश में हो।

पद्मनी यक्षिणी साधन

मन्त्र—ॐ ह्रीं पद्मिनी स्वाहा।

प्रात:काल स्नान करके पहले एक मंडल चंदन का डेढ़ वर्ग तैयार करके उसमें पद्मिनी यक्षिणि की मूर्ति स्त्री के आकार की बनाकर उसका ही ध्यान व पूजन करे और सोमवार से प्रारम्भ करके एक हजार एक मास तक मन्त्र हर रोज जपे तो यक्षिणी वश में होकर रसायन प्रदान करती है।

चित्रणी यक्षिणी साधन

मन्त्र—ॐ ह्रीं क्लां चित्रणी स्वाहा।

आम के पेड़ के नीचे बैठकर तीन मास तक एक हजार मन्त्र का प्रतिदिन जप करे और अन्तिम दिन किसी फल से दस हजार मन्त्र का हवन करे तो यक्षिणी वश में होकर एक अंजन प्रदान करती है जिस को नेत्रों में पूर्णिमा को लगावे तो प्राचीन छिपा हुआ खजाना मिले।

मनोहरा यक्षिणी साधन

मन्त्र

ॐ ह्रीं सर्वकामदु मनोहर स्वाहा।

इस मन्त्र का जप किसी नदी के किनारे बैठकर २१ दिन तक दस हजार जप पूरा करे तो अन्तिम दिवस को दस हजार मन्त्र से ही हवन करे तो यक्षिणी प्रसन्न होकर बहुत साधन देवे मगर साधक को चाहिए कि उस धन को खर्च कर देवे। जमा करने का विचार तक ना रखे।

इस मन्त्र का जप आरम्भ करने से पहले निम्नलिखित श्लोक को पढ़कर ही जप करे इस मन्त्र का जप उस समय करना चाहिये जबकि चन्द्रमा मकर राशि में होवे।

कुरंग नेत्र शरविंद वक्ता
बिबा परां चन्दन गंध माल्या।
चीन्या शुक्री धनि केचोमनोज्ञा
श्यामा सदा करि बचित्रां॥

अर्थ—हे मृगनयनी शरद ऋतु के चन्द्र के समान साफ मुख वाली सुन्दर स्वरूप वाली, लाल होठों वाली, तीखी नाक वाली और सुन्दर स्वरूप वाली, ऐसी जो देवी हैं मैं उनका ध्यान करता हूँ।

कलिका देवी यक्षिणी साधन

मन्त्र

ॐ कलिकां देवी स्वाहा।

इस मन्त्र की साधना के लिये गौशाला में जाकर इस मन्त्र को दो लाख बार जप करे और बीस हजार मंत्रों से घी का हवन

करें तो यक्षिणी सिद्ध होकर मनोकामना पूर्ण करे।

विशेष—*इस मंत्र का जप मंगलवार को आरम्भ करें।*

कर्ण पिशाचिनी यक्षिणी साधन

मन्त्र

ॐ कर्ण पिशाचिनी पिंगले स्वाहा।

इस मंत्र का एक लाख जप करें। जप के बाद दस हजार मंत्र से हवन करना चाहिये और केवल एक ही समय गुड़ तिल को मिला कर खाने से कर्ण पिशाचिनी सिद्ध होकर तीनों काल का हाल जानने की शक्ति प्रदान करती है। यह पाताल का खजाना भी बतला देती है। इस मंत्र का जप गुरुवार से आरम्भ करें।

नक्षत्र यक्षिणी साधन

मन्त्र

ॐ विचित्रेन चित्र रूपेण सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा।

पवित्रता और सावधानी से बड़ (बरगद) वृक्ष के नीचे बैठकर इस मंत्र का जप एक लाख पूरा करे और शहद, घृत व दुग्ध को मिलाकर दस हजार मंत्र से हवन करे तो यक्षिणी खुश होकर साधक की मनोकामना को पूरा करती है।

विभ्रमा यक्षिणी साधन

मन्त्र

ॐ ह्रीं विनम्र रूपे विभ्रमे केरू केरू यहि भगवात स्वाहा।

रात के समय श्मशान में जाकर तीन मास तक इस मंत्र का दो लाख जप पूरा करें। जप के बाद में बीस हजार मन्त्र से घृत का हवन करें तो विभ्रमा यक्षिणी प्रसन्न होकर ५० मनुष्यों का भोजन प्रतिदिन दिया करेगी।

विशेष—*इस साधना को शनिवार से आरम्भ करें तब ही सिद्धि मिलेगी।*

वाक् यक्षिणी साधन

मन्त्र

ॐ ह्रीं चा चः स्वाहा।

स्नान आदि कर पवित्र होकर आसन पर बैठकर कुछ दिन तक प्रतिदिन एक हजार मंत्र जपे तो इस तरह प्रयोग करने पर वाक् यक्षिणी सिद्ध हो जाती है।

साधक जो बात वाक् यक्षिणी से पूछेगा वही बात कान में कह देवेगी। फिर साधक दूसरे लोगों से कह देवे। जो कुछ आप कहेगें वह सत्य होगा।

वाक सिद्धि

मन्त्र

ॐ नमो लिंग द्रव कद्र देहि में वाक सिद्धि बिना पर्वगते द्री दू द्रै द्रः।

बहते हुए जल में खड़े होकर और अपना बांया हाथ सिर पर रखकर एक लाख मंत्र का जप करने से वाक् सिद्ध होगी यानि जो बात मुख से निकलती है सत्य होती है। इस मंत्र जप को तीन मास में समाप्त करें, सिद्ध मंत्र है।

त्यागा यक्षिणी साधन

मन्त्र

ॐ अहो त्यागी मम त्यागार्थ देहि में वित्त वीरासो बिन स्वाहा।

प्रात:काल स्नान करके गूगल का धूप जलाकर इस मंत्र का चार लाख जप एक वर्ष में समाप्त करने से त्यागा यक्षिणी खुश होकर बहुत से पदार्थ लाकर देगीं।

वट यक्षिणी साधन

मन्त्र

ॐ हीं श्रीं वर वासिनी यज्ञ कुल प्रसूते वट यक्षिणी एहिपाणि स्वाहा।

यह साधना सोमवार को आरम्भ करें और रात्रि के समय ऐसे स्थान पर बैठे जहाँ पर तीन मार्ग मिलते हों आसन लगा कर इस मंत्र का तीन लाख जप करने से बट यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को एक सुरमा व कुछ वस्त्र प्रदान करती है इन वस्त्रों में से यदि कोई मनुष्य दु:ख के समय पहने तो दुख दूर हो जावे और यदि सुरमा यदि किसी गर्भवती स्त्री की आँखों में लगा दें तो सुख से पुत्र पैदा हो।

बट यक्षिणी साधन

मन्त्र

ॐ नमो भगवते रुद्राये चन्द्र योनि स्वाहा।

इस मंत्र की साधना रात्रि के समय बरगद के वृक्ष के ऊपर चढ़कर छ: घंटे यानि दोपहर तक इस मंत्र का जप करें प्रतिदिन इतने समय ही समय तक जब एक लाख मंत्र का जप हो जाये तो काँजी से मुख धो ले इस तरह से करने पर बट यक्षिणी खुश होकर बहुत से बहुमूल्य पदार्थ प्रदान करती हैं।

विशाल यक्षिणी साधन

मन्त्र

ॐ ह्रीं विशाले दूँ दूँ क्लीं एही स्वाहा।

इस मंत्र को इमली के वृक्ष के नीचे बैठकर एक हजार मंत्र प्रतिदिन सत्ताईस दिन तक जपे तो विशाला यक्षिणी वश में हो

जाती है। और एक उत्तम पदार्थ प्रदान करती है जो कोई भी इस पदार्थ को अपने शरीर पर मलता है वही सुन्दर हो जाता है।

भण्डार अटल यक्षिणी साधन

मन्त्र

ॐ नमो उच्स्ते चाण्डालिनी क्षोमिणी नह द्रव द्रव अन्नपूरीश्वर भास्कर स्वाहा।

ॐ नमो ईश्वरी चल रिद्धि सिद्धि दीनी हमारे हाथ भरी भण्डार बास करो श्री अन्नपूर्णा ज्वाला मुखी चोला एक स्वाहा।

इस पूरे मन्त्र का दस हजार जप करने के बाद पहले वाला मन्त्र १०००० जपे इस तरह प्रतिदिन करें १५ दिवस कृष्ण पक्ष में दो वर्ष तक जप करें इस तरह यह यक्षिणी सिद्ध होकर वचन देगी बाद में केवल एक बार पढ़ने से भण्डार को हाथ लगाने से भण्डार भर जाता है।

अन्य यक्षिणी साधन

मन्त्र

ॐ ह्रां क्लीं वामे मंत्र।

दीपावली की रात को यक्षिणी की स्त्री के आकार की मूर्ति बनाकर ऊपर सिन्दूर चढ़ाकर धूप, दीप, पुष्प आदि से पूजन करें तो उपरोक्त मंत्र की तरह प्रयोग में लावें।

सद् भक्षान यक्षिणी साधन

मन्त्र

ॐ चामुण्डे प्रचण्डे इन्द्राय मनो विप्र चण्डालनी क्षोभणि प्रकर्खण आकर्षय द्रव्य मान्य हुं फट् स्वाहा।

इस मंत्र के आरम्भ में व्रत रखना है, क्रोध का त्याग करना भूमि पर सोना, मीठा भोजन करना और फिर किसी निर्जन स्थान पर आसन लगाकर इस मंत्र का प्रतिदिन १०००० जप करें इस तरह तीन मास तक यह साधना करें और अन्तिम दिन रात्रि को भयानक स्वप्न देखें। यदि स्वप्न न दिखाई दे तो फिर इक्कीस दिन तक यही साधना करें तो यक्षिणी प्रकट होकर कई प्रकार के भय दिखायेगी किन्तु साधक डरे नहीं तो यक्षिणी सिद्ध हो जाये। जो साधक माँगेगा वही वस्तु उसे देगी।

महा भय यक्षिणी साधन

मन्त्र

ॐ महा भय यक्षिणी साधन मंत्र स्वाहा।

इस मंत्र की साधना के लिये मनुष्य के शरीर की हड्डियाँ लेकर उनकी माला बनाओ और श्मशान में बैठकर इस मंत्र का एक लाख़ जप एक मास तक करे तो महा भय यक्षिणी सिद्ध होकर एक रसायन देगी जिस को खाने वाले में अद्‌भुत शक्ति आ जाती है।

नोट—*यदि साधक को एक मास में सफलता न प्राप्त हो तो फिर एक मास के लिए साधना आरम्भ कर दें तो सिद्धि मिलेगी।*

अमर यक्षिणी साधन

मन्त्र

ॐ ह्रीं चन्द्र हसां क्लीं स्वाहा।

कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष में जब तक चंदा की चांदनी रहे रोजाना इस मन्त्र का जप करे यानि पहले दिनों में चांदनी कम रहती है तो जप भी उतना ही करें। अन्तिम दिनों में अधिक चांदनी रहती है तो जप भी उतनी देर तक करें जब यह मंत्र पूरा हो जायेगा तो यक्षिणी खुश होकर मंत्र जप कर्ता को अमृत लाकर देती है जिसे पीने से साधक अमर हो जाता है।

तांत्रिक सामग्री के विशिष्ट प्रयोग

पारद शिवलिंग

पारद शिवलिंग संसार में दुर्लभ कहा जाता है। तन्त्र के अनुसार पारे में कोई चीज नहीं घुलती और पारा अपने आप में निर्मल रहता है। साथ ही पारा ठोस होते हुए भी द्रव्य है अतः हाथों से निकल जाता है। इसे पकड़कर रखना कठिन है। सर्वाधिक दुर्लभ यह इसलिए माना जाता है कि पारे को गर्म नहीं किया जा सकता। क्योंकि गर्म करने से पारा उड़ जाता है साथ ही उसमें चाँदी जैसी कठोर धातु का मिश्रण सम्भव नहीं होता ऐसी स्थिति अत्यन्त उच्च स्तरीय योगी ही अपनी प्राण उष्मा से पारे को गर्म कर उसमें रजत का मिश्रण कर सकते हैं। कहा जाता है कि इस प्रकार का पारद यदि लाख रुपये तोला भी मिल जाये तो भी सस्ता है यह मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा की सिद्धियों के लिए प्रयोग किया जाता है।

मीन मुक्तक

समुद्र में पाई जाने वाली एक विशेष मछली के सिर से यह मोती प्राप्त होता है जिसका आकार बाजरे के दाने जितना होता है। इस मछली को कहीं 'उकत्या' मछली भी कहते हैं! यह

मोती आकार में छोटा होते हुए भी विशेष सिद्धिप्रद माना गया है।

तांत्रिक क्षेत्र में कई प्रकार से इस मोती का प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार की मछली का ज्ञान मछुआरों या मछली के विशेषज्ञों को ही होता है। यह दुर्लभ किस्म की मछली मानी गई है यह मछली भी यौवनावस्था में ही मुक्तक पैदा करती है इस प्रकार का मुक्तक दुर्लभ माना गया है।

तुम्बी

साधुओं मे पास जो जल पात्र होता है। वह ऐसे विशेष फल का खोखला भाग है जिसे हम तुम्बी या तुम्बा कहते हैं इस का रंग पीला या मटमैला होता है पर कई बार राजस्थान के घने जंगलों में काली तुम्बी पैदा होती है, ऐसा बहुत कम होता है इसलिये इसे दुर्लभ कहा गया हे। ताँत्रिक क्षेत्र में इसका विशेष महत्व है।

इसका विशेष प्रयोग इस प्रकार है। काली तुम्बी की गिरी को दस वर्ष पुराने गुड़ के साथ घिसा जाता है। जिससे वह एकाकार हो जाता है और इसका लेप सा बन जाता है।

यह कहा जाता है कि यदि किसी व्यक्ति के शरीर का कोई हिस्सा किसी तेज धार से कट जाए तो पाँच मिनट के अन्दर वह कटा हुआ भाग इस लेप के लगाने से भर जाता है और दर्द जाता रहता है कटी हुई चमड़ी भी इस प्रकार मिल जाती है कि पता ही नहीं चलता कि कहीं कटा हुआ भी था।

घोड़े की जीभ

घोड़ी के प्रसव के समय जब बच्चा गर्भ से बाहर आता है तब वह सक झिल्ली से ढ़का रहता है, उस झिल्ली के ऊपर एक पतली जीभ के समान रचना होती है जिसे घोड़ी तुरन्त खा जाती है इसका गुण व उपयोग विधि बिल्ली के ज़ेर के समान है।

वैदूर्य मणि

पुरातन धार्मिक ग्रन्थों में तंत्र-तंत्र वैदूर्य मणि का उल्लेख मिलता है। मटर के दाने के बराबर दीखने वाली यह मणि राजस्थान में मकराना के पत्थर को तलाश कर बनाई गई है पर वास्तव में इसका गुण तो कुछ और ही है। स्थान-स्थान पर तराश दिये जाने का चिह्न मिलता है यह सम्पूर्ण चिह्न प्रकाश मान रहता है और इसका प्रकाश मरकरी ट्यूब लाइट जैसा होता है यह मणि अत्यन्त मूल्यवान होती है इसे धारण करने से शिव प्रसन्न होकर इच्छित वरदान देते हैं।

व्याघ्र चर्म

तंत्र के क्षेत्र में पूजा-पाठ का विधान है। एकदम काले कपड़े पहनकर साधक व्याघ्र चर्म पर बैठकर काली साधना करना आवश्यक है। गोली, बाण, भाला आदि से मारा गया व्याघ्र-चर्म अशुभ माना गया है। उस पर आक्रमण का एक भी चिह्न ना हो वह चर्म उत्तम माना जाता है। व्याघ्र को जब घेरे में

लेकर एक से डेढ़ माह तक भूखे रखकर मारा जाता है तब वह चर्म प्राप्त होता है इस पर बैठकर देवी दुर्गा या काली उपासना की जाये तो शीघ्र देवी प्रसन्न होकर इच्छित वर देती है।

वशीकरण प्रयोग

यदि घर में कलह हो या पति-पत्नी में मतभेद हो या पत्नी चाहती हो कि उसका पति उसके नियत्रंण में रहे या कोई व्यक्ति किसी अन्य को अपने वश में करना चाहता हो या किसी शत्रु को अपने आधीन करना चाहते हैं तो ऐसे सभी प्रयोगों में नीचे लिखा मंत्र उपयोगी हो सकता है। यह प्रयोग किसी भी रविवार से प्रारम्भ किया जा सकता है। रविवार के दिन प्रातःकाल उठकर स्नान कर शुद्ध वस्त्र पहन कर अपने सामने दक्षिणावर्त शंख को रख दें और उस पर कुमकुम लगा लें। इसके बाद शुद्ध घृत का दीपक इसके सामने रखकर स्फटिक माला से निम्न प्रकार की एक माला फेरें। इस प्रकार ३० दिनों तक नित्य नियमपूर्वक करें तो निश्चय ही वह अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त कर लेता है। इस प्रकार के प्रयोग में नित्य १५ से २० मिनट लगते हैं और ऐसा प्रयोग करने पर व्यक्ति मनोबाँछित सफलता प्राप्त कर लेता है।

मन्त्र—ॐ क्रीं अमुकं मे वशमानाय स्वाहा।

यह मंत्र अपने आप में विशेष शक्ति समेटे हुए है। इसी विधि में यह शंख अपने सामने रख दें और चावल के साबुत दाने अपने सामने किसी पात्र में रख दें, इस बात का ध्यान रखें

कि चावल के दाने खण्डित न हों। इसके बाद में उपरोक्त मन्त्र पढ़कर कुछ दाने इस शंख के मुँह में डाल दें इस प्रकार नित्य १०८ बार मन्त्र पढ़कर चावल के दाने इस शंख के मुंह में डाल दें। मन्त्र में जहाँ अमुक लिखा हुआ है वहां उस पुरुष स्त्री का नाम उच्चारण करें जिसे वश में करना है। जब माला पूरी हो जाये तब वह शंख वहाँ से उठाकर सुरक्षित स्थान पर रख दें। इस बात का ध्यान रखें कि शंख में रखे हुए चावल के दाने ना गिरें।

प्रयोग पूरा होने पर चावल के दाने किसी सफेंद कपड़े में बाँध कर अपने सन्दूक में या किसी भी सुरक्षित स्थान पर रख दें। ऐसा करने पर वह पुरुष या स्त्री प्रयोग करने वाले के वश में रहेगी और वह जैसा चाहता है उसी प्रकार से कार्य सम्पन्न होगा। जब उसे इस वशीकरण मन्त्र से मुक्ति देनी हो तो उस पोटली में से चावल के दाने निकाल कर किसी नदी या तालाब या पवित्र स्थान पर डाल देने से वह उस वशीकरण प्रभाव से मुक्त हो जाता है।

यह प्रयोग अनुभूत है और इसकी प्रामाणिकता सिद्ध हो चुकी है।

दक्षिणावर्त शंख कल्प प्रयोग

यह शंख लक्ष्मी प्राप्ति, आर्थिक उन्नति, व्यापार वृद्धि आदि में विशेष सहायक है। कर्जा उतारने में तो यह प्रयोग अत्यधिक महत्वपूर्ण एवं प्रभाव युक्त है। जो व्यक्ति इस प्रकार का प्रयोग

चाहता है, उसे यह प्रयोग अवश्य करना चाहिये।

प्रयोग की विधि—वैशाख पूर्णिमा को प्रातःकाल स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर अपने सामने इस शंख को रख दें उस पर केशर से स्वास्तिक चिह्न बना दें, इसके बाद निम्न मंत्र का जप करें—

मन्त्र—ॐ श्री ह्रीं दारिद्रय विनाशिनी धन-धान्य समृद्धि देहि देहि कुबेर शंख विध्ये नमः।

इस मन्त्र को पढ़ता जाये और चावल के कुछ दाने इसके मुंह में डालता रहे। लगभग दो घण्टे तक इस मंत्र का जाप करता रहे। इसमें माला की संख्या निर्धारित नहीं है कि कितने मंत्र का जप करना है, केवल इतना ही पर्याप्त है कि लगभग दो घण्टे तक कोई भी व्यक्ति या महिला उपरोक्त मंत्र पढ़ते हुए सामने रखें मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त चैतन्य दक्षिणावर्त शंख के मुंह में कुछ दाने डालता रहे जब शंख का मुंह चावलों से भर जाये तब मन्त्र का प्रयोग बंद कर दें और चावलों के दानों के साथ इस शंख को लाल वस्त्र में बाँधकर अपने घर में पूजा के स्थान पर रख दें या कारखाने फैक्ट्री अथवा व्यापारिक स्थल पर स्थापित कर दें।

यह सौभाग्यशाली शंख वहाँ जब तक रहेगा तब तक उसके जीवन में निरन्तर आर्थिक, व्यापारिक, उन्नति होती रहेगी। ऐसा प्रयोग करने पर शीघ्र ही व्यक्ति कर्जे से मुक्ति पा लेता है और सभी दृष्टियों से उन्नति करता हुआ पूर्ण भौतिक सुख प्राप्त करता है। दीपावली के दिन भी इस शंख का पूजन किया जा सकता है और जिस प्रकार लक्ष्मी पूजा होती है, उसी प्रकार

इसका भी पूजन किया जाना चाहिये। वस्तुतः यह शंख अत्यधिक महत्वपूर्ण, दुर्लभ एवं प्रभावयुक्त है तथा ऐसे बिरले ही सौभाग्यशाली होंगे जिनके पास इस प्रकार का दुर्लभ महत्वपूर्ण शंख पाया जाता है पर इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि इस प्रकार का शंख सभी काम में सफलता देने वाला है।

अस्थि सिंगार

इसे संस्कृत में वज्रकंद, हिन्दी में हरजीरा तथा गुजराती में बेदारी कहते हैं इसकी बेल होती है इस पर गुलाबी फल भी लगते हैं। इसके डण्ठल का चूर्ण बनाकर टूटी हुई हड्डी पर लगाने से एक दिन में हड्डी पूर्ण रूप से जुड़ जाती है। यदि ऊपर से गिरने या मार-पीट से अन्दर की बहुत सी हड्डियाँ टूट गई हों तो इसके पाउडर की एक माशे की मात्रा दूध में पीने से अन्दर की सारी ही हड्डियाँ स्वतः सही स्थानों पर जुड़ जाती हैं यह जलोदर और बवासीर को भी दूर करती है।

कटूड

यह मसूरी की तरफ पाई जाती है, इसका पौधा लगभग चार फीट का होता है। इस पर गुलाबी रंग के फूल बारहों महीने आते ही रहते हैं। एक सेर फूलों को घोट कर उनका रस निकालकर शीशी में भर लें और केवल एक बूंद पानी के साथ लिया करें तो मोटापा समाप्त हो जाता है। एक बूंद इसका रस आधा किलो चर्बी को कम करने में सहायक है, इसके सेवन करने से कमजोरी नहीं आती, ना ही गलत असर होता है।

————

भैरव स्तोत्र व कामना सिद्धि

स्तोत्र

ॐ ह्रीं भैरवो भूतनाथश्च भूतात्मभूत भावनः।
क्षेत्रदाः क्षेत्र पालश्च क्षत्रदः क्षत्रियो विराट्॥
श्मशानवासी मांशासी खर्पराशी स्मरान्तक।
रक्तयः पानयःसिद्धः सिद्धिः सिद्धः सेवितः॥
ककालः कालशमनः कला काष्ठातन्तुः कवि।
त्रिनेत्रो बहुनेत्रश्च तथा पिंगल लोचन॥
शूलपाणिः खड्ग पाणिः कंकालो धूम्र लोचन।
अमीस भैरवीनाथो भूतयो योगिनीपतिः॥
धनदोलधनहारी च धनवान् प्रतिभावान्।
नागहारो नागपाशे व्योमकेशः कपाल-मृत्॥
कालः कपालमाली च कमनीयः कलानिधिः।
त्रिलोचनो ज्वलत्रे त्रस्यिशिखि च त्रैलोक्यः॥
त्रिनेत्र तन्त्रा डिम्भशांतः शान्त जनप्रियः।
बटुको बहुवेषश्च खड्वांग बरधारकः॥
भूताध्यक्षः पशुपतिक्षिकुः परिचारकः
धुतौ दिगम्बरः शुरो हरिण पाण्डुलोचनः॥

प्रशान्तः शान्तिदः शुद्धः शंकर प्रिय बान्धवः।
अष्टमूर्ति निधिश्च ज्ञानः चक्षुस्तपोमयः॥
अष्टाधारः षडाधारः सर्पयुक्तः शिरवीसखः।
भूधरो भूधराधीशौ भूपतिर्भरामजः॥
कंकालधारी मुण्डी च अन्यघज्ञोपवीतवान्।
जृम्भणो मोहनः स्तम्भी मारणः क्षोभणस्तथा॥
शुद्धः नीलान्जन प्रख्यो दैव्यहा मुण्ड भूषितः।
बलिमृग बलिमुण्डनायो बालीलबाल पराक्रमः॥
सर्वापतारणो दुगो दुष्भूतानि-षेवितः।
कामी कलानिधिकान्तः कामिनी वशकृद्वशी॥
जगद् रक्षा करोलनन्तो माया मन्त्रोषधीमयः।
सर्व सिद्धि प्रदो वैद्याः प्रभविष्णुरितीबहि॥
ह्रीं ॐ॥

प्रयोग

(१) सात मास तक प्रतिदिन रात्रि में ३८ बार पाठ अर्थात् ११४० पाठ होने पर विद्या एवं धन की प्राप्ति होती है।

(२) तीन माह तक रात्रि में १ या २ पाठ प्रतिदिन करने पर इष्ट सिद्धि प्राप्त होती है।

(३) ऋण भार से मुक्ति के लिये आप दुद्धारण मंत्र का जप करें, रात में प्रतिदिन १२ पाठ दीपक के समक्ष करने से सफलता मिलती है।

(४) रात में चार मास तक १० पाठ प्रतिदिन करने से सर्व सिद्धि की प्राप्ति होती है।

(५) ४९ दिन का एक मण्डल होता है। ऐसे चार मण्डल तक प्रतिदिन रात्रि में १२ पाठ करने से इष्ट सिद्धि प्राप्त होती है।

(६) ११ माह तक प्रतिदिन ४४ पाठ करने से मन्त्र की सिद्धि होती है।

(७) दुस्तर विपत्ति से मुक्ति प्राप्त करने के लिये बटुक की उपासना रात्रि में ही करनी चाहिए।

वैसे बटुक की काम्य साधनार्थ निम्न पाठ कर्मों का निर्देश आवश्यक है।

बाटुकस्याष्ट कर्माणि निशि कुर्याच्च साधकः।
पूजन दीपदानं च बलिदानं तथैव च॥
मूल मन्त्र जपश्चैव स्तोत्रस्यापि जपस्वथा।
होम सन्तर्पण चैव माजिन विप्र भोजनम्॥

अर्थात् साधक को निम्न आठ कर्म रात्रि में करने चाहिये—

(१) पूजन
(२) दीपदान
(३) बलिदान
(४) मूल मन्त्र जप
(५) स्तोत्र जप
(६) होम
(७) तर्पण-मार्जन
(८) ब्राह्मण भोजन

सर्वकामना सिद्धिदायक गणेश मन्त्र

गणेश चेटक मन्त्र

ॐ नमो हस्ति मुखाय लम्बोदराय उच्चिष्ट महानते क्रं क्रीं ह्रीं बेचे उच्चिष्ट स्वाहा।

विधि—नीम की लकड़ी लेकर एक अंगुली के बराबर की श्री गणेश जी की मूर्ति बनाकर उसकी पूजा धूप, दीप आदि से करें फिर इस मूर्ति के सामने बैठकर कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी से लेकर अमावस तक प्रतिदिन ११०० मन्त्र का जप करके और अन्तिम दिन मन्त्र से पाँच प्रकार के मेवों के साथ हवन करे तो गणेश जी बहुत प्रसन्न होकर साधक को मुंह माँगी वस्तु प्रदान करते हैं।

इस मन्त्र के द्वारा ही स्त्री को वश में करने की विधि यह है—जिस स्त्री को वश में करना हो पहले उसकी मूर्ति बना लो फिर उपरोक्त गणेश जी की मूर्ति उस स्त्री की मूर्ति के ऊपर रख दें और ऊपर बताये मन्त्र का स्त्री के नाम सहित प्रतिदिन ११०० जप करें तो स्त्री आपके पास चलकर आयेगी।

नोट—जब तक गणेश जी की मूर्ति उस मूर्ति के ऊपर

रहेगी तब तक आपके पास रहेगी जब मूर्ति उठा देंगे तब स्त्री फौरन चली जायेगी।

गणेश जी की मूर्ति को बाद में किसी नदी के किनारे ले जाकर स्नान कराएँ। जिस पानी से स्नान करवाया है उसे भी सुरिक्षत रख लें। इस पानी में से थोड़ा सा भी पानी जिसे पिला दिया जायेगा वही वश में हो जायेगी।

यदि इस मूर्ति को चाँदी में मढ़वा कर अपने पास रखें तो शत्रु का नाश होगा।

विभिन्न वशीकरण मन्त्र-तन्त्र

सर्वजन वशीकरण मन्त्र

सर्वलोक वशाकरणाय कुरु कुरु स्वाहा।

यह मन्त्र २१ दिन में हर रोज १०१ बार जपने से सिद्ध हो जाता है। इस मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित प्रयोग द्वारा इच्छित व्यक्ति को वशीभूत किया जा सकता है। प्रयोगों का वर्णन नीचे किया जा रहा है। प्रयोगों को अभिमन्त्रित करने की विधि यह है कि पहले प्रयोग में आने वाली सभी वस्तुओं को एकत्र करे फिर उक्त मन्त्र का १०८ बार जप करके उन वस्तुओं पर फूंक मार दे बस यही अभिमन्त्रित करना है। जब वस्तुएँ अभिमन्त्रित हो जायें, तब उनका यथाविधि से प्रयोग करे।

प्रयोग-१

कूट, बच और ब्रह्मदण्डी—इन तीनों वस्तुओं को समभाग लेकर पूर्वोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करे। फिर इन वस्तुओं को पान में रखकर अभिलाषित व्यक्ति को खिलाए तो वह वशीभूत हो जाता है।

प्रयोग-२

सहदेई को छाया में सुखाकर उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके चूर्ण बना ले। फिर वह चूर्ण पान में रखकर जिस व्यक्ति को खिला दिया जायेगा, वह पान खिलाने वाले के वशीभूत हो जायेगा।

प्रयोग-3

पान और तुलसी के पत्रों को कपिला गाय के दूध में पीस कर उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करे फिर उस लेप का तिलक लगाकर साधक जिस व्यक्ति के सामने पहुंच जाएगा वह देखते ही वशीभूत हो जायेगा।

प्रयोग-४

हरताल, असगंध, सिन्दूर और केला का रस इन चारों वस्तुओं को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर पीस ले फिर उसका अपने मस्तक पर तिलक लगाकर जिस साध्य व्यक्ति के सामने पहुंच जाये वहीं वह वशीभूत हो जायेगा।

प्रयोग-५

नागरमोथा, हरताल, मैनसिल, कुमकुम और कठ इन सब वस्तुओं को अपने हाथ की अनामिका उंगली के रक्त में पीसकर

उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करे फिर उसका मस्तक पर तिलक लगाकर जिस साध्य व्यक्ति के पास पहुंच जाये वही वशीभूत होगा।

प्रयोग-६

बिना भोजन किये ही इस मन्त्र का ५०० बार जप करना चाहिये। जिस व्यक्ति को वशीभूत करने की इच्छा से इस मन्त्र का जप किया जाता है वह कोई भी क्यों न हो साधक के वशीभूत हो जाता है।

सर्वजन वशीकरण मन्त्र

ॐ चिटि चिटि चाण्डाली महाचाण्डाली 'अमुक' मे वश मानय स्वाहा।

विधि—सात दिन और सात रात तक निरन्तर जप करते रहने से यह मन्त्र सिद्ध होता है इस मन्त्र में जहाँ अमुक शब्द आता है वहाँ साध्य व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

जब मन्त्र जप की अवधि पूरी हो जाये और मन्त्र सिद्ध हो जायेगा तब आवश्यकता के समय इस मन्त्र को तालपत्र पर लिखकर उस तालपत्र को दूध मिले हुंए पानी में डालकर पकाना चाहिए। इस विधि से जिस साध्य व्यक्ति का नाम तालपत्र पर लिखा होगा वह साधक के वशीभूत हो जायेगा।

एक अन्य मत के अनुसार इस मन्त्र को सिद्ध करने के बाद

बेल के कांटे से तालपत्र के ऊपर लिखकर दूध में पकाये फिर तालपत्र तीन दिन तक कीचड़ में रक्खें तत्पश्चात् वहाँ से निकाल कर दुर्गोत्सव मण्डप के द्वार पर गाढ़ दें तो ऐसा करने से साध्य व्यक्ति वशीभूत हो जाता है।

तीसरे मत के अनुसार सिद्ध करने के पश्चात् इस मन्त्र को बेल के कांटे से तालपत्र के ऊपर लिखे, फिर भद्रकालीन यथाविधि पूजन करने के उपरान्त जिस व्यक्ति के घर में तालपत्र को गाढ़ दें तो वह साधक के वशीभूत हो जाता है।

चौथे मत के अनुसार निम्नलिखित विधि इस मन्त्र को सफलता देने वाली कही गई है।

मन्त्र को सिद्ध करने के पश्चात्—

रं सर्वलोक वश मानय स्वाहा।

इस मन्त्र से जप एवं पूर्वोक्त मन्त्र द्वारा पूजा कर साध्य व्यक्ति को वशीभूत किया जा सकता है।

सर्वजन वशीकरण मन्त्र

ॐ नमः कामय सर्वजन प्रियाय सर्वजन सम्मोहनाय ज्वल ज्वल प्रज्वलाय प्रज्वलाय सर्व जनस्य हृदय ममं वशं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि—दस हजार की संख्या में जप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। जब मन्त्र सिद्ध हो जाये, उसके बाद आवश्यकता के समय जिस व्यक्ति को वशीभूत करना हो उसका

स्मरण करते हुए इस मन्त्र का १०८ बार जप करे तो साध्य व्यक्ति साधक के वशीभूत हो जाता है।

सर्वजन वशीकरण मन्त्र

ॐ नमो भगवते उड्डा महेश्वराय मोहय मोहय मिलि ठः ठः स्वाहा।

विधि—यह मन्त्र ११००० की संख्या में जप करने से सिद्ध होता है जब मन्त्र सिद्ध हो जाए तब ऊपर बताए मन्त्र में से किसी भी नीचे बताये गए प्रयोग को अभिमन्त्रित करके प्रयोग में लावें।

प्रयोग-१

गोरोचन, वंशलोचन, चन्दन, केशर, काकजंघा की जड़ और मछली का पित्त इन सबको लेकर किसी कुंवारी कन्या के हाथ से बावड़ी के पानी में घिसवाये। फिर उसलेप को पूर्वोक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर अपने मस्तक पर तिलक लगाकर साध्य व्यक्ति के पास पहुंचे तो वह देखते ही वशीभूत होगा।

प्रयोग-२

नींबू तथा बेलपत्र को बकरी के दूध में पीसकर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करे। तत्पश्चात् उस लेप को अपने

मस्तक पर तिलक लगाकर साध्य व्यक्ति के सामने जाये, तो वह देखते ही वशीभूत हो जाएगा।

सर्वजन वशीकरण मन्त्र

ॐ नमो भूतनाथ समस्त भुवन भूतान साध्य हुँ।

यह मन्त्र एक लाख की संख्या में जपने से सिद्ध होता है। जब यह मन्त्र सिद्ध हो जाये, तब आवश्यकता के समय इस मन्त्र का १०८ बार जप करके भगवान भूतनाथ का स्मरण करे तथा साध्य व्यक्ति के सम्मुख जा पहुंचे तो वह देखते ही वशीभूत हो।

सर्वजन वशीकरण मन्त्र

ॐ नमो नारायण सर्वलोकान मम वश कुरु कुरु स्वाहा।

विधि—इस मन्त्र का एक लाख जप करने से सिद्ध होता है। जब मन्त्र सिद्ध हो जाए तब आवश्यकता के समय निम्नलिखित प्रयोगों में से किसी एक प्रयोग की वस्तुओं को १०८ बार इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके अपनी मनोभिलाषा पूर्ण करनी चाहिये।

प्रयोग-1

पुष्प नक्षत्र में पुनर्नवा की जड़ को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित

कर अपने दाएं हाथ में बांधकर जिस अभिलाषित व्यक्ति के सामने जाए वह देखते ही वशीभूत हो।

प्रयोग-२

सरसों और झारबेर को पीसकर गोली बनाये फिर उस गोली को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर अपने मुंह में रखकर जिस साध्य व्यक्ति से वार्तालाप करे वह साधक के वशीभूत हो।

प्रयोग-3

बरगद के वृक्ष की जड़ को पानी में घिसकर उसमें भस्म मिलाये। फिर उसे पूर्वोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करे और उसका अपने मस्तक पर तिलक लगाकर साधक जिस स्त्री के पास पहुंचे वह देखते ही वशीभूत हो।

प्रयोग-४

सफेद द्रव्य को कपिला गाय के दूध में पीसकर उक्त मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करे फिर उसका अपने शरीर पर लेप करके अभिलाषित व्यक्ति के सामने जाये तो वह देखते ही वशीभूत हो।

प्रयोग-५

आंवले के रस में मेनसिल तथा असगंध को पीसकर उक्त

मन्त्र से अभिमन्त्रित करे। तत्पश्चात् उसका अपने मस्तक पर तिलक लगाकर जिस साध्य व्यक्ति के सामने पहुंचे तो वह देखते ही वशीभूत हो।

प्रयोग-६

अपामार्ग (ओगा) के बीजों को बकरी के दूध में पीसकर पूर्वोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करे फिर उसका अपने मस्तक पर तिलक लगाकर जिस स्त्री के सामने जाये वह देखते ही वशीभूत हो।

प्रयोग-७

बेलपत्र तथा बिजौरा नींबू को बकरी के दूध में पीसकर उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके मस्तक पर तिलक लगाकर जिस व्यक्ति के सामने जाये वह देखते ही वशीभूत हो।

राजा वशीकरण मन्त्र

ॐ नमो भास्कराय त्रिलोकात्मने (अमुक) महीपति मे वश्य कुरु कुरु स्वाहा।

विधि—यह मन्त्र ११००० बार जपने से सिद्ध होता है। इस मन्त्र में जहाँ अमुक शब्द आया है वहाँ उस राजा के नाम का उच्चारण करना चाहिए (जिसे वशीभूत करना हो।)

जब मन्त्र सिद्ध हो जाये तब नीचे बताये प्रयोगों में से

किसी भी एक प्रयोग की वस्तुओं को १०८ बार अभिमन्त्रित कर अपना कार्य साधन करे।

प्रयोग-१

हरताल, कपूर, मैनसिल और असगन्ध को समभाग बकरी के दूध में पीसकर पूर्वोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करे, फिर उसको अपने मस्तक पर तिलक लगाकर राजा के सामने पहुंचे तो वह देखते ही वशीभूत हो।

प्रयोग-२

चन्दन, कपूर, कुंकुम और तुलसी इन सब वस्तुओं को समभाग लेकर गाय के दूध में पीसकर उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करे, फिर उसका अपने मस्तक पर तिलक लगाकर राजा के सामने जाए तो राजा देखते ही वशीभूत हो।

पति वशीकरण मन्त्र

ॐ नमो महापक्षिपेय पति मे वश्य कुरु कुरु स्वाहा।

विधि—यह मन्त्र एक लाख बार जपने से सिद्ध होता है। मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर निम्नलिखित प्रयोगों में से कोई भी प्रयोग काम में लें।

प्रयोग-१

अनार के पंचांग अर्थात् अनार के वृक्ष की जड़, पत्ते,

शाखा, फूल तथा सफेद सरसों को साथ पीसकर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर इस लेप को अपने गुप्त अंग पर लगा के पति के साथ रमण करने से पति वशीभूत हो जाता है।

प्रयोग-२

गोरोचन, केले का रस और अपने मासिक धर्म का रक्त तीनों एकत्र करके उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके अपने मस्तक पर तिलक लगाकर पति के सामने पहुंचे तो एसी स्त्री का पति उसे देखकर वशीभूत हो जाता है।

स्त्री वशीकरण मन्त्र

ॐ नमो भगवती मंगलेश्वरी सर्वसुखराजिती सर्वधर मातंगी कुमारी के लघु-लघु वश कुरु-कुरु स्वाहा।

विधि—यह मन्त्र एक सहस्र की संख्या में जपने से सिद्ध होता है। जब मन्त्र सिद्ध हो जाये तब निम्नलिखित प्रयोगों में से किसी एक को इस मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके साधन करना चाहिए।

प्रयोग-१

गोरोचन तथा सहदेई को पानी के साथ पीसकर उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करे फिर उस लेप का तिलक अपने माथे पर लगाकर साध्य स्त्री के पास जाये तो वह देखते ही पीछे चली आये।

प्रयोग-२

कृष्ण पक्ष की अष्टमी अथवा चतुर्दशी तिथि को दिन भर व्रत रखकर सहदेई को उखाड़ लायें फिर उस का चूर्ण कर उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करें। तत्पश्चात् जिस साध्य स्त्री का वह चूर्ण खिलाया जायेगा वही साधक के वशीभूत हो जाएगी।

यदि इस चूर्ण को साध्य स्त्री के मस्तक पर डाल दिया जाये तो भी वह साधक के वशीभूत होगी।

प्रयोग-3

सहदेई की जड़ को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके अपने मुंह में रख लें। फिर साध्य स्त्री के पास जाकर उससे वार्तालाप करे तो थोड़ी ही देर की बातचीत से वह स्त्री साधक के वशीभूत हो जायेगी।

देवाकर्षण मन्त्र

ॐ हंस्वहा ॐ तंस्वाहा (अमुक) देवाय ॐ ह्रीं क्लीं भैरवायः ॐ फट् फट् स्वाहा।

विधि—इस मन्त्र को शिवजी के मन्दिर में बैठकर १०८ बार नित्य ४१ दिन तक जपे। अमुक की जगह उस देवता का नाम उच्चारण करे जिसको बुलाना हो। इस प्रकार थोड़े ही दिन में वह देव जिसकी कि साधक आराधना कर रहा है वह देव

अपना पूरा-पूरा परिचय साधक को देगा।

रविवार के दिन काले धतूरे का पंचांग (फल, फूल, जड़, पत्ती, तना) लेकर उसमें कपूर, कुंकुम तथा गोरोचन मिलाकर तिलक लगा कर जिस भी स्त्री के पास जाये वही वश में हो।

पति वशीकरण मन्त्र

ॐ काम मालिनी ठः ठः स्वाहा।

विधि—इस मन्त्र को पहले १००८ बार जप करके सिद्ध कर ले फिर आवश्कयता के समय निम्न प्रकार प्रयोग करे। मछली के पित्ते में गोरोचन मिलाकर सात बार मन्त्र पढ़कर मस्तक पर लगाने से पति वश में हो जाता है।

पति वशीकरण महामन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं थिरिं ठः ठः अमुक वशं करोति।

विधि—इस मन्त्र को दस हजार बार जाप कर सिद्ध कर लें। आवश्यकता के समय शुक्ल पक्ष की पड़वा को गोरैया चिड़ियाका मांस लेकर २१ बार मन्त्र पढ़ थोड़ा सा मांस पान में पति को खिला दें तो पति वश में हो जाता है।

यन्त्र प्रयोग और टोटके

संकट हरण यन्त्र

ठं ठं ठं ठं ठं ठं ठं ठं ठं ठं ठं

कैसा भी संकट हो, अष्टगंध से भोजपत्र पर इस यन्त्र का लिखकर धूप, दीप तथा नैवेद्य देकर गले में बांध दें।

स्त्री वशीकरण तन्त्र

खस, चन्दन, शहद इन चीजों को एक में मिलाकर तिलक लगाकर जिस स्त्री के गले में हाथ डाले वह वश में हो जाएगी। यह तन्त्र सब प्रकार की नारियों के लिए है।

दूसरा तन्त्र

चिताकी भस्म, बच, कूट, केशर और गोरोचन इन सबको बराबर-बराबर लेकर एक में पीसकर चूर्ण बना करके जिस स्त्री के सिर पर यह चूर्ण डालें वह वश में हो जाएगी।

तीसरा तन्त्र

चिता की भस्म, कूट, तगर, बच और कुंकुम यह सब एक में पीसकर जिस स्त्री के सिर पर और मनुष्य के पाँव तले डाल दें। जब तक वह जीवित रहेंगे तब तक दोनों एक दूसरे के दास बने रहेंगे।

गई वस्तु लाने का यन्त्र

ह्लां	ह्लां	ह्लां	ह्लां
ह्लां	ह्लां	ह्लां	ह्लां
प्रां	प्रां	प्रां	प्रां
प्रीं	प्रीं	प्रीं	प्रीं

विधि—इस यन्त्र को २१ दिन में कही विधि मुताबिक सिद्ध करके इस तरह प्रयोग में लावे। कनेर वृक्ष की छाया में बैठकर यह यन्त्र एक लाख बार लिखें, तो गई वस्तु आ जावेगी।

प्रेत वशीकरण मन्त्र

ॐ साल सलीला मोसल बाई काग पठन्ता धाई आई

ॐ लं लं लं ठः ठः।

विधि—पहले इस मन्त को विधिवत १०००० बार जप कर सिद्ध करे और फ़िर वसन्त ऋतु में शनिवार की र्रात्रि को १२ बजे नग्न होकर बबूल के वृक्ष के नीचे आक (मदार) की लकड़ी जलाकर काले तिल और काले उड़द की आहुति दे और हवन करता रहे, यही मन्त्र पढ़-पढ़ कर हवन करे तो प्रेत सम्मुख आकर उससे बातें करेगा। उस समय खूब दृढ़ होकर रहें और अपने हाथ को काटकर खून की १०१ बूंदें वहीं पृथ्वी पर टपका देवें तो प्रेत वश में हो जाता है।

स्वामी वशीकरण मन्त्र

ॐ छं छुं छुं छां छां डः।

विधि—सोमावती अमावस्या के दिन खोदें हुए कुशों की आसनी (आसन) बनावे और फिर सूर्य ग्रहण के दिन नदी किनारे अंजनी वृक्ष के नीचे बैठकर इस मंत्र को जपे तो स्वामी वश में हो जाएगा।

मन्त्र जपने की माला गन्धोली के फल की गुठली की होनी चाहिए तभी इस मंत्र से लाभ होगा।

वर्षा स्तम्भन यन्त्र

विधि—पहले विधि पूर्वक इस यन्त्र को दीपावली की रात में सिद्ध कर लें। फिर इस यन्त्र को केसर और हल्दी से कागज पर लिखकर दिखाने से वर्षा होनी बंद हो जाती है।

वर्षा स्तम्भन यन्त्र			
३०५		१	३४७
७	३१	४१	४
३	३४०	१६	६
३४६	९	२	३४४

पति वशीकरण यन्त्र		
६	७	२
१	५	७
८	३	४

विधि—कदाचित आपका पति आपसे रुष्ट होकर आपके प्रेम की उपेक्षा करने लगा है तो आप इस यन्त्र को केशर से भोजपत्र पर लिखकर धूप में तथा ताँबे अथवा चाँदी के यंत्र में भरकर गले अथवा बाँह में धारण करें। आपका निष्ठुर पति यन्त्र

के प्रभाव से प्रभावित हो आपको पूर्व की भाँति चाहने लगेगा और फिर कभी किसी स्त्री की ओर आकर्षित न होगा।

प्रेमिका वशीकरण यन्त्र

४	२४	२२	२९	१०
१८	१५	२७	११	२०
२५	२१	१२	१६	१९
१३	२३	२६	२८	१७

विधि—यदि आप किसी अविवाहित रूपवती स्त्री से प्रेम करते हैं परन्तु वह रमणी आपके लाख प्रयत्न करने पर भी आपकी ओर आकर्षित नहीं होती और आप उसके प्रेम से व्याकुल तथा निराश हो चुके हैं तो आप ऊपर दर्शाया यन्त्र का प्रयोग करें। ईश्वर चाहेगा तो आपको सफलता अवश्य मिलेगी और वह रूप गर्विता तरुणी आपके चरण चुम्बन करेगी।

सर्वार्थ सिद्धि यंत्र

विधि—रविवार के दिन गोरोचन से भोजपत्र पर इस यंत्र को लिखे और उसे यंत्र में भरकर दाहिनी भुजा पर बाँधना

चाहिए।

ओं	ओं	ओं	ओं	ओं
ओं	ओं	ओं	ओं	ओं
ओं	ओं	ओं	ओं	ओं
ओं	ओं	ओं	ओं	ओं
ओं	ओं	ओं	ओं	ओं

आधा शीशी का यंत्र

४२	४६	३	६
४	१४	४	४
७	२	४६	३८
१	८	४०	४५

विधि—इस यंत्र को मंगल या रविवार को कागज पर लिख कर धूप दीप दे करके सिर में बांधें तो आधा शीशी का दर्द दूर होगा।

दस्तों व उल्टी पर तन्त्र

बच्चों को उल्टी व दस्त बेहिसाब लगती हो तो रविवार को बच्चे के सिर पर गेहूं का आटा सात बार उतारे व एक पानी का लोटा भी ७ बार उतारें। घर के बाहर कहीं भी कैसी भी हड्डी पड़ी हो उसके ऊपर वह आटा डालकर, लोटे के पानी से हड्डी के चारों ओर काट कर निकाल दें। अगर इससे भी फर्क न पड़े तो दिन में तीन बार यह क्रिया करें, तो बहुत जल्दी व तुरन्त फायदा होगा।

वीर्य स्तम्भन तन्त्र

१. सोमवार को सांयकाल के समय लाल अपामार्ग (लटजीरा) की जड़ को न्यौता दे आयें और मंगलवार को प्रातः उखाड़ कर लावें और उसे कमर में बाँध मैथुन करें तो वीर्य स्तम्भन होता है।
२. घुग्घू नामक पक्षी की जीभ (जुबान) को एक रत्ती भर गोरोचन के साथ पीसकर ताँबे के ताबीज में भर मुख में रख कर स्त्री प्रसंग करने वीर्य स्तम्भन होता है।
३. इमली के चियां दो दिन जल में भिगो कर छिलका उतार दें

और बराबर का पुराना गुड़ मिला गोली बना कर दूध में गोली खाने से वीर्य स्तम्भन होता है।

४. श्याम क्रौच की जड़ मुख में रख कर स्त्री प्रसंग करने से वीर्य स्तम्भन होता है।

५. शनिवार के दिन आक के वृक्ष को निमंत्रण दे तथा रविवार को उसके फल तोड़ लावे और उस फल की रूई निकालकर बत्ती बनाकर दीप जलावे तो जब तक दीप जलता रहेगा वीर्य स्तम्भन होगा।

यात्रा स्तम्भन यन्त्र
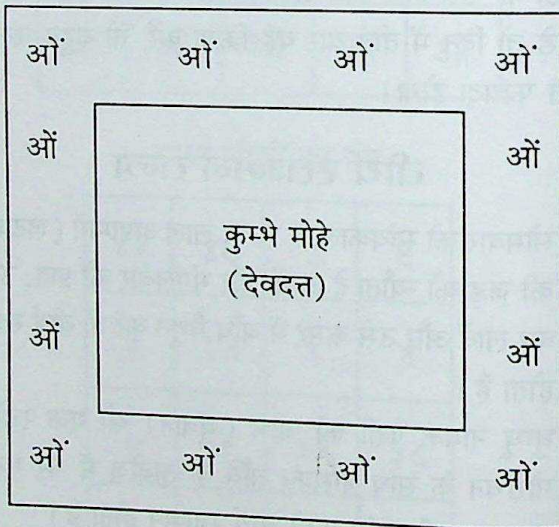
इस यन्त्र को पत्थर के एक टुकड़े पर कुमकुम, हरताल,

मैनसिल और गोरोचन से लिखकर फलों से पूजा करे और धूप दीप, नैवेध चढ़ाकर उस पत्थर पर लिखें, यन्त्र को बराबर की भूमि में खोदकर गाड़ दें तो उसकी यात्रा बंद हो जाएगी— (देवदत्त) के स्थान पर नाम लिखें।

शत्रु प्राण हरण यन्त्र

इस यन्त्र को भी अपने से प्रबल शत्रु को मारने के लिए प्रयोग करना चाहिए। इस यन्त्र के प्रभाव से कैसा ही शक्तिशाली
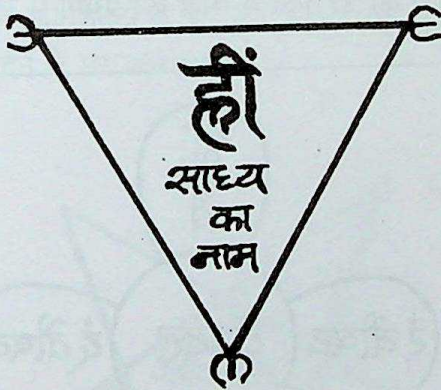
शत्रु क्यों न होवे अचानक ही मृत्यु का ग्रास बन जायेगा। इसमें थोड़ा सा भी सन्देह नहीं है। यन्त्र निर्माण की विधि यह यह है कि विष और हरताल को एकत्रित करके कौआ के पंख की लेखनी से प्रस्तुत यन्त्र बनाकर विधान पूर्वक पूजन करके नरनलिका में रख श्मशान में गाड़ देने से शत्रु अचानक ही मृत्यु

को प्राप्त होगा।

शत्रु उच्चाटन यन्त्र

नीम के पत्तों के रस से भोजपत्र पर कौआ के पंख की लेखनी से प्रस्तुत यन्त्र बनाकर विधान पूर्वक पूजा करके भूमि में गड्ढा खोद नीचे की ओर मुंह करके गाड़ दें तो शत्रु संसार में कहीं भी जाये तो उसका मन नहीं लगेगा और वह ऐसी स्थिति में अवश्य ही परलोकगामी हो जाएगा।

इस यन्त्र को ४१ दिन में सिद्ध कर प्रयोग में लावें।
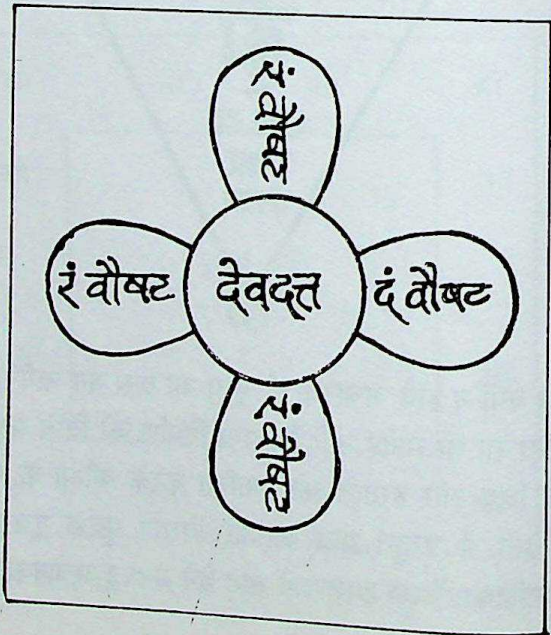
नर-नारी मारण यन्त्र

इस यन्त्र को ४१ दिन कही विधि के अनुसार सिद्ध करके प्रयोग में लायें। यह यन्त्र नर अथवा नारी दोनों में जो भी आपका शत्रु होवे प्रयोग करने से सात दिवस में अवश्य मृत्यु को प्राप्त होगा इस यन्त्र को मासिक धर्म के रक्त में श्मशान की राख मिला के विभीतक के पत्र पर कौआ के पंख की लेखनी बनाकर यन्त्र लिखो। फिर यन्त्र नरनलिका में बंद कर शत्रु के पैर के नीचे की मिट्टी से पूर्ण कर श्मशान भूमि में गाड़ देवे तो शत्रु २१ दिन में मर जायेगा।
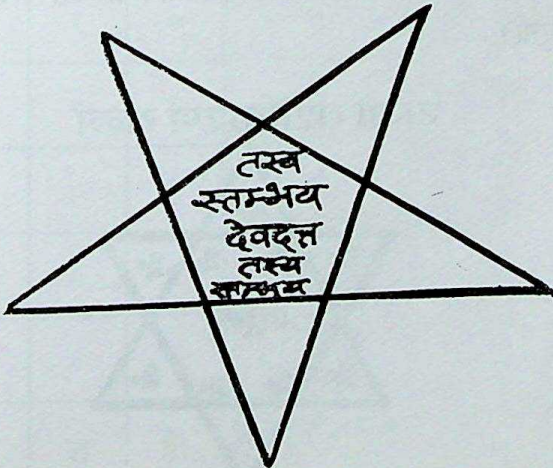
अग्नि स्तम्भन यन्त्र

इस यन्त्र को दीपावली की रात्रि को सिद्ध कर लें और फिर केशर की स्याही से भोजपत्र पर लिखकर पूजन करके ब्राह्मण को भोजन करावे फिर उस यन्त्र को पृथ्वी में गाड़ दें और उस पर पानी की धार छोड़ते जावें तो अग्नि ठंडी हो जाएगी।

राजा वशीकरण यन्त्र

इस यन्त्र को कुंकुम, गोरोचन और कपूर की स्याही बना कर चमेली की कलम से भोजपत्र पर लिखकर उसको धूप, दीप देकर अपनी चोटी में बाँधकर, राजा के पास जाने से वह राजा वशीभूत हो जाएगा।

वन्ध्या दोष निवारण यन्त्र

इस यन्त्र को ४१ दिन में सिद्ध करके भोजपत्र पर अष्टगंध से लिखकर राम मंत्र में अभिमंत्रित कर वन्ध्या के गले में डाले तो वह एक वर्ष के बीच भीतर गर्भवती हो।

ओं	र	रा	म	स्वा	हा	नाम
ह	१	०	५	७	रा	
न्द्र	०	९	१	८	म	
प	०	९	७	९	च	
श	०	९	७	९	न्द्र	
कृ	०	१	५	४	र	स्त्री का
क	ल	ति	ल	कु	धु	

सर्वोपरि यन्त्र 1

ओं भूः	ओं भुवः	ओं स्वः
ओं महः	ओं जनः	ओं तपः
	ओं सत्यः	

विधि—प्रातःकाल इस यन्त्र को भोजपत्र पर केशर की स्याही से लिखे, धूप, दीप देकर चाँदी में मढ़वाकर गले में बाँधे तो सर्व कार्य सिद्ध हो।

यन्त्र २

राम	राम	राम
राम	रामाय नमः	राम
राम	राम	राम

विधि—इस यन्त्र को ताम्रकी तष्टी में, नित्य सन्ध्योपासनोपरान्त चन्दन से अनार की लेखनी द्वारा लिख,

धूप, दीप, पुष्पादि से पूजा करने से सभी कार्य सिद्ध होते हैं।

यन्त्र 3

कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण
कृष्ण	कृष्णाय नमः	कृष्ण
कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण

विधि—इस यन्त्र की विधि उपरोक्त ही है।

गर्भपात न हो

यन्त्र

ओं	ओं	ओं	ओं
ओं	ओं	ओं	ओं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

जिस दिन रविवार भी हो और मूल नक्षत्र भी हो, उस दिन इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर गर्भवती स्त्री की बाँई भुजा पर बाँध दिया जाए तो स्त्री का गर्भ स्थिर रहेगा यह यन्त्र स्त्रियों के लिए लाभप्रद है जिनका गर्भ बार-बार गिर जाता है इस यन्त्र को २१ दिन में सिद्ध कर प्रयोग में लावें।

आकर्षण यन्त्र

गोरोचन की स्याही से, इस यन्त्र को, भोजपत्र पर लिखकर घी में डुबो दीजिए। शुद्ध देशी घी में डुबोइयेगा वैजीटेबल
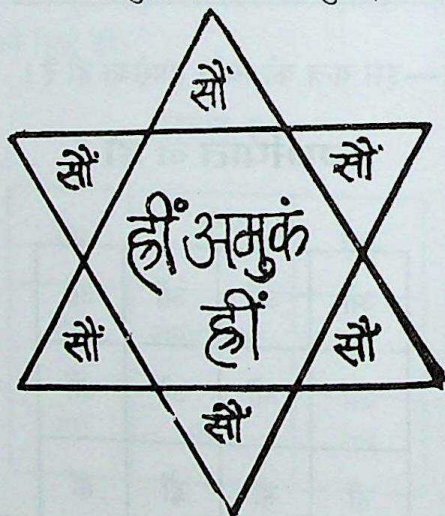
आयल में नहीं। बाद में इसे घी में से निकालकर धूप, दीप नैवेद्य आदि से इसका पूजन कीजिए और यह पूजन नित्य करते रहिए जब तक कि वह आदमी जिसको कि आपने आकृष्ट

करना है आपके पास पहुंच न जाए।

नित्य प्रति पूजन के पश्चात आपको भगवान सदाशिव की निम्नलिखित प्रार्थना भी करनी चाहिए।

मन्त्र—आकर्षण महादेवदत्त मम प्रिये। कोत्रिपुरे देव देवेश तुभ्यं दास्यामि कदाचित॥

आकर्षण यन्त्र

विधि—इस मन्त्र को जैतून की कलम से भोजपत्र पर लिख कर यदि प्रतिदिन इसका पूजन किया जाए तो जिस व्यक्ति को आकृष्ट करना हो तो वह शीघ्र आ मिलता है।

क्रीं	क्रं	क्रां
आ	१२	य
कां	या	कों

टिप्पणी—अमुक के स्थान पर उस व्यक्ति का नाम लिखियेगा जिसको कि आपने अपनी ओर आकृष्ट करना है।

बवासीर ठीक होने का यन्त्र

इस यन्त्र को अष्टधातु के पत्र पर खुदवा कर दाहिनी भुजा

पर बाँधने से दोनों प्रकार की बवासीर दूर होती है।
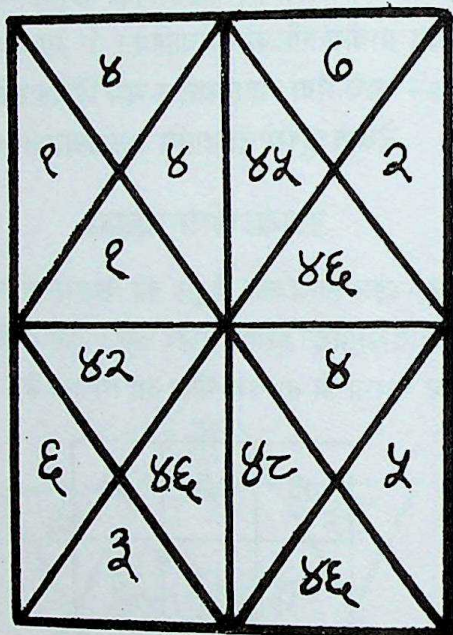
प्रसव पीड़ा पर टोटका

प्रसव पीड़ा से पीड़ित महिला की कमर में नीम की जड़ अथवा सांप की कैंचुली बाँधने से तुरन्त पीड़ा से राहत होती है और सुगम प्रसव भी हो जाता है। लाल कपड़े में थोड़ा सा नमक रखकर गर्भिणी के बाँये हाथ में बाँधने से भी आराम मिलता है।

सन्तान दाता यन्त्र
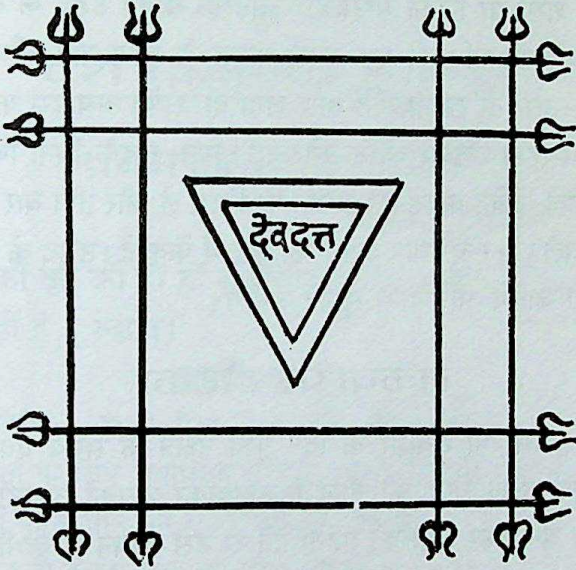
यह उन निराश व्यक्तियों के लिए संजीवन के समान है जिनके अनेक प्रयत्न करने पर भी पुत्र या पुत्री की प्राप्ति का सौभाग्य नहीं प्राप्त हुआ इस यन्त्र को शुभ मुर्हूत में गोरोचन, कुंकुम, कपूर तथा कस्तूरी के संयोग से चमेली कीलखनी द्वारा भोजपत्र पर निर्माण करके पूजन करके त्रिलोह के ताबीज में बन्द करके कण्ठ में धारण करने से सन्तान की प्राप्ति होती है।

यन्त्र में देवदत्त की जगह स्त्री का नाम लिखें।

मस्सों पर टोटका

शरीर पर जितने मस्से हों, उतने ही साबुत उड़द के दाने, रविवार की रात्रि को एक काले कपड़े के बीच गाँठ बाँधकर इधर-उधर दो खाली गाँठें और लगा दी जायें। अब इस कपड़े को सिरहाने रखकर व्यक्ति सो जावे। प्रातः तड़के बिना किसी से बोले, टोके, कपड़े को जमीन पर बिछा ले और तीन बार उस पर चले। फिर चुपचाप कपड़े को कुएं में फेंक दे। उड़द के दाने सड़ते जायेंगे और मस्से सूखते जायेंगे।

लकवा पर टोटका

किसी भी रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र के समय एकदम सम्पूर्ण काले घोड़े की नाल निकलवाकर उसकी अंगूठी या कड़ा बनवाकर रोगी को पहना देने से उसे जीवन में कभी भी लकवे (पक्षाघात) का प्रकोप पुनः न होगा। यदि लकवा होने के आसार दिखलाई पड़ जायें तो पहले से ही कथित वस्तु पहना देने से लकवा से बचाव हो जाता है।

सिद्धिदात्री
दश महाविद्या साधना

प्रथम महाविद्या काली

मन्त्र

क्रीं क्रीं क्रीं ह्रौं ह्रीं हूं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्वाहा।

काली ध्यानम्—

विधि—काली मन्त्र किसी भी प्रकार की सिद्धि और सफलता के लिए सर्वाधिक उपयुक्त और सफल है। काली का मन्त्र में पहले तीन बार काली बीज है। फिर दो बार लज्जा बीज है। फिर दो हुंकार शब्द का उच्चारणकरे। फिर तीन बार काली बीज और दो बार लज्जा बीज तथा दो बार हुंकार शब्द का उच्चारण करने से काली मन्त्र सिद्ध होगा।

काली यन्त्र के मध्य में ५ बिन्दु, ५ उल्टे त्रिकोण, ३ वृत्त, अष्टदल, वृत्त एवं एक भूपूर से आवृत्त करके महाकाली का यन्त्र तैयार किया जाता है। स्तम्भन, आकर्षण, उच्चाटन, विद्वेषण व मारण प्रयोगों में काली उपासना का सर्वाधिक महत्व है। इस यन्त्र को पूजा के लिए धातु पर या भोजपत्र पर शुभ मुहूर्त में बनाकर प्रतिष्ठा कर ले तथा प्रतिदिन इसके मूल मन्त्र की १०१

आहुतियाँ करने पर महाकाली शीघ्र प्रसन्न होती है।

काली यन्त्र
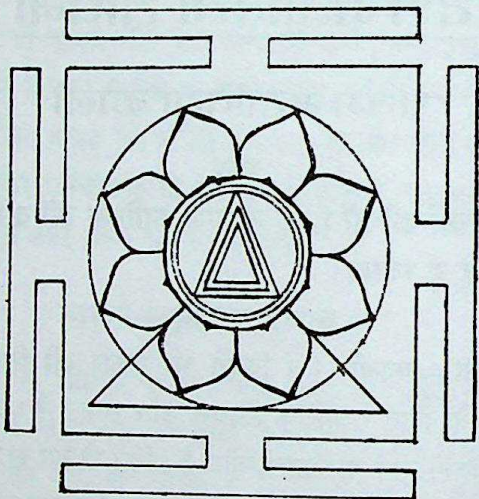
शवारूढ़ाम्महाभीमाँ घोरदंष्ट्रां हसन्मुखीम्।
चतुर्भुजाचण्डमुण्डवराभयकरां शिवाम्॥ १॥
मुण्डमालाधरांदेवीं ललज्जिह्वान्जिगरद्रराम्।
एवं सचिन्तयेत्कालीं श्मशानालयवासिनीम्॥ २॥

इस मन्त्र को सवा लाख जप तथा दशांश आहुति (हवन) करने से काली सिद्धि देगी। मन्त्र जप ध्यान से ही करें।

————

द्वितीय महाविद्या तारा

मन्त्र

ऐं ॐ ह्रीं क्रीं हूं फट्।

विधि—तारा (कंकाल मालिनी) यह सिद्ध विद्या शत्रुओं का नाश करने के लिए और जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त करने के लिए उक्त मन्त्र का जप करें। तारा मन्त्र में सर्वप्रथम वाग्बीज का उच्चारण करके ॐ शब्द का उच्चारण करना, फिर लज्जा बीज और तारा बीज और हूं फट् का उच्चारण करना चाहिए।

तारा यन्त्र
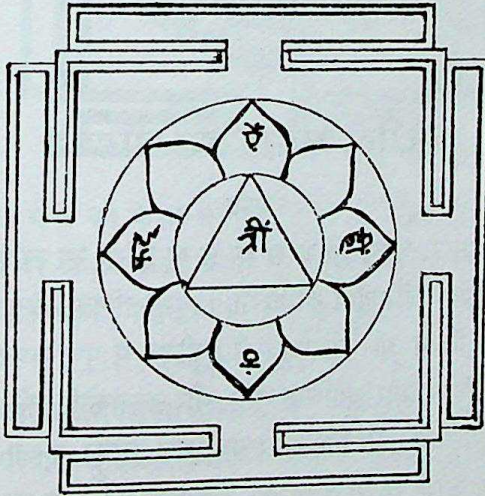
इस यन्त्र को केशर की लेखनी से लिखो। भोजपत्र या धातु

पर लिखे तो तारा सिद्धि देगी। इसकी साधना करने से वाक्क सिद्धि, मोक्ष, हर तरह से सुरक्षित रहती है। इन्हें नील—सरस्वती, उग्र तारा आदि भी कहते हैं। यह शीघ्र ही प्रसन्न हो जाती है।

तारा ध्यानम्—

प्रत्यालीढपदाप्पिताङ्घ्रिशवहृद्घोराट्टहासापरा ।
खड्गेन्दीवरकर्त्रिखर्प्परभुजा हुंकारबीजोद्भवा॥
खर्व्वा नीलविशालपिंगलजटाजूटैकनागैर्य्युता।
जाड्यन्न्यस्य कपालकर्त्तृजगतां हन्त्युग्रतारा स्वयम्॥

इस मन्त्र का एक लाख जप विधि विधान से करने पर तारा सिद्धि देगी।

————

तृतीय महाविद्या षोडशी

मन्त्र

ह्रीं क रा इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं।

विधि—षोडशी (श्री विद्या, त्रिपुरा ललिता, त्रिपुर सुंदरी) यह सिद्ध विद्या और मोक्षदात्री है। जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त करने के लिए और आर्थिक दृष्टि और उच्चकोटि की सफलता के लिए मन्त्र की साधना करें। सर्वप्रथम इसका लज्जा बीज का उच्चारण करके क रा इ ल का उच्चारण करे फिर लज्जा बीज बोलकर ह स क ह ल शब्द का उच्चारण करे फिर लज्जा

सम्पुट देकर सोलह अक्षरों का षोडशी मन्त्र का जप करे तो सिद्धि मिलेगी।

षोडशी यन्त्र
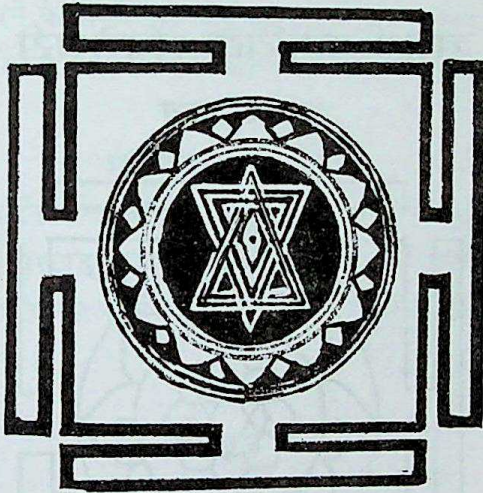
इस यन्त्र को केशर की कलम से ही लिखें। इस यन्त्र को भोजपत्र पर अष्टगंध की स्याही से लिखें। साधना के समय यह यन्त्र अपने सामने रखकर जप करे तो शीघ्र सिद्धि मिलेगी।

षोडशी ध्यानम्—

बालार्क्कमण्डलाभासां चतुर्व्वाहुन्त्रिलोचनाम्।
पाषाङ्कुशशरांश्चापन्धारयन्ती शिवाम्भजे॥

इस मन्त्र का सवा लाख जप विधि विधान से करने पर षोडशी सिद्धि देगी। षोडशी यन्त्र बनाकर उसकी षोडशोपचार

पूजा करने से यन्त्र उद्धार हो जाता है।

चतुर्थ महाविद्या भुवनेश्वरी

भुवनेश्वरी यन्त्र
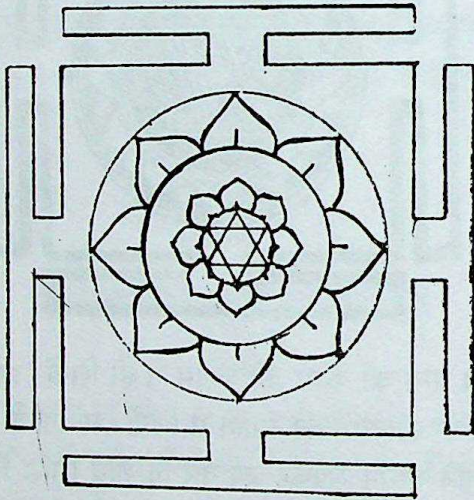
मन्त्र

ऐं ह्रीं श्रीं

विधि—भुवनेश्वरी (राजराजेश्वरी) की साधना करने से विद्या प्राप्ति, वशीकरण, सम्मोहन आदि कार्यों की सिद्धि के

लिए इस महाविद्या का प्रयोग करें। इसके इस मूल मन्त्र का जप करके अपने में वशीकरण की ताकत पैदा करें।

इसका यन्त्र भी पीछे कही विधि के अनुसार लिखें और साधना करने के समय इस यन्त्र को अपने पास रखकर साधना करने से सिद्धि मिलेगी। इस महाविद्या को गोपाल सुन्दरी भी कहते हैं।

भुवनेश्वरी ध्यानम्—

उद्यद्दिनद्युतिमिन्दुकिरीटान्तङ्गकुचान्नयनत्रययुक्ताम्।
स्मेरमुखीं वरदाङ्कुशपाशारभीतिकराम्प्रभजेभुवनेशीम्॥

इस मन्त्र का सवा लाख जप करने से भुवनेश्वरी सिद्धि प्रदान करेगी।

पंचम महाविद्या छिन्नमस्ता

मन्त्र

श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं ब ज्र वै रो च नी ये हूं हूं फट् स्वाहा।

विधि—छिन्नमस्ता (छिन्ना, छिन्नमस्तिका) की साधना करने से मोक्ष विद्या प्राप्ति होती है और धन-प्राप्ति, विद्या-प्राप्ति, शत्रु नाश, शत्रु पर विजय पाने के लिये मुकदमा में विजय तथा

सभी सिद्धियों को प्राप्त करने के लिए छिन्नमस्ता की साधना करें। छिन्नमस्ता मन्त्रोद्धार—सवप्रर्थम लक्ष्मी बीज, फिर लज्जा बीज का उच्चारण करना चाहिए इस प्रकार १०८ बार करने से छिन्नमस्ता मन्त्रोद्धार हो जाता है।

छिन्नमस्ता यन्त्र
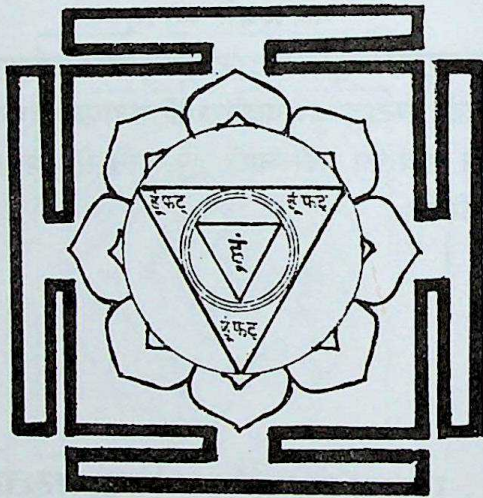
इस मन्त्र की जो साधक आधी रात के समय नियम से साधना करे उसको विद्या और वाक् सिद्धि स्तम्भन, सिद्धि हो जाती है इस मन्त्र का सवा लाख जप पूरा करने से यह सिद्धि प्राप्त हो जाती है।

छिन्नमस्ता ध्यानम्—

प्रत्यालीढपदां सदैव दधतीन्छिन्नं शिरः कर्तृका-
न्दिग्वस्त्रां स्वकबन्धशोणितसुधाधाराम्पिबन्तीन्मुदा।
नागाबद्धशिरोमणिन्त्रिनयनां हृद्युत्पलालङ्कृताम्।
रत्यासक्तमनोभवोपरिदृढ़ान्ध्यायेन्जवासन्निभाम्॥
दक्षे चातिसिताविमुक्तचिकुराकत्रर्न्तिथा खप्परं-
हस्ताभ्यान्दधती रजोगुणभवा नाम्नापि सा वर्णिनी।
देव्याश्छिन्नकबन्धत पतदसृग्धाराम्पियन्ती मुदा।
नागाबद्धशिरोमणिर्म्मुतुविदा ध्येया सदा सा सुरैः॥

छिन्नमस्ता का यन्त्र केशर की कलम से भोजपत्र पर लिखे और जप करते समय पास रख कर ही सादाक साधना करे तो सिद्धि मिलेगी।

————

षष्टम महाविद्या त्रिपुर भैरवी

मन्त्र

ॐ हं सें ह स क रां ह से।

विधि—त्रिपुर भैरवी (भैरवी सिद्धि भैरवी) की साधना करने रोग शान्ति, आर्थिक उन्नति, ऐश्वर्य प्राप्ति, त्रैलोक्य विजय के लिए त्रिपुर भैरवी का प्रयोग करे। सर्वप्रथम मन्त्र में ॐ शब्द बोलकर हंसकरी और मूल मन्त्र का उच्चारण करने से मन्त्रोद्धार हो जाता है।

त्रिपुर भैरवी यन्त्र
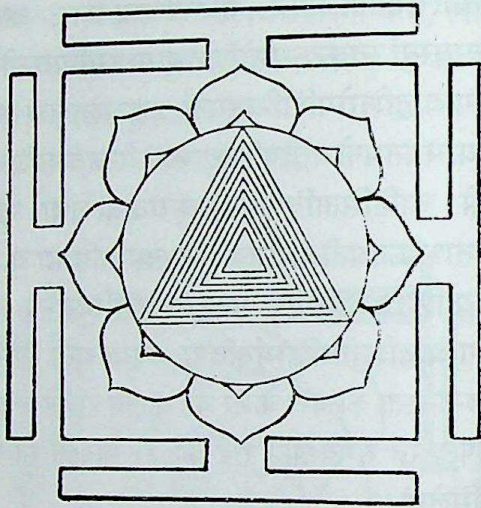
त्रिपुर भैरवी का यन्त्र बनाकर इसको धारण करने से रोग, दुःखों का नाश होता है। इस यन्त्र को केशर की कलम से लिखें, अष्टगंध की स्याही का प्रयोग करें।

त्रिपुर भैरवी ध्यानम्—

उद्यद्भानुसहस्त्रकान्तिभरुणक्षौमां शिरोमालिकाम्।
रक्तलिप्तपयोधराँजपपटीं व्विद्यामभीर्तिं व्वराम्॥
हस्ताब्जैर्द्दधतीन्त्रिनेत्रविलसद्वक्त्रारविन्दश्रियम्।
देवीम्बद्धहिमांशुरत्नमुकुटां वन्दे समन्दस्मिताम्॥

इस मन्त्र का सवा लाख जप करने से सिद्धि मिलेगी इस मन्त्र का नित्य जाप करने से ही आपको सिद्धि मिलेगी।

साधक इस मन्त्र की साधना के समय यन्त्र को पास रख कर ही साधना करे।

— — —

सप्तम महाविद्या धूमावती

मन्त्र

धूं दूं धूं धू मा व ती ठः ठः।

विधि—धूमावती (लक्ष्मी) की साधना करने से पुत्र लाभ, धन रक्षा और शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने के लिए इस मंत्र का
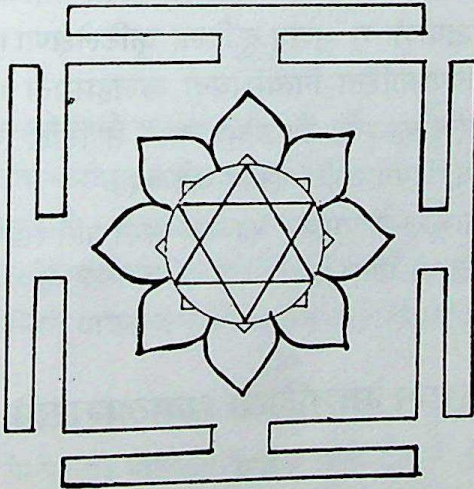
धूमावती यन्त्र

साधना लाभदायक है। इस मंत्र का १०८ बार जप करने से मन्त्रोद्धार हो जाता है।

धूमावती का यन्त्र चन्दन की कलम से अष्टगंध से लिखे तो इसको धारण करने से विजय प्राप्त होती हे तथा शत्रुओं का भय नहीं रहता।

धूमावती ध्यानम्—

विवण्णां चञ्चला दुष्टा दीर्ग्घा च मलिनाम्बरा।
विमुक्तकुन्तला रुक्षा विधवा विरलद्विजा॥
काकध्वजारथारूढ़ा विलम्बितपयोधरा।
शूर्प्पहस्तातिरूक्षाक्षा धूपहस्ता वरान्विता॥
प्रवृद्धघोणा तु भृशङ्.कुटिला कुटिलेक्षणा।
क्षुत्पिपासार्द्दिता नित्यम्भयदा कलहास्पदा॥

इस मन्त्र का सवा लाख जप करने से सिद्धि मिलेगी। ध्यान, विधि, नियम आदि मानकर जप करे।

साधन काल में धूमावती का यन्त्र अपने पास रखें। सिद्धि के बाद यन्त्र को धारण करें।

अष्टम महाविद्या बगलामुखी

मन्त्र

ॐ ह्रीं बगला मुखी सर्व्वदुष्टानां व्वाचम्मुखं स्तम्भय जिह्वाङ्कीलय कीलय बुद्धिन्निशाय ह्रीं ॐ स्वाहा।

विधि—बगलामुखी (वल्गामुखी, पीताम्बरा) के मन्त्र का अनुष्ठान अत्यन्त सावधानी से करना चाहिए नहीं तो विपरीत प्रभाव हो जाता है। इस मन्त्र को जप करने शत्रुओं पर विजय मिलती है और मुकदमों में हर तरह की सफलता मिलती है और अरर्थिक उन्नति के लिए इसका प्रयोग बहुत ही सफल है।

यन्त्र पूजन

बगलामुखी यन्त्र का पूजन हाथ में पीले चावल से एवं बगलायन्त्र के त्रिकोण के मध्य बिन्दु पर ध्यान एकत्रित करके यह मन्त्र पढ़ें—

मन्त्र

ॐ नमो नित्ये बगलामुखी एहि-एहि मण्डल मध्ये अवतर-अवतर सानिध्यं कुरु कुरु स्वाहा महापद्म वनान्तस्थे कारणानन्द विग्रहे। सर्व-भूत हिते मातरेहि परमेश्वरी। देवेशिभक्ति सुलभे परिवार समन्विते यावद्त्वं पूजयिप्यामि तावद्त्वं सास्थिरा भवः।

और हाथ में लिये चावल बगलामुखी के यन्त्र पर छोड़ दें ऐसा करने के पश्चात षोडशोपचार पूजन करें। तब बगला मुखी की मूर्ति अथवा यन्त्र को प्राणप्रतिष्ठा से पूजा करके ही बगला मुखी का आह्वान मुद्रा से हवन करें।

बगलामुखी यन्त्र
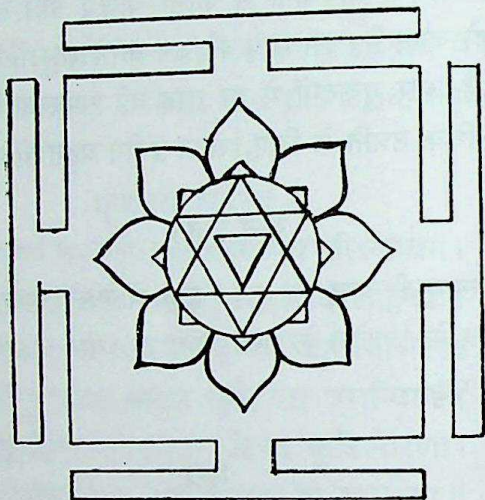
जप के समय यह धारण करे कि श्री बगलामुखी देवी मणि के आभूषणों से युक्त बगलादेवी बांये हाथ से गदा से शत्रु पर आक्रमण करने वाली है ऐसा ध्यान करके देवी को नमस्कार करे।

नमस्कार मन्त्र

"जिह्वाग्रमादाय करेण देवी व्वामेन शत्रुन्परिपीडयन्तीम्।
गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीतामबराढ्यान्द्विभुजान्नमामि॥

फिर मानसिक पूजा करके मूल मन्त्र का जप प्रारम्भ करे।

इस तरह बगलामुखी की साधना करने से परिपूर्णता प्राप्त होती है

बगलामुखी यन्त्र धारण करने वाले के शत्रु के सभी शत्रु प्रयोग निष्फल हो जाते हैं।

बगलामुखी ध्यानम्—

मध्ये सुधाब्धिमणिमण्डपरत्नवेदी
सिंहासनोपरिगताम्यरिपीतवर्णाम्।
पीताम्बराभरणमाल्यविभूषिताङ् गी
न्देवीन्नमामिघृतमुद्गरवैरिजिह्वाम्॥

————

नवम् महाविद्या मातंगी

मन्त्र

ॐ ह्रीं क्लीं हूं मातंग्यै फट् स्वाहा।

विधि—मातंगी (सुमुखी, उच्छिष्ट चाण्डालिनी) इसके मन्त्र के अनुष्ठान करने से, गृहस्थ जीवन में पूर्णता और विवाह के लिए, इस मन्त्र का प्रयोग लाभदायक है। इस मन्त्र को प्रणव, माया बीज और काम बीज लगाकर मातंगी मन्त्र का जप करके ही मन्त्रोच्चार करे। इस मन्त्र का जप करने से गृहस्थ सुख, जीवन में सफलता, हर सुख के लिए, विवाह के लिए तथा मनोकामना पूरी करने के लिए इस मन्त्र का प्रयोग करे।

मातंगी यन्त्र
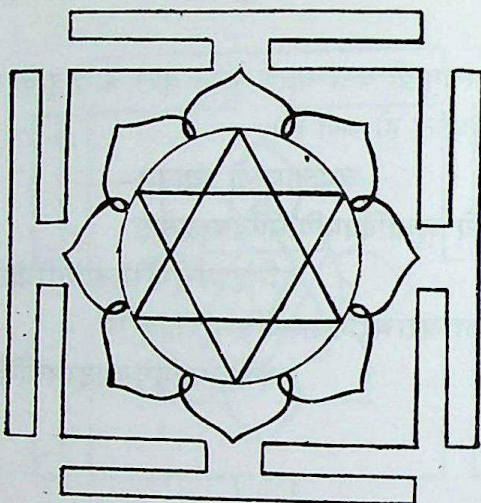
इसके मन्त्र तथा यन्त्र प्रयोग से भौतिक सुख तथा पुत्र की भी प्राप्ति होती है।

मातंगी ध्यानम्—

श्यामांगी शशिशेखरान्त्रिनयनां रत्नसिंहासनस्थिताम्।
वेदैर्ब्बाहुदण्डैरसि-खेटक-पाशांकुशधराम् ॥

मातंगी यन्त्र बनाकर इसकी पूजा पुष्पों तथा केशर आदि से करें। इस यन्त्र को केशर की कलम से अष्टगंध के द्वारा भोजपत्र पर लिखे और साधना के समय अपने पास रखे तो शीघ्र ही सफलता मिलती है। इस यन्त्र को धारण करने से ऊपर बताई गई कामना पूर्ण होती है।

———

दशम महाविद्या कमला

मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं हू सौः जगत्प्रसूत्यै नमः।

विधि—कमला (लक्ष्मी, नारायणी) इसके मन्त्र के अनुष्ठान करने से आर्थिक, भौतिक क्षेत्र में उच्चतम स्थिति करने के लिए दरिद्रता, व्यापार-उन्नति, लक्ष्मी के लिए इस मन्त्र का प्रयोग करे। यह मन्त्र शीघ्र श्रेष्ठ फल देता है।

कमला यन्त्र
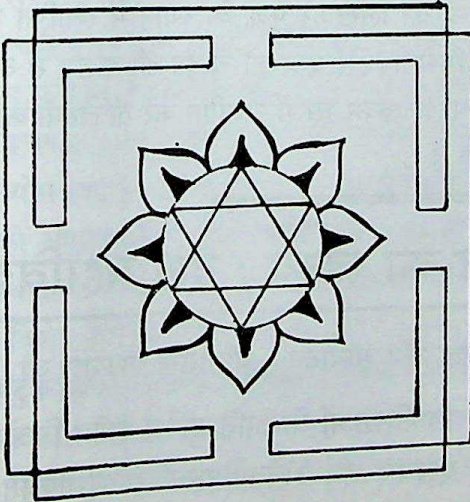
कमला मन्त्रोद्धार—इस मन्त्र को लिख कर वाग्बीज, लज्जाबीज, श्री बीज लिखकर ॐ शब्द लिखना चाहिए फिर

मूल मन्त्र फर श्री बीज, लज्जाबीज तथा वाग्बीज लिखने से मन्त्रोद्धार हो जाता है।

यन्त्र को उत्कीर्ण करके पूजा करने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

कमलात्मिका ध्यानम्—

कान्त्या कांचनसन्निभां हिमगिरिप्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैः।
हस्तोत्क्षिप्तहिरण्मयामृतघटैरासिच्यमानां श्रियम्॥
विभ्राणां व्वरमब्जयुग्मभयं हस्तै किरीटोज्ज्वलाम्।
क्षौमाबद्धनितम्बबिल्वसितां वन्देऽविन्दस्थिताम्। १।

इस यन्त्र को लिखकर पूजा के स्थान में स्थापित कर दें, तभी सिद्धि मिलेगी। इस यन्त्र को चन्दन की कलम से अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर घर में स्थापित करें तो लक्ष्मी का घर में निवास होता है।

श्री बटुक भैरव साधना

विधि—जहाँ पर श्री बटुक भैरव की सिद्धि के बारे में (शिवागमसार के अनुसार) जहाँ सभी देवता दीर्घकालिक उपासना के पश्चात प्रसन्न होते हैं। वहाँ बटुक भैरव तो उपासित होने पर शीघ्र प्रसन्न होते हैं और सब प्रकार की कामनाओं में तुरन्त सफलता देते हैं। परन्तु साधक को सर्वप्रथम वीर शांति करनी चाहिए क्योंकि वे श्री भैरवनाथ की आज्ञा से अपूजित रहने पर साधकों के मनोरथों को नष्ट करते रहते हैं। (१) चण्ड, (२) प्रचण्ड, (३) ऊर्ध्वकेश, (४) भीषण, (५) अभीषण, (६) व्योमकेश, (७) व्यामबाहु, (८) व्योमव्यापक नामक इन वीरों को आह्वानपूर्वक नैवेद्य समर्पण करने पर श्री बटुक भैरव की साधना में बाधा नहीं पड़ती, बटुक साधना में दीप दान का प्रयोग विशेष रूप से अभीष्ट रहता है।

बटुक साधना के लिए त्रिकोण, षटकोण, वृत्त और चतुष्कोण से यह यन्त्र बनता है। जिसके बीच में (श्रीं) बीज तथा आठों कोणों में अष्ट भैरवी के नाम तथा दक्षिणा वृत्त से मूल-मन्त्र लिखा जाता है। इस यन्त्र में प्राण प्रतिष्ठा करके (भैरव स्तोत्र) का पाठ करें तथा मूल मन्त्र के दस हजार जप कर हवन करें।

ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारण कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं ॐ स्वाहा।

इसके पश्चात मन्त्र के अक्षरों की संख्या 21 के अनुसार कच्चे सूत की बत्तियाँ बनाकर प्रज्ज्वलित कर, बलि अन्न उसमें डालकर, तालाब या बहती नदी में छोड़ने पर भैरवनाथ शीघ्र प्रसन्न होते हैं। दीपक बलिदान का यह मन्त्र है—

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रीं श्रीं वं सर्वत्राय महाबलपराक्रमाय बटुकाय इम दीपं गृहाम् सर्वकार्यार्थ साधकाय दुष्ट त्रासय-दुष्टा-त्रासय त्रासय-त्रासय, त्रासय-त्रासय सर्वतो मम रक्षां कुरु कुरु फट् स्वाहा।

श्री स्वर्णाकर्षण भैरव मन्त्र

ॐ ऐं क्लीं क्लीं क्लूं ह्रां ह्रीं ह्रूं सः वं आपदुद्धारणाय अजायलबद्धाय लोकेश्वराय स्वर्णाकर्षण भैरवाय मम दारिद्रय विद्वेषणाय ॐ ह्रीं महाभैरवाय नमः।

इस मन्त्र के दस हजार जाप व दशांश हवन करने से व्यक्ति के ऊपर किये गये कामण तथा दरिद्रता व ऋण का नाश होता है। व्यक्ति को सर्वविध सुख सम्पन्नता व स्वर्ण की प्राप्ति होती है। यह प्रयोग कृष्ण पक्ष की अष्टमी से चतुर्दशी पर्यन्त विशेष फलदायी रहता है तथा हवन में पायस, बिल्व समिधायें व कमलपुष्प अभीष्ट धन को देने वाले कहे गये हैं।

————

विभिन्न काली मन्त्र

दक्षिणा काली मन्त्र

ॐ क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं ह्रीं हीं हूं हूं स्वाहा।

विधि—यह मन्त्र शास्त्रों में शत्रुओं का संहार करने के लिये प्रयोग किया जाता है। इस मन्त्र का जप पूरी सावधानी के साथ करे तभी कार्य में सफलता मिलेगी। इस मन्त्र का विनियोग तथा ध्यान के साथ सवा लाख जप करें।

भद्रकाली मन्त्र

ॐ ह्रीं कालि महाकालि किलि किले फट् स्वाहा।

विधि—यह मन्त्र एक लाख जपने से सिद्ध होता है और इस प्रयोग से शत्रु संहार में साधक को पूर्ण सफलता मिलती है।

श्मशान काली मन्त्र

ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं कालिके ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं।

विधि—यह मन्त्र भी एक लाख जपने से सिद्ध होगा और फिर बाद में शत्रु संहार के काम आता है।

दक्षिण कालिका मन्त्र

क्रीं

विधि—यह दक्षिणा कालिका एकाक्षर मन्त्र है। इसकी पूजा से यह समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाला है।

दक्षिण कालिका का दूसरा मन्त्र

ह्रीं

विधि—यह दूसरा मन्त्र है जो एकाक्षर मन्त्र है। इस मन्त्र का अनुष्ठान करने से देवी साधक को सभी शस्त्रों का ज्ञान देती है।

भद्रकाली का दूसरा मन्त्र

क्री क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं भद्रकाल्यै क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।

विधि—यह मन्त्र बीस अक्षर का भद्रकाली का मन्त्र है इसका नियम आदि से जप कर मनोकामना पूरी करें।

सेवक वशीकरण यन्त्र
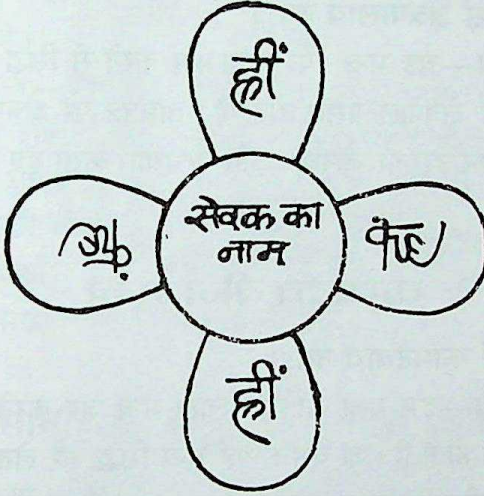
प्राय: देखा जाता है कि धनी पुरुष को अकेला जान कर सगे सम्बन्धी, नौकर, सेवक आदि उसे हर प्रकार से हानि पहुंचाने की चेष्टा करते हें। ऐसे समय में भगवान भूतनाथ द्वारा निर्मित यह पिशाच यन्त्र प्रयोग में लावे तो वह भ्रष्ट बुद्धि सेवकों आदि वश में होकर साधक की आज्ञानुसार ही कार्य करेंगे और साधक को किसी भी प्रकार की हानि न पहुंचा सकेंगे। यन्त्र धारण करने की विधि यह है कि भोजपत्र के ऊपर यह यन्त्र गोरोचन से लिखें। गन्ध पुष्पादि, दही से पूजा करके दही में अन्दर रख दे तो सेवक सदा वश में रहे।

क्षेत्रपाल मन्त्र

ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः।

विधि—यह मन्त्र एक लाख जप करने से सिद्ध होता है और इससे क्षेत्रपाल प्रसन्न होता है। ताम्रपत्र पर क्षेत्रपाल की मूर्ति बनाकर उस पर जलधारा और दुग्धधारा करते हुए मन्त्र का जप करें।

कामदेव बीज मन्त्र

क्लीं कामदेवाय नमः।

विधि—इस मन्त्र का तीन लाख मन्त्र जप करने से यह मन्त्र सिद्ध होता है। जो व्यक्ति यह मन्त्र सिद्ध कर लेता है वह स्वयं कामदेव के समान सुन्दर होकर प्रत्येक प्रकार की रमणी को आकर्षित एवं सन्तुष्ट कर सकता है।

❋ ❋ ❋ ❋

सुखी जीवन के लिए टोटके और मन्त्र

टोटके—नियमित और परम्परागत ऐसी क्रियाएं जिनके संतुलित, समयबद्ध और निरन्तर प्रयोग से जटिल समस्याओं का निराकरण एवं असम्भव कार्य को सरल तथा सम्भव बनाया जा सकता है।

मन्त्र—पूर्ण श्रद्धा और विश्वास से नियम पालन करने पर फलदाई होते हैं। इसमें बेतुकी क्रियाएं भी नहीं करनी पड़ती तथा सरलता से जाप करके उपयोग-प्रयोग कर सकते हैं।

सुखी जीवन के लिए—सामान्य जन-जीवन में प्रयोग करके जिन टोटकों और मन्त्रों से लाभ प्राप्त किया जा सकता है उनका जाँचा-परखा संकलन 'तांत्रिक बहल' की ओर से।

सामुद्रिक ज्ञान और पंचांगुली साधना

किसी भी व्यक्ति के रूप, रंग, मुख, नासिका, ललाट व शरीर पर जन्म से अंकित चिह्नों के द्वारा उसके भूत-भविष्य के बारे में बताया जा सकता है। हाथ की रेखों के साथ मनुष्य के शरीर के आकार-प्रकार पर भी ध्यान दें, तभी एक सामुद्रिक शास्त्री बना जा सकता है। पाँचों उंगलियाँ, हथेली, मणिबंध एवं शरीर लक्षण देखने के बाद ही भविष्य कथन करना उचित होगा। इसी तथ्य को विकसित रूप में बताया जा रहा है कि सामुद्रिक ज्ञान एक ऐसी मूक भाषा है जो प्रत्येक मनुष्य के शरीर पर लिखी होती है लेकिन इस शास्त्र के ज्ञाता ही इसे पढ़ सकते हैं। आप भी इस विषय का ज्ञानार्जन करें।

रणधीर बुक सेल्स (प्रकाशन) हरिद्वार

आचार्य चाणक्य विरचित तन्त्र-मन्त्र-यन्त्र

प्रस्तुत पुस्तक का नाम अवश्य ही चकित कर देने वाला है, क्योंकि आचार्य चाणक्य राजनीति एवं अर्थशास्त्र के प्रकाण्ड पंडित तो थे ही पर इसके साथ ही वह मन्त्र-तन्त्र के भी प्रबल ज्ञाता थे, यह बात बहुत ही कम लोग जानते हैं। चाणक्य विरचित मन्त्रों-तन्त्रों का यह अनुपम संग्रह प्रस्तुत करने का श्रेय 'तांत्रिक बहल' को जाता है। इस विषय की अतीव रुचि के कारण और तन्त्र सबके लिए उपलब्ध कराने का दृढ़ संकल्प लिए प्रस्तुतकर्ता ने वास्तव में एक खोजपूर्ण और साहस का कार्य किया है। आशा है इस दुर्लभ ग्रन्थ के प्रकाशन से पाठक लाभान्वित होंगे।

इसी पुस्तक के द्वितीय खण्ड—सरल तांत्रिक प्रयोग में लेखक ने सामान्य जीवन में काम आने वाले कुछ अनुभूत तन्त्र-मन्त्र भी दिए हैं।

तन्त्र-मन्त्र द्वारा रोग निवारण

जिस प्रकार एलोपेथिक, यूनानी, प्राकृतिक, होम्योपेथिक इत्यादि पद्धतियाँ हैं उसी प्रकार मंत्रोच्चारण, स्वर विज्ञान और कुछ विशिष्ट आकृतियों के आधार पर भी रोग निवारण की व्यवस्था है। इस विधि के भी अपने सिद्धान्त हैं जिनका उचित प्रयोग करके विभिन्न रोगों से पीड़ित व्यक्ति इस विद्या से लाभ उठा सकते हैं।

सुप्रसिद्ध तांत्रिक बहल ने इस प्रकार से साहित्य का अध्ययन करके और तरह-तरह के मनस्वियों से भेंट करके जो सामग्री कड़ी मेहनत से एकत्र की वह उन्होंने 'तन्त्र सबके लिए' लक्ष्य के अन्तर्गत बड़े पावन हृदय से प्रस्तुत की है।

रणधीर बुक सेल्स (प्रकाशन) हरिद्वार

सुगम तांत्रिक क्रियायें

दुकानदारी के तन्त्र-मन्त्र से साधारण जनता का विश्वास लगभग उठ गया है और प्रबुद्ध वर्ग भी इससे कतराने लगा है। यह सब कुछ ढोंग, पाखण्ड की श्रेणी में इसलिए आ गया है कि लोग आधी-अधूरी जानकारी, आधी सामग्री तथा बिना श्रद्धा और विश्वास के अपवित्रता से अपनी इच्छाओं की पूर्ति करना चाहते हैं। वास्तविकता तो यह है कि मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र का सही रूप ही पाठकों के सम्मुख नहीं रखा जा रहा है।

लेकिन प्रस्तुत पुस्तक के पृष्ठों में जीवन के प्रत्येक पहलू को तांत्रिक क्रियाओं के अन्तर्गत देखा समझा गया है और प्रत्येक कार्य सुगमता से सम्पन्न करने के लिए विभिन्न प्रयोग पूर्ण विधि-विधान से करने पर सफल होते हैं।

रत्न और रूद्राक्ष

प्रत्येक वस्तु वह चाहे निर्जीव हो अथवा सजीव, धातु हो, द्रव्य हो या गैस हो उसका मानव शरीर की रक्त संचार व्यवस्था पर प्रभाव पड़ता है। शरीर की रक्त संचार प्रणाली ही मनुष्य के क्रिया कलाप, विचार शक्ति और उसकी ऊर्जा को प्रभावित करती है। शरीर का नियन्त्रण और नियोजन करने वाले इसी वैज्ञानिक सिद्धान्त के कारण मनुष्य पर रूद्राक्ष और रत्नों का भी प्रभाव होता है। प्रत्येक मनुष्य की संरचना भिन्न-भिन्न होती है अतः उसी के अनुसार रत्नों और रूद्राक्ष का मेल बैठता है—इसी तालमेल की वैज्ञानिक विधि पर यह '**रत्न और रूद्राक्ष**' पुस्तक प्रस्तुत की जा रही है। प्रत्येक व्यक्ति इससे तदनुकूल लाभ उठा सकता है और अपना सम्पूर्ण जीवन सुखमय बना सकता है।

रणधीर बुक सेल्स (प्रकाशन) हरिद्वार

नाग और नागमणि

भारतीय धर्म के अनुसार यह पृथ्वी शेषनाग (सर्प की एक विशेष जाति) पर ही टिकी है। सृष्टि के पालक भगवान विष्णु सर्प शैय्या पर क्षीर सागर में सोते हैं। सर्प को भगवान शिव का प्रिय आभूषण माना गया है। सर्प एक देवता के रूप में हमारे धर्म में स्थापित है। नाग पंचमी के रूप में सर्प पूजा का एक उत्सव भी मनाया जाता है। संसार के लगभग सभी धर्मों में सर्प का उल्लेख है। भारत के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक भगवान महाकालेश्वर का मन्दिर भी है। इस ज्योतिर्लिंग के शीर्ष पर नाग चन्द्रेश्वर का मन्दिर भी है, जो वर्ष में केवल एक दिन खुलता है।

सर्पों की दुनियाँ चमत्कार से पूर्ण है। तन्त्र में भी इनका एक विशिष्ट स्थान है। सर्पों की रहस्यमय दुनियाँ पर आज के जाने-माने व्यावहारिक तांत्रिक एवं सिद्ध हस्त लेखक 'तांत्रिक बहल' की एक सारगर्भित रचना जो आप सबके लिए है।

पराविज्ञान की साधना और सिद्धियाँ

भूत-प्रेत का अस्तित्व, विवाद और व्यापक चर्चा का विषय है। यह न केवल मनोवैज्ञानिक रूप से होते हैं वरन् अनेकों घटनाएं इनके अस्तित्व का प्रमाण हैं। इनका एक आकार (स्वरूप) भी होता है जिनसे सम्पर्क का विधान पराविज्ञान में प्रचुरता से पाया जाता है। इनके उत्पातों को शान्त कर, इनको वशीभूत करके भरपूर लाभ भी उठाया जा सकता है और ये मानसिक साधना द्वारा होता है जिसकी साधना और सिद्धियों के उपाय इस पुस्तक में दिए गए हैं।

रणधीर बुक सेल्स (प्रकाशन) हरिद्वार

म

अवश्
विज्ञा
सूक्ष्म
जगाव
ग्रन्थों
साधन

को प
कर य
प्रस्तुत

तन्त्र वि
की घट
सकते
साधना
कर सव
उनसे
उपरोक्त
है और
प्रकार इ
में ऐसी
जिन्हें प

मृत आत्माओं से सम्पर्क और अलौकिक साधनाएँ

तन्त्र क्षेत्र में की जा रही व्यापक खोजों से हम आश्चर्य चकित अवश्य हो जाते हैं लेकिन वह अभूतपूर्व नहीं हैं। ज्योतिषीय और विज्ञान के ज्ञान से आकाश को नापा जाता है तो पदार्थ व तत्व की सूक्ष्म अवस्था और प्रकृति से अध्यात्म ने, तन्त्र ने, अन्तश्चेतना को जगाकर, साधनाएँ करके अनेकों उपलब्धियाँ पाईं। हमारे प्राचीन ग्रन्थों में लुप्त हो चुकी कुछ ऐसी ही शीघ्र सिद्धि प्रदान करने वाली साधनाएँ खोज कर लाये हैं जाने-माने 'तांत्रिक बहल'।

आप इस पुस्तक में एकत्रित सामग्री को और लेखक के अनुभव को पढ़कर समझ सकेंगे कि उन्होंने इस विषय में कितने गहरे पैठ कर यह सब कुछ पाया और कितनी लगन से संजोकर आपके लिए प्रस्तुत किया है।

पृथ्वी से गढ़ा धन कैसे पायें?

तन्त्र-मन्त्र-यन्त्र विज्ञान अलौकिक शक्तियों का स्वामी है। तन्त्र विज्ञान में वह शक्तियाँ छिपी हैं, जिनसे आप हजारों मील दूर की घटनाओं को स्पष्ट देख सकते हैं, किसी को भी अपने वश में कर सकते हैं, धरती के भीतर दबे हुए धन का पता लगा सकते हैं, उसे साधना द्वारा प्राप्त कर सकते हैं, आत्माओं को बुलाकर उनसे बातचीत कर सकते हैं? तन्त्र द्वारा आप अपने परिजन की आत्मा को बुलाकर उनसे दबाए हुए धन के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं? उपरोक्त सभी बातों का वैज्ञानिक विवेचन इस पुस्तक में किया गया है और यह भी बतलाया गया है कि थोड़ी सी साधना से आप किस प्रकार इच्छित वस्तु प्राप्त कर सकते हैं? इसके अतिरिक्त इस पुस्तक में ऐसी अलौकिक, गोपनीय और अद्‌भुत साधनाओं का वर्णन है, जिन्हें पढ़कर आप चकित रह जायेंगे।

रणधीर बुक सेल्स (प्रकाशन) हरिद्वार

तन्त्र द्वारा मनोकामना सिद्धि

जिस प्रकार राडार द्वारा एक स्थान पर बैठे-बैठे ही निर्धारित दूरस्थ स्थान पर अस्त्र चलाया जाता है और वह वहाँ जाकर लक्ष्य वस्तु को क्षति पहुंचाता है, उसी प्रकार कृत्या, घात, मारण आदि के तांत्रिक प्रयोग द्वारा मनुष्य को प्रभावित किया जाता है। तन्त्र द्वारा आगे से व पीछे से दोनों प्रकार का प्रयोग किया जा सकता है। जैसे गुड़ खाने में पौष्टिक है लेकिन शराब बनाने में भी प्रयोग किया जाता है। ऐसे ही तांत्रिक की सतोगुणी, धर्म पूर्ण एवं कल्याण का कार्य करते हैं तथा दुःसाहस पूर्ण अनैतिक और चमत्कारी काम भी करते हैं।

तन्त्र शास्त्र एक प्रकार से मन्त्रों की शल्य चिकित्सा पद्धति है जिसके माध्यम से मनोकामना सिद्धि करने में देर नहीं लगती। समाज की भलाई हेतु इसका प्रयोग करना सबको लाभ दे सकता है, लेकिन दुरुपयोग का परिणाम करने वाले को ही भोगना पड़ता है।

वनस्पति तन्त्र

वनस्पतियाँ जीवनदायिनी हैं, यदि वनस्पतियाँ न हों तो जीवन भी न होगा। अब यह प्रमाणित है कि वन, पहाड़, नदियाँ, जड़ी-बूटियाँ सब पर्यावरण में समानान्तर सन्तुलन बनाए रखती हैं। प्राणों को सतत सुख प्रदान करने वाली इन वनस्पतियों में कुछ चमत्कारी विचित्र शक्तियाँ भी हैं। वनस्पति तन्त्र में इनकी ऊर्जा, उपयोगिता और अद्‌भुत शक्तियों का प्रयोग करके लाभ उठाने के उपाय बतलाये गए हैं।

रणधीर प्रकाशन
हरिद्वार

विभिन्न विषयों की नवीन पुस्तकें
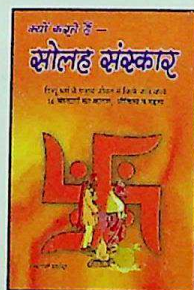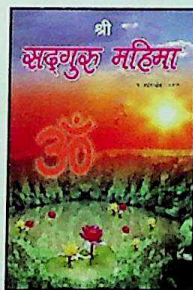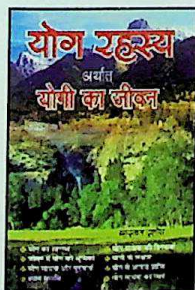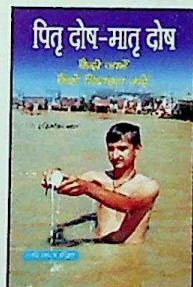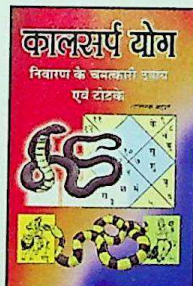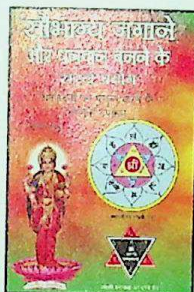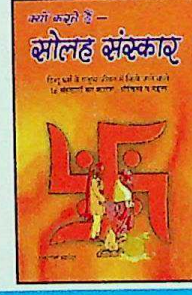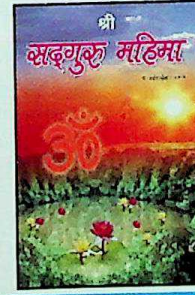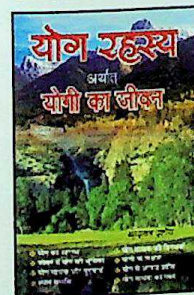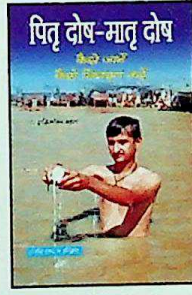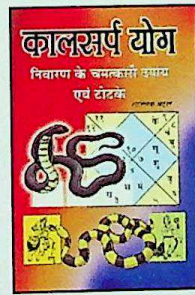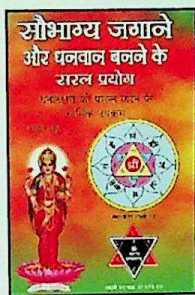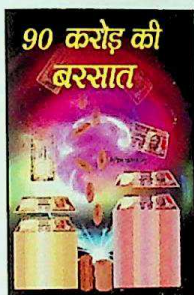
रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार : 249401

तन्त्र द्वारा मनोकामना सिद्धि

जिस प्रकार राडार द्वारा एक स्थान पर बैठे-बैठे ही निर्धारित दूरस्थ स्थान पर अस्त्र चलाया जाता है और वह वहाँ जाकर लक्ष्य वस्तु को क्षति पहुंचाता है, उसी प्रकार कृत्या, घात, मारण आदि के तांत्रिक प्रयोग द्वारा मनुष्य को प्रभावित किया जाता है। तन्त्र द्वारा आगे से व पीछे से दोनों प्रकार का प्रयोग किया जा सकता है। जैसे गुड़ खाने में पौष्टिक है लेकिन शराब बनाने में भी प्रयोग किया जाता है। ऐसे ही तांत्रिक की सतोगुणी, धर्म पूर्ण एवं कल्याण का कार्य करते हैं तथा दुःसाहस पूर्ण अनैतिक और चमत्कारी काम भी करते हैं।

तन्त्र शास्त्र एक प्रकार से मन्त्रों की शल्य चिकित्सा पद्धति है जिसके माध्यम से मनोकामना सिद्धि करने में देर नहीं लगती। समाज की भलाई हेतु इसका प्रयोग करना सबको लाभ दे सकता है, लेकिन दुरुपयोग का परिणाम करने वाले को ही भोगना पड़ता है।

वनस्पति तन्त्र

वनस्पतियाँ जीवनदायिनी हैं, यदि वनस्पतियाँ न हों तो जीवन भी न होगा। अब यह प्रमाणित है कि वन, पहाड़, नदियाँ, जड़ी-बूटियाँ सब पर्यावरण में समानान्तर सन्तुलन बनाए रखती हैं। प्राणों को सतत सुख प्रदान करने वाली इन वनस्पतियों में कुछ चमत्कारी विचित्र शक्तियाँ भी हैं। वनस्पति तन्त्र में इनकी ऊर्जा, उपयोगिता और अद्‌भुत शक्तियों का प्रयोग करके लाभ उठाने के उपाय बतलाये गए हैं।

धार्मिक ग्रन्थ और नयी पुस्तकें
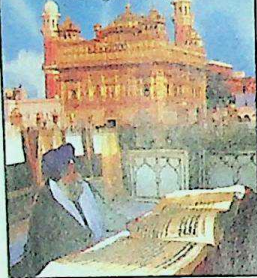
प्रत्येक परिवार के लिए संग्रहणीय ग्रन्थ

ज्ञान से परिपूर्ण पुस्तकों का अनूठा संग्रह
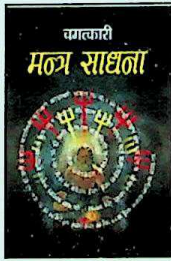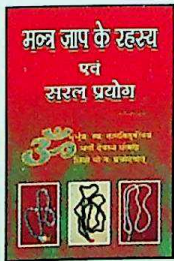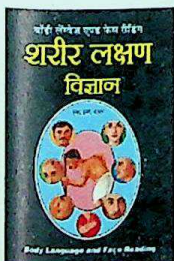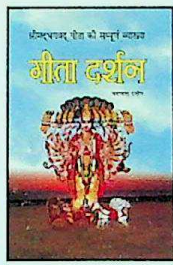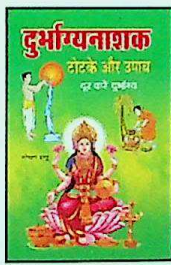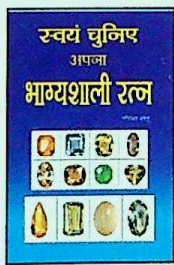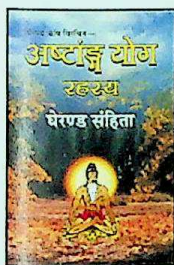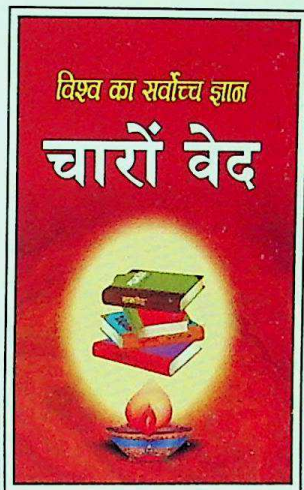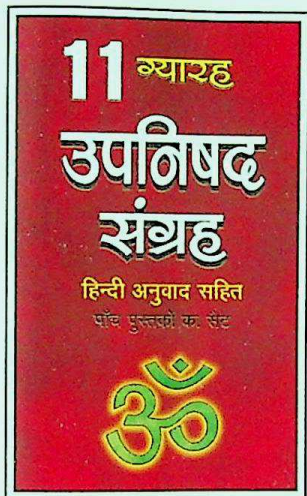
विभिन्न प्रकार के विषयों की श्रेष्ठ पुस्तकें
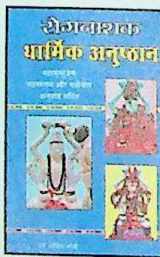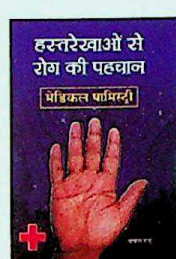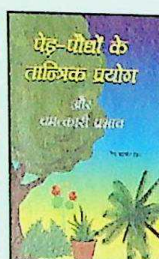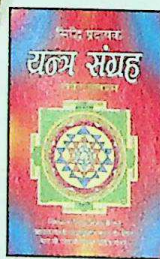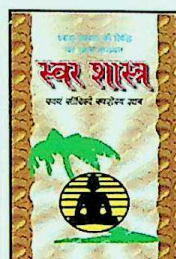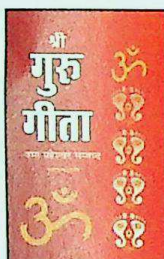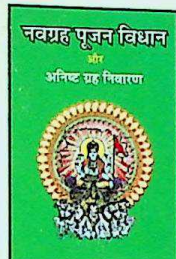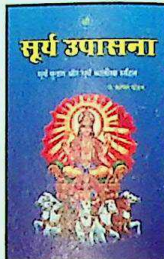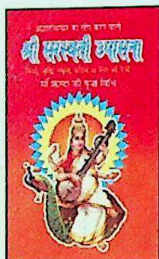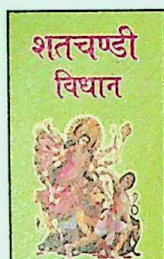
रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार

ज्ञान से परिपूर्ण पुस्तकों का अनूठा संग्रह
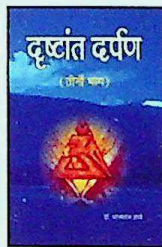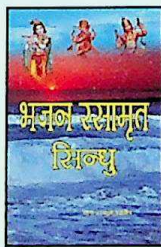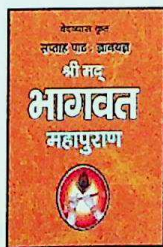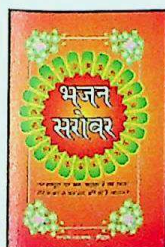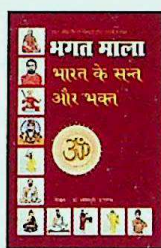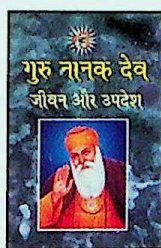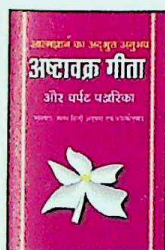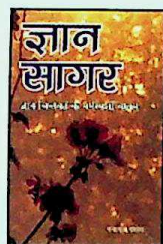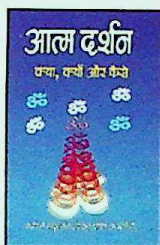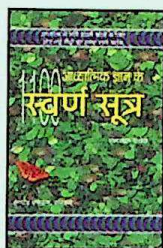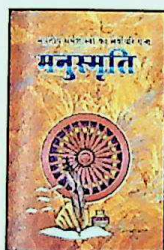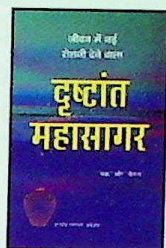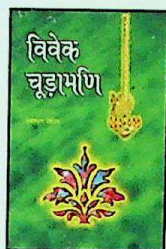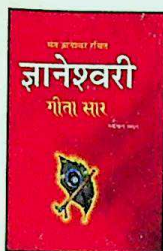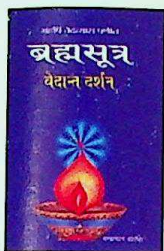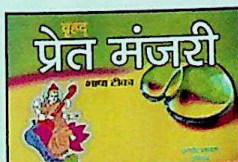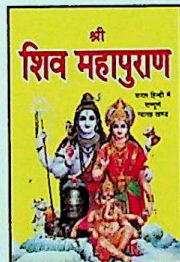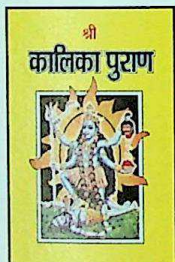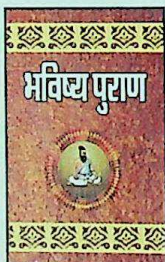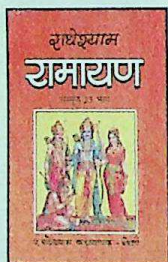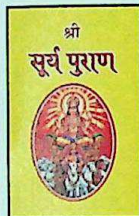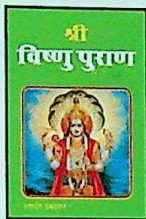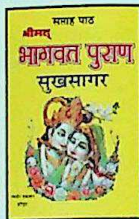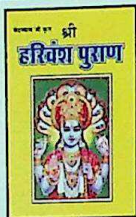
रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार

विचारों को उन्नत बनाने वाली पुस्तकें

- ★ कर्मफल और पुनर्जन्म
- ★ आत्मज्ञान की साधना
- ★ योग साधना और उसके लाभ
- ★ प्रार्थना और उसका प्रभाव
- ★ साधना, ध्यान और जप
- ★ मनन चिन्तन
- ★ भोग से योग की ओर
- ★ वेदों के उपदेश
- ★ उपनिषदों के उपदेश
- ★ रामायण, महाभारत के उपदेश
- ★ पुराणों के उपदेश
- ★ वेदाध्ययन कैसे करें
- ★ संचित धन
- ★ विचार शक्ति
- ★ राजा निर्मोह की कथा
- ★ नदी नाव संजोग (प्रवचन)
- ★ चढ़ती कला (प्रवचन)
- ★ ऋग्वेद सार
- ★ यजुर्वेद सार
- ★ सामवेद सार
- ★ अथर्ववेद सार
- ★ प्रेरक प्रसंग
- ★ दृष्टांत प्रकाश
- ★ दृष्टांत दीपक
- ★ बिखरे मोती
- ★ ११०० रस बिन्दु
- ★ ज्ञान गंगा (सूक्ति संग्रह)
- ★ मृत्यु और परलोक यात्रा
- ★ ज्ञान मार्ग के सोना चांदी
- ★ मन की अद्भुत शक्तियाँ
- ★ ध्यान साधना
- ★ सुख की ओर
- ★ कण कण में भगवान
- ★ अध्यात्म, विज्ञान और धर्म
- ★ धर्म का मर्म
- ★ सचित्र पंचतंत्र
- ★ सचित्र हितोपदेश
- ★ विवेकानन्द चरित्र और उपदेश
- ★ जीवन स्वामी रामतीर्थ
- ★ कुण्डलिनी सिद्धि
- ★ अनमोल भजन
- ★ भजन माधुरी

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार